वैश्विक संवाद

6.2

16 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

डब्ल्यू.ई.बी. ड्यू बाइस की पुन: वापसी

एल्डन मोरिस

सामाजिक आंदोलन अध्ययनों की बाहुल्यता

डोनेटैला डेला पोर्टा

अरब दुनिया में समाजशास्त्र

सारी हनाफी

मध्य पूर्व में समाजशास्त्र एवं राजनीति

> लेबनान के कचरा संकट की बायोपोलिटिक्स
> चरम हिंसा का सामान्यीकरण
> नागरिकों की रक्षा करना

साम्यवाद के तहत समाजशास्त्र

> एक अमानवीय विश्व में मानवीय व्यक्तित्व का होना
> चीन के एक जन समाजशास्त्री का उद्भव

आई.एस.ए. फोरम का आस्ट्रिया में आगमन

> स्थानीय हो जाना, वैश्विक हो जाना
> आस्ट्रिया में सामाजिक मुद्दे

विशिष्ट कॉलम

> समाजशास्त्र एवं जलवायु परिवर्तन
> भारत में आजादी और हिंसा
> अनुसंधान के लिये लेखन
> कजाख टीम का परिचय

पत्रिका

International Sociological Association

GD
अंक 6 / क्रमांक 2 / जून 2016
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

> सम्पादकीय

हाशिये से समाजशास्त्र

सबसे नवप्रवर्तनशील समाजशास्त्र अक्सर शैक्षणिक समुदाय के हाशिये से और कभी कभी पूर्ण रूप से शैक्षणिक समुदाय के बाहर से आता है। इस संदर्भ में, इस भूमण्डल पर चलने वाला संभवतः सबसे महत्व पूर्ण समाजशास्त्री W.E.B. Du Bois हैं। वे इस अंक में छपी एल्डन मोरिस की नई पुस्तक The Scholar Denied का विषय हैं। मोरिस दर्शातें हैं कि डु बोइस, जर्मनी और हार्वर्ड में प्रशिक्षित एक अफ्रीकी–अमरीकी समाजशास्त्री ने समाजशास्त्र के एकलाण्टा स्कूल को प्रतिष्ठित शिकागो स्कूल के बराबर ही वैज्ञानिक और परिशुद्ध बना नेतृत्व प्रदान एवं संगठित किया है। यदि जब विद्यमान शैक्षणिक समुदाय में नस्लवाद नहीं होता तो आज डू बोइस को यू. एस. समाजशास्त्र के सच्चे संस्थापक के रूप में मान्यता प्राप्त होती है। अगोचर और अपरिचित, उन्होंने शैक्षणिक जगत् को छोड़ दिया और वे सार्वजनिक मसलों के संपादक और टीकाकार बन गये, जहाँ से उन्होंने नस्ल और वर्ग, नस्लवाद का व्यक्तिपरक अनुभव, सर्व–अफ्रीकावाद और अमरीकी साम्राज्यवाद पर कुछ महत्व पूर्ण पुस्तकें लिखीं।

इस अंक में हमारे पास हाशिये के समाजशास्त्र के अन्य प्रतिनिधि हैं। दमित्रि शालिन व्लादिमिर यदोव के साहस और निष्ठा का वर्णन करते हैं जिससे उन्होंने सोवियत संघ की नौकरशाही संरचनाओं का सामना किया और जो दृष्टि उन्होंने सोवियत पश्चात के काल में आगे बढ़ाई। इसी तरह फ्रास्वाँ लचापेल वर्णन करते हैं कि शेन युआन का मार्क्सवादी–लेनिनवादी और रेड गार्ड का अनुभव उन्हें विवेचनात्मक समाजशास्त्र की तरफ ले गया जिससे वे अपने छात्रों की कल्पना को प्रेरित करने वाले करिश्माई व्यक्तित्व बन गये। यहाँ सारी हनाफी का साक्षात्कार मोहम्मद अल इदरिसी करते हैं। वे बताते हैं कि बेरूत, जहाँ उन्होंने अरब जर्नल ऑफ सोशियोलीजी इयाफत की स्थापना की और उसका संपादन किया, में बसने से पहले हनाफी ने सीरिया के फिलीस्तीनी शरणार्थी शिविर से फ्राँस में समाजशास्त्र में डाक्टरेट और काहिरा एवं रामल्ला में लंबे निवास के दौरान कठिन यात्रा की है। सत्ताधारियों की आलोचना में निडर, वे एक अनिश्चित अस्तित्व वाला जीवन जीते हैं और मध्य पूर्व के समाजशास्त्र को उर्जा प्रदान करते हैं।

मध्यपूर्व में रहते हुए, निसरिन चेर लेबनान के कचरा संकट और उसके द्वारा उत्पन्न सामाजिक आंदोलनों का एक आकर्षक विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं, जबकि लिजा हज्जर और अमिताई एत्जियोनी एक दूसरे के साथ लेबनान के नागरिकों के खिलाफ इजराइली हिंसा के वास्तविक और संभावित विस्तार की वैधता के बारे में बहस करते हैं।

अंत में, हम राष्ट्रीय संघों की तरफ बढ़ते हैं। हमारे पास आस्ट्रिया से लेखों की एक श्रृंखला है–वियना में 10–14 जुलाई 2016 को आयोजित होने वाला तृतीय आई एस ए फोरम का परिचय, उसके बाद युवा आस्ट्रियाई समाजशास्त्रियों के रोमांचक शोध को दर्शाते चार लेख। अमरीका से, रिले डनलेप और राबर्ट ब्रुले जलवायु परिवर्तन पर उनके शानदार संकलन जो अमेरीकी समाजशास्त्रीय संघ की टास्क फोर्स से उभरे हैं, का सारांश प्रस्तुत करते हैं। हम आई एस ए कार्यकारिणी और भारतीय समाजशास्त्रियों के भारतीय परिसरों में हिंसा और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर धमकी की निंदा करते हुए कथनों का पुनरूत्पादन करते हैं। आस्ट्रेलिया से, Raewyn Connell रावेन कॉनेल युवा समाजशास्त्रियों को उनके शोध को लिखने का शिक्षण प्रदान करने के अपने लंबे अनुभव को साझा करती हैं। अंत में हम वैश्विक संवाद की अग्रणी वजाख दीम, जिसने समाजशास्त्र को उनकी राष्ट्रीय भाषा में अनुवाद करने की कठिन चुनौती स्वीकार की है, का परिचय देते हैं।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 16 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

एल्डन मोरिस, *अग्रणी अमरीकी समाजशास्त्री अफ्रीकी–अमरीकी बुद्धिजीवी एवं राजनेता W.E.B. Du Bois को अमरीकी समाजशास्त्र के संस्थापक सदस्य के रूप में*

*इतालवी समाजशास्त्री **डोनाटेला डेला पोर्टा** बताती हैं कि वे कैसे आज की दुनिया में सामाजिक आंदोलन की अग्रणी विद्वान बनी।*

*आई. एस. ए. के उपाध्यक्ष और अरब जर्नल ऑफ सोशियोलोजी के संपादक **सारी हनाफी** अरब समाज शास्त्र के समक्ष चुनौतियों के बारे में बात करते हैं।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankej Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Amane Hisada, Takashi Kitahara, Takehiro Kitagawa, Satoshi Manabe, Tomomi Ohashira, Yutaro Shimokawa, Masaki Yokota.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Almas Rakhimbayev, Amangeldi Kurmetuly.

Poland:
Jakub Barszczewski, Krzysztof Gubański, Justyna Kościńska, Kamil Lipiński, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Justyna Zielińska, Jacek Zych.

Romania:
Cosima Rughiniș, Corina Brăgaru, Adriana Bondor, Alexandra Ciocănel, Ana-Maria Ilieș, Ruxandra Iordache, Mihai-Bogdan Marian, Ramona Marinache, Anca Mihai, Oana-Elena Negrea, Ion Daniel Popa, Diana Tihan, Carmen Voinea.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova, Lyubov' Chernyshova, Anastasija Golovneva.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultants: Gustavo Taniguti.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : हाशिये से समाजशास्त्र **2**

> एक पेशे के रूप में समाजशास्त्र

डब्ल्यू.ई.बी. ड्यू बाइस की पुनः वापसी एवं उनके सराहनीय पक्ष
एल्डन मोरिस, यू एस ए **4**

सामाजिक आंदोलन अध्ययनों की बाहुल्यता
डोनेटैला डेला पोर्टा, इटली **7**

> मध्य–पूर्व में समाजशास्त्र एवं राजनीति

अरब दुनिया में समाजशास्त्र : सारी हनाफी के साथ साक्षात्कार
मोहम्मद अल इदरिसी, मोरेक्को **9**

लेबनान के कचरा संकट की बायोपोलिटिक्स
निसरीन चेद, नीदरलैंड **12**

चरम हिंसा का सामान्यीकरण : इजराइल का मामला
लिजा हज्जर, यू एस ए **14**

नागरिकों की रक्षा करना : हज्जर का प्रत्युत्तर
अमिताई एत्जियोनी, यू एस ए **18**

> साम्यवाद के तहत समाजशास्त्र

एक अमानवीय विश्व में मानवीय व्यक्तित्व का होना : व्लादिमीर यादोव की स्मृतियाँ
दमित्री एन शालिन, यू एस ए **20**

चीन के एक जन समाजशास्त्री का उद्भव
फ्रैंकोइस लेचापेल, कनाडा **23**

> आई.एस.ए. फोरम का आस्ट्रिया में आगमन

स्थानीय हो जाना, वैश्विक हो जाना
ब्रिजित आलनबाकर, रूडोल्फ रिचतर और इदा सेलजिस्कोग, आस्ट्रिया **25**

आस्ट्रिया में असमानता, निर्धनता और समृद्धि
कोरनेलिया दलाबजा, जूलिया हॉफमैन और अल्बन नेच्त, आस्ट्रिया **28**

सामाजिक असमानताएँ, शरणार्थी और ''यूरोपीय स्वप्न''
रूथ अबरामोस्की, बेंजामिन सोशल, एलन शिन्क और डिजारी विल्के, आस्ट्रिया **29**

लैंगिक समानता और आस्ट्रियाई विश्वविद्यालय
क्रिस्टीना बिनर और सुसान किंक, आस्ट्रिया **31**

कार्य का समय और बेहतर जीवन के लिए संघर्ष
केरीना अलट्राइटर, फ्रांज एस्टलेथनर और थेरेसा फिबिजच, आस्ट्रिया **32**

> विशिष्ट कॉलम

समाजशास्त्र एवं जलवायु परिवर्तन
रिले इ डनलेप और राबर्ट जे ब्रूले, यू एस ए **33**

भारत में आजादी और हिंसा
आई. एस. ए. कार्यकारिणी समिति **35**

अनुसंधान के लिये लेखन : तर्क एवं कार्यप्रणाली
रेइविन कोनेल, ऑस्ट्रेलिया **37**

कजाख टीम का परिचय
एगुल जबिरोवा, बयान स्मेगम्बेट, आदिल रोडियोनोव और मदयारबेकोव गानी, कजाखस्तान **39**

> डब्ल्यू.ई.बी. ड्यू बाइस की पुन: वापसी एवं उनके सराहनीय पक्ष

एल्डन मोरिस, नार्थ वैस्टर्न विश्वविद्यालय, इवान्सटन, अमेरिका

एल्डन मोरिस सामाजिक आन्दोलनों के शोध में पैराडिम रूपान्तरण हेतु तथा विशेषतः अपनी पुरस्कृत पुस्तक 'द आरिजिन्स ऑफ द सिविल राइट्स मूवमैण्ट' के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है एवं बहुचर्चित हैं। मारिस की यह पुस्तक सामाजिक विरोध के संगठनात्मक एवं सांस्कृतिक आधारों पर बल देती है। प्रस्तुत आलेख में वह अपनी नवीन एवं बहुप्रतिक्षित पुस्तक 'द स्कालर डिनाइड' (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रैस, 2015) के पक्षों को प्रस्तुत करते हैं। यह पुसतक अमेरिकन समाजशास्त्र के प्रारम्भिक इतिहास को प्रस्तुत करती है तथा शिकागो सम्प्रदाय के प्रभुत्व एव एटलान्टा सम्प्रदाय के हाशियाकरण की चर्चा करती है। इन सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले अग्रणी समाजशास्त्री क्रमशः राबर्ट पार्क एवं अफ्रीकन–अमेरिकन डब्ल्यू ई. बी. ड्यू बाइस है जिनके मध्य की वैचारिक भिन्नता इस पुस्तक की केन्द्रीय विषय वस्तु है। मॉरिस यह बताने का प्रयास करते हैं कि किस प्रकार ड्यू बाइस ने एटलान्टा सम्प्रदाय को एक शोध कार्यक्रम के रूप में हर स्तर पर उतना ही प्रभावी बनाया जितना कि शिकागो सम्प्रदाय था हालांकि यह सम्प्रदाय उतनी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सका। पेशेवर समाजशास्त्र के क्षेत्र में निहित प्रजातिवाद ने शिकागो समाजशास्त्र के विकास को आकार प्रदान किया। साथ ही सामान्य रूप से समाजशास्त्र के उद्विकास को गति दी। आज ड्यू बाइस समाजशास्त्र में तथा समाजशास्त्र के परे सामाजिक चिन्तन के क्षेत्र में एक प्रेरणामूलक व्यक्तित्व है जबकि राबर्ट पार्क की लोकप्रियता कम होती गयी है। प्रतिबद्धताओं एवं योगदान को यदि केन्द्र में रखा जाए तो डब्ल्यू ई बी ड्यूबाइस को अमेरिकन समाजशास्त्र के प्रवर्तक के रूप में स्वीकारना उपयुक्त होगा।

एल्डन मोरिस

डब्ल्यू ई बी ड्यूबाइस बीसवीं शताब्दी के एक अफ्रीकन–अमेरिकन इतिहासकार, उपन्यासकार, कवि, जन बुद्धिजीवी, पत्रकार, सक्रिय कार्यकर्ता/नेता एवं समाजशास्त्री थे। इन सब के बावजूद ड्यूबाइस एक महत्वपूर्ण वे नेतृत्वकारी समाजशास्त्री के रूप में और अपने योगदान के संदर्भ में कम जाने जाते हैं। उन्हें एक रेडीकल जन बुद्धिजीवी के रूप में जाना जाता है जो अश्वेत अमेरिकनों के नेता बने क्योंकि उन्होंने एक शक्तिशाली अनुदारवादी अश्वेत नेता बूकर टी, वाशिंगटन के विरूद्ध एतिहासिक विचारधारायी संघर्ष किया। इसके बावजूद मैंने अपनी नवीन पुस्तक 'द स्कॉलर डिनाइड : डब्ल्यू ई. बी. ड्यूबाइस एण्ड द बर्थ ऑफ मार्डन सोश्यालजी' में यह तर्क दिया है कि ड्यूबाइस ने अमेरिका में समाजशास्त्र के प्रथम वैज्ञानिक सम्प्रदाय को विकसित किया जिसे द ड्यूबाइस–एटलांटा सम्प्रदाय की संज्ञा दी जाती है यह सम्प्रदाय बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में उभरा इसका विकास एटलांटा विश्वविद्यालय (जो अब एटलांटा, जार्जिया में एक छोटा अश्वेत विश्वविद्यालय है, यह वित्तीय दृष्टि से निर्धन है और इसे क्लार्क एटलांटा कहा जाता है) में हुआ। इसके सदस्यों में अश्वेत अध्येता, अधिस्नातक एवं स्नातक विद्यार्थी तथा सामुदायिक नेता थे। अभिजन एकेडिमिक्स की परिधि पर जन्मा द ड्यूबाइस एटलांटा सम्प्रदाय में पेशेवर तथा शौकिया अनुसंधानकर्ता थे जिनके आनुभाविक अध्ययनों एवं सैद्धान्तिक विश्लेषणों ने एक दमनित समुदाय से जुड़े वैज्ञानिक उपागम को विकसित किया।

ड्यूबाइस की बौद्धिकता विप्लवी थी उन्होंने प्रजातीय एवं सामाजिक असमानताओं का प्रभुत्व विरोधी विश्लेषण किया। इस दौर में सामाजिक डार्विनवाद जो कि अमेरिका में प्रजातीय रंगभेद एवं विश्वभर में श्वेत लोगों की यूरोपियन सभ्यता को उपयुक्त बताता था, एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के रूप में उभर गयाथा यह परिप्रेक्ष्य यूरोप एवं अमेरिका में श्वेत शासन का समर्थक बन

> >

गया था। गहन प्रकृति का प्रजातिवाद तीव्रता से फैल गया था तथा अमेरिका के सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों में यह एक मत्यता स्थापित हो चुकी थी कि अश्वेत लोग जैवकीय दृष्टि से निम्न है। ड्यूबाइस ने समाजशास्त्र के एक अध्येता के रूप में इस दावे का खण्डन किया कि प्रजातीय असमानता जैवकीय तत्वों से निर्धारित प्रजातीय विशेषताओं का परिणाम है। इससे भिन्न ड्यूबाइस ने यह सैद्धान्तिकी प्रस्तुत की कि प्रजातीय असमानता तो भेदभाव एवं दमन से संचालित होती है। उन्होंने सन् 1899 में अपनी पुस्तक 'फिलेडिफिया नीग्रो' के प्रकाशन एवं तत्पश्चात् अनेक अध्ययनों द्व ारा ड्यूबाइस सम्प्रदाय ने ऐसे अनेक आनुभाविक साक्ष्य प्रस्तुत किये जो ''वैज्ञानिक'' प्रजातिवाद का व्यवस्थित रूप से खण्डन करते हैं।

पुस्तक 'द स्कालर डिनाइड' उन दस्तावेजों को प्रस्तुत करती है जिनसे ज्ञात होता है कि ड्यूबाइस ने गहन प्रयासों से एक शोध टीम का गठन किया जिसने एटलान्टा समाजशास्त्रीय प्रयोगशाला के तत्वावधान में ''विप्लव समाजशास्त्र'' को प्रस्तुत किया। तत्कालीन दौर में प्रभावी 'आर्म चेयर' समाजशास्त्र के विपरीत ड्यूबाइस इस सम्प्रदाय ने बहु–पद्धति उपागमों को प्रयुक्त कर तथा गुणात्मक एवं परिमाणात्मक अनुसंधान द्वारा इस दावे को उखाड़ फैंका जो जैवकीय निम्नता को स्थापित करता था एवं इसे वंशानुगत बताता था। इस सम्प्रदाय के नवाचारी प्रयास एवं प्रदत्त संकलन को तत्काल एक सैद्धान्तिक (एव प्रयोगशाला) परियोजना का साथ मिला जो प्रजातीय असमानता के वैज्ञानिक कारणों को निर्धारित करने से सम्बद्ध था इस सिद्धान्त ने उस प्रभावी समाजशास्त्रीय एवं लोकप्रिय विचारधारा का खण्डन किया जिसके अनुसार अश्वेत प्राकृतिक रूप से निम्न है और सदैव मानव सभ्यता के निम्नतम स्थान पर हैं।

इन वैज्ञानिक प्रयासों द्वारा ड्यूबाइस एवं उनके सहयोगियों ने एक व्यापक सैद्धान्तिक योगदान की शुरूआत की जिसके अनुसार त्वचा के रंगों के आधार पर प्रजातीय स्तरीकरण को स्थापित किया गया है जो सामाजिक विश्व को बीसवीं शताब्दी में आकार देता है। इस स्तरीकरण में श्वेतों की श्रेष्ठता एक दीर्घकालिक या स्थायी वैश्विक संरचना में स्थापित होती है परन्तु यह श्रेष्ठता आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारधारायी शक्तियों द्वारा सुनिश्चित की गयी है जो समान रूप से अनवरत एवं सब जगह सक्रिय हैं। इस दृष्टि से प्रजाति एक समाजशास्त्रीय यथार्थ है, यह जैवकीय यथार्थ नहीं है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अमेरिकन समाजशास्त्रियों ने जीव विज्ञान से निर्देशित तर्कों को समाजशास्त्रीय वास्तविकताओं की व्याख्या हेतु अनवरत प्रयुक्त किया। इसके विपरीत ड्यूबाइस ने विशेष रूप से संरचनात्मक विश्लेषण किये उन्होंने यह स्वीकारा कि मानव सम्बन्धी अभिकरण सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करते हैं तथा कभी कभी इन संरचनाओं को रूपान्तरित भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ड्यूबाइस ने इस तर्क पर भी बल दिया कि सामाजिक असमानता का अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्रियों को वर्ग, प्रजाति एवं लिंग के मध्य की अन्तः क्रियाओं का परीक्षण करना चाहिए, अतः मानव मुक्ति के यदि प्रयास करने हैं तो वर्ग एवं प्रजातीय दमन के पक्षों को उखाड़ फैंकना चाहिए।

अपने प्रारम्भिक योगदान में ड्यूबाइस ने ''दोहरी चेतना'' की अवधारणा को विकसित किया और यह सैद्धान्तिकी प्रस्तुत की कि एक सामाजिक उत्पाद के रूप में स्व का विकास सामाजिक अन्तःक्रियाओं एवं संचार से होता है परन्तु महत्वपूर्ण रूप से प्रजाति एवं शक्ति से इन्हें आकार मिलता है। बाद में उन्होंने तर्क दिया कि अफ्रीकन दासों के व्यापार एवं दासता से आधुनिकता की रचना हुई, इन अवयवों के कारण श्रम शक्ति एवं महत्वपूर्ण क्रय–विक्रय वस्तुओं की उपलब्धता हुई इन सबका पश्चिमी बुर्जुआ का शोषण किया जो आधुनिक पूंजीवाद को विकसित करता है।

एक लम्बे समय से अमेरिकन समाजशास्त्र में स्वीकृत बौद्धिकता ने वैज्ञानिक समाजशास्त्र को शिकागों विश्वविद्यालय से सम्बद्ध किया है। इस विश्वविद्यालय में श्वेत संकाय–सदस्यों, जो कि पुरूष थे, ने वैज्ञानिक समाजशास्त्र को विकसित किया और इस उपागम को अमेरिका के अन्य श्वेत विश्वविद्यालयों में फैलाया। परन्तु 'स्कालर डिनाइड' ने इस मिथकीय उत्पत्ति की विवेचना को झकझोर दिया और यह तर्क संगत विवेचन प्रस्तुत किया कि किस प्रकार ड्यूबाइस ने और सम्बद्ध एटलान्टा सम्प्रदाय ने दो दशक पूर्व ही वैज्ञानिक समाजशास्त्र को विकसित कर दिया था। ड्यूबाइस ने हालांकि अमेरिकन समाजशास्त्र के प्रथम वैज्ञानिक सम्प्रदाय को विकसित किया पर श्वेत समाजशास्त्री, जिन्हें इस सम्प्रदाय के रैडीकल विचारों से गहरा खतरा महसूस हो रहा था, के द्वारा उस आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारधारायी शक्ति को आगे बढ़ाया गया जिससे लगभग एक शताब्दी तक ड्यूबाइस की वैचारिकी दब गयी विशेषतः प्रजाति सम्बन्धी उनके विचारों को दबाया गया। 'द स्कालर डिनाइड' इस विचार को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती है कि शिकागों से सम्बद्ध समाजशास्त्रियों एवं अन्य श्वेत प्रवत्तकों की तुलना में ड्यूबाइस के सम्प्रदाय ने अधिक सक्षम एवं बौद्धिक श्रेष्ठता को उत्पन्न किया। फिर भी संस्थागत भेदभाव ने ड्यूबाइस के अनेक योगदानों को अमेरिकन समाजशास्त्र की मुख्य धारा में सम्मिलित होने में विलम्ब को उत्पन्न किया। बीसवीं शताब्दी में इस योगदान ने देरी से अपना स्थान बनाया। आज भी हालांकि ड्यूबाइस के अत्यन्त प्रभावशाली विचार समाजशास्त्रीय विश्व में समाहित हो गये हैं पर उनकी अन्तः दृष्टि श्वेत समाजशास्त्रियों को आज भी पसन्द नहीं आती वे उसे गलत प्रस्तुति देते हैं।

द ड्यूबाइस–एटलान्टा सम्प्रदाय को अनेक विषम स्थितियों से गुजरना पड़ा। श्वेत समाजशास्त्रियों के यथा स्थितिवादी एजेण्डा को उद्योगपतियों का व्यापक एवं आकर्षक/समृद्धिमूलक समर्थन मिला इन उद्योगपतियों ने उस वैधता का स्वागत किया जिसे कथित ''वस्तुपरक विज्ञान'' ने प्रदान किया। वहीं इसके विपरीत ड्यूबाइस को अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर पद प्रदान नहीं किया गया। इन विश्वविद्यालयों ने संसाधनों की कमी की बात की जो कि ड्यूबाइस को प्रदान किये जा सकते थे। वहीं वित्तीय संकट से जूझ रही अश्वेत यूनिवर्सिटी (ब्लैक यूनिवर्सिटी) में ड्यूबाइस को बहुत कम वेतन मिलता था, उन्हें अनुसंधान हेतु उपयुक्त फण्ड नहीं दिया जाता था उनके रैडीकल विचारों की निगरानी की जाती थी तथा प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान उन्हें अपमानित कर देते थे।

'द स्कालर डिनाइड' में मैंने वे डाक्यूमैण्ट (प्रलेख) प्रस्तुत किये हैं जो बताते हैं कि कैसे ड्यूबाइस के सम्प्रदाय ने देशज समाजशास्त्रीय कार्यक्रम को विकसित किया जिसने सभी अमेरिकन विश्वविद्यालयों में बड़े पैमाने पर स्वीकारी जाने वाले वैज्ञानिक प्रजातिवाद को चुनौती दी। ड्यूबाइस ने अपने सम्प्रदाय को अधीनस्थ अश्वेत समुदाय में स्थापित किया जहाँ अश्वेत समुदाय के सापेक्षिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त/समृद्ध सदस्यों से उन्होंने संसाधन जो कि सीमित मात्रा में थे प्राप्त किये। इन अध्येताओं, विद्यार्थियों एवं समुदाय के नेताओं ने अपने बौद्धिक कार्यों के लिए बहुत कम पारिश्रमिक प्राप्त किया। कुछ लोगों ने अपने श्रम को समर्पित किया ताकि एक विप्लवी समाजशास्त्र की रचना हो सके। ड्यूबाइस के साथ उनका मानना था कि गुणवत्तामूलक बौद्धिक अनुसंधान उनके लिए वे हथियार हैं जिनसे श्वेत की सर्वश्रेष्ठता को बिखेरा जा सकता

>>

हैं। उन्होंने स्वैच्छिक रूप से योगदान इस आशा के साथ किया कि उनके कार्य भविष्य में स्वतन्त्रता का समर्थन करेंगे।

ड्यूबाइस के सम्प्रदाय ने मुक्ति को पूंजी के रूप में प्रयुक्त किया ताकि देशज समाजशास्त्र को स्थापित किया जा सके। अपने समुदाय के समर्थन के साथ एटलाण्टा सम्प्रदाय ने एक ऐसा शोध कार्यक्रम संचालित किया जिसे बुरावे, ''जन समाजशास्त्र की समाहित स्वायत्तता जो ड्यूबाइस को अवसर देती हैं और साथ ही उनके अफ्रीकन–अमेरिकन सहयोगियों को अवसर देती है कि वे एक ऐसे विशिष्ट समाजशास्त्र को उत्पन्न व सम्पुष्ट करें जो शिकागो समाजशास्त्र से ज्यादा वैज्ञानिक हो जो इतिहास के काल्पनिक दर्शन से अत्यन्त प्रभावित हो और यथास्थितिवाद की तीव्र आलोचना से जुड़ा हो'', की विशेषता से जोड़ते हैं।''

एटलाण्टा सम्प्रदाय ने एक अलग–अलग, असम्बद्ध समाजशास्त्र को उत्पन्न नहीं किया बल्कि वह जनसमाजशास्त्र से जुड़ गया जिसका ध्येय राष्ट्रीय एवं वैश्विक असमानता को समाप्त करना था। सन् 1900 के आस पास ड्यूबाइस ने पान–अफ्रीकन कांग्रेस के आयोजन किये, विश्वभर से अफ्रीकन समुदायों से जुड़े अध्येताओं एवं नेताओं को एकत्रित किया ताकि उन विचारों का परीक्षण हो सके जो जिम क्रो के रंगभेदमूलक प्रजातीय/नस्लवादी शासन (दक्षिण अमेरिका में कानून को लागू करने वाला प्रजातीय खण्ड) एवं औपनिवेशीकरण को उखाड़ फैंके। अपने गृह प्रदेश में ड्यूबाइस ने नियागारा आन्दोलन एवं रंगभेद के शिकार लोगों के उत्थान हेतु राष्ट्रीय समीतियों को संचालित व संगठित किया ताकि दोनों के द्वारा श्वेत की सर्वश्रेष्ठता पर सीधा प्रहार किया जा सके। ड्यूबाइस ने 'द क्राइसेज' पत्रिका का प्रकाशन किया। यह पत्रिका लैंगिक एवं वर्गीय दमन का तथा युद्ध का विश्लेषण करती थी एवं उनके विरूद्ध अभियान चलाती थी। अपने समूचे लम्बे जीवन में ड्यूबाइस यथास्थितिवाद के कटु आलोचक रहे उन्होंने उन सामाजिक संरचनाओं एवं संस्कृति रचनाओं को उजागर किया जो मानव स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित करते हैं।

माइकल बुरावे का मत है कि समाजशास्त्र को यदि समीचीन बने रहना है तो उसे अपनी रैडीकल जड़ों की तरफ वापस लौटना होगा। देशज समाजशास्त्र में शक्ति एवं मानव प्रभुत्व का आलोचनात्मक विश्लेषण देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त उत्तर उपनिवेशवादी समाजशास्त्र, दक्षिणी सिद्धान्त यहाँ तक की पश्चिमी बुर्जुआ समाजशास्त्र में भी ऐसे आलोचनात्मक विश्लेषण हैं जिनका रैडीकल झुकाव है और जो साहस के साथ शक्ति की सत्यता को प्रदर्शित करते हैं। बुरावे के विचार में ड्यूबाइस का सम्प्रदाय ''प्रभुत्वशाली परिप्रेक्ष्यों को चुनौती देने वाला अग्रणी पैराडिम'' है। यह योगदान इस सम्प्रदाय के हाशिया करण के कारण लम्बी अवधि तक अदृश्य प्रकृति का बना रहा। ड्यूबाइस द्वारा प्रस्तुत उदाहरण के आधार पर 'द स्कालर डिनाइड' यह स्थापित करती है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन व बौद्धिकता का राजनीति से जुड़ाव आवश्यक है। इसे सहभागिता मूलक एवं सुव्यवस्थित होना चाहिए विशेषतः उन स्थितियों में जब इसे सार्वजनिक बहस का भाग बनना है। वास्तव में अधीनता मूलक/निम्न वर्गीय समाजशास्त्र को यथास्थिति वादी समाजशास्त्र की तुलना में अधिक व्यवस्थित व गहन होना चाहिए क्योंकि इनकी प्रतिष्ठा एवं इनका अस्तित्व दाव पर लगा होता है। समाजशास्त्री अनवरत रूप से ड्यूबाइस के समाजशास्त्र के महत्व की उपेक्षा कर रहे हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि ड्यूबाइस ने केवल ''अश्वेत आनुभविक समाजशास्त्र'' को उत्पन्न किया या उन्होंने एक प्रसिद्ध जन बुद्धिजीवी के रूप में भूमिका निभाते हुए ''अश्वेत मुद्दों'' को उठाया। लेकिन यह विचार ड्यूबाइस की अन्तः दृष्टि को संकुचित बना देता है और उसे केवल अश्वेत लोगों के समूह व उनके समाजशास्त्र से जोड़ देता है परिणामस्वरूप उनके द्वारा प्रस्तुत वृहद सिद्धान्त व पद्धतिशास्त्र की उपेक्षा हो जाती है। 'द स्कालर डिनाइड' ऐसे अनेक असत्य व भ्रामक दावों का खण्डन करने हुए ड्यूबाइस एवं उनके सम्प्रदाय को समाजशास्त्र के केन्द्र में में मार्क्स, वेबर एवं दुरखाइम के साथ स्थापित करती हैं। यदि ड्यूबाइस का स्थान भी है। यह समाजशास्त्रियों को अवसर देती है कि वे ड्यूबाइस–एटलाण्टा सम्प्रदाय के बौद्धिक परिदृश्य को आन्तरीकृत करें और अपनी समाजशास्त्रीय कल्पना के क्षेत्र का विस्तार करें।

'द स्कालर डिनाइड' के अन्त में मैंने निष्कर्ष रूप में ड्यूबाइस व उनके सम्प्रदाय के योगदान को समाजशास्त्र में महत्व प्रदान किया है। विषम एवं विपरीत समय में एक नवाचारी वैज्ञानिक सम्प्रदाय का उभार, जबकि आतंक फैला हो, भीड़ आक्रामक हो, समुदाय के अभिजनों पर आक्रमण हों, हमें बताता है कि कैसे संवेदनशील महत्वपूर्ण संसाधनों द्वारा प्रजातीय समाज के भेदभाव से मुक्ति पायी जा सकती है। प्रजातीय समाज ने तो संसाधनों पर अपना आधिपत्य कर रखा था। यह स्थिति हमें आशा दिलाती है कि जो अध्येता ज्ञान का सृजन कर रहें हैं उनका लक्ष्य एवं उनकी समझ मानवता के रूपान्तरण हेतु होनी चाहिए। ■

एल्डन मोरिस से पत्र व्यवहार हेतु पता <amorris@northwestern.edu>

> सामाजिक आन्दोलन अध्ययनों की बाहुल्यता

डोनेटैला डेला पोर्टा, स्क्यूओला नार्मेल सुपरियॉर, फ्लोरेंस, इटली

डोनेटैला डेला पोर्टा

डोनेटैला डेला पोर्टा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है तथा सामाजिक आन्दोलनों के क्षेत्र में अनवरत लेखन कार्य करती है। उन्होंने अनेक देशों के विषय में लेखन कार्य किया है पर विशेषतः वह समाजशास्त्र व राजनीति शास्त्र विषयों को परस्पर सम्बद्ध करता है। बहु–अध्ययन उपागम में उनकी दक्षता है। उन्होंने 38 पुस्तकों का लेखन या सह लेखन किया है। उनका हाल का शोध कार्य राजनीतिक समाज शास्त्र के क्षेत्र से जुड़ा है। राजनीतिक हिंसा (क्लैण्डस्टाइन पालिटिकल वायलैन्स : 2013), विरोध प्रदर्शनों की निगरानी (कैन डेमोक्रेसी बी सेण्डर 2013) सामाजिक आन्दोलनों के लोकतन्त्र से सम्बन्ध (मोबिलाइजिंग फार डेमोक्रेसी, 2014), नव्य उदारवाद पर प्रतिक्रिया (सोश्यल मूवमैण्ट इन टाइम्स ऑफ आस्टेरिटी, 2015) उनके अध्ययन व लेखन के मुख्य क्षेत्र है। डोनेटैला बहुत लम्बे समय से विभिन्न देशों के युवा शोधार्थियों से गहरे रूप में जुड़ी रही हैं। फ्लोरेन्स में स्थित एक्यूओला नार्मेल सुपरियॉर के इन्स्टीट्यूट ऑफ हयूमेनिटीज एण्ड सोश्यल साइंसेज के डीन के नये पद के साथ डोनेटेला इस लगाव को निरन्तर बनाये हुए हैं और साथ ही वे सेन्टर ऑन सोश्यल मूवमैण्ट स्टडीज (का समोस) का संचालन भी करती है। नीचे दिये गये अपने लेख में डोनेटैला ने सामाजिक आन्दोलन अध्ययनों के प्रति अपनी दृष्टि तथा प्रतिबद्धता को व्यक्त किया है।

सामाजिक आन्दोलनों में मेरी रूचि विभिन्न स्थितियों के कारण उत्पन्न हुई। मुख्य रूप से विरोध में मेरी अत्यधिक रूचि निश्चय ही विद्यार्थी जीवन की सक्रियता के अनुभवों का परिणाम रही है साथ ही इन अनुभवों से कुण्ठाएं भी पनपीं क्योंकि संसाधनों के निवेश एवं बड़ी आशाओं के बावजूद परिणाम आंशिक रूप से ही सफल रहे। हालांकि वहां पर आकस्मिकता भी थी जो मेरे मतानुसार विचारकों के जीवन की सदैव कार्यकरणता मूलक विशेषता रही है। मेरे विषय में अनुसंधान के इस क्षेत्र में मेरी सम्बद्धता आकस्मिक ही हुई। मैंने एलेन ट्यूरेन से, जिन्होंने आश्रित समाजों पर अपने अध्ययनों का प्रकाशन किया है, (यह विषय मेरे जैसे दक्षिणवासियों के लिए विशेषतः अनुकूल प्रकृति का है), जब इकाल, डेस, हायूट्स इट्यूड्स इन साइंसेज, सोशेल्स जो पेरिस में है अपनी स्नातकोत्तर कक्षा के शोध कार्य के निर्देशन का अनुरोध किया। उन्होंने शोध निर्देशन की इच्छा तो व्यक्त की पर कहा कि उन्होंने अपने अध्ययन का केन्द्र अब सामाजिक आन्दोलन कर लिया है और मैंने सोचा कि क्यों न इस विषय पर ही शोध कार्य किया जाए।

अन्य अनेक सहयोगी भाग्यशाली आकस्मिक स्थितियों में, मुझे उन उभर रहे, उत्साही विचारक समूह के सम्पर्क में ला दिया जो सामाजिक आन्दोलन के विश्लेषण हेतु नवीन पैराडिम की तलाश कर रहे थे इनमें सिडनी टैरो भी शामिल थे, जिन्होंने सामाजिक आन्दोलन से सम्बन्धित मेरे पहले आलेख पर प्रतिक्रिया की और वे मेरे जीवन पर्यन्त पथ प्रदर्शक तथा मित्र बने रहे। यूरोपियन यूनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट के अन्तर्राष्ट्रीय प्रोग्राम में पी एच डी के लेखन के दौरान न केवल मेरे भाषा कौशल्य में सुधार हुआ अपितु विशेषतः अन्य संस्कृतियों को समझने का अवसर मिला। वहाँ फिलिप श्मिटर से लेकर अल्सेन्ड्रो पिजारनो जैसे पथ प्रदर्शकों ने मेरी जिज्ञासाओं को शानत किया और उन जिज्ञासाओं को जाग्रत किया जो मुझे विषय की सीमाओं के परे ले गये। पी एच डी के उपरान्त इटली के बुद्धिजीवियों/विचारकों में व्याप्त भाई भतीजावाद ने मुझे विदेश में अनेक आश्चर्यजनक अनुभवों की तरफ धकेला। नकारात्मक अनुभवों, जिनका सम्बन्ध प्रवसन से था, ने मुझे एक सकारात्मक स्थिति से भी परिचित कराया जिसे मैंने ''गहराते महानगरवाद'' (डीप रूटेड कास्मोपालिटनिजम) की संज्ञा दी। अनेक भाग्यशाली पर आकस्मिक स्थितियों ने मुझे कनिष्ठ शोधकर्ता/विचारकों के साथ सहयोगमूलक कार्य करने के अवसर प्रदान किये साथ ही शोध केन्द्र एवं विचारकों के साथ वैचारिक जाल बनाने का अवसर दिया जिसमें सामाजिक आन्दोलन अध्ययन केन्द्र (कासमोस) की स्थापना सम्मिलित है। यह केन्द्र एक्यूओला नार्मेल सुपरियॉर फ्लोरेन्स इटली में स्थित है।

मेरी शैक्षणिक गतिविधियों एवं शोध कृत्यों में अनेक विषयों पर मैंने कार्य किया पर अनेक कारणों, जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं सम्बन्ध मूलक कारक सम्मिलित हैं, से मेरा सर्वाधिक लगाव सामाजिक

> >

आन्दोलन अध्ययनों पर रहा। मैंने पाया कि अधिकांश शोधकर्ता जो इस विषय से सम्बन्धित है, इस विषय को मानवीय स्थितियों के निकट पाते हैं और विश्व स्थितियों के उन्नयन की गम्भीर रूचि में संलग्न हो जाते हैं। मुख्य धारा के विषयों से जुड़े शोधकर्ता इन शोधार्थियों की सामाजिक व राजनीतिक प्रतिबद्धता एवं उससे जुड़े अनुभवों की आलोचना करते है। लेकिन मैंने पाया कि अध्ययन के उपक्षेत्रों को विकसित करने में इन शोधार्थियों का योगदान सर्वाधिक उत्साहवर्धक है साथ ही विषय क्षेत्र में सक्रिय शोधार्थियों तथा विचारकों के मध्य इन्होंने भावनात्मक परिवेश को विकसित किया है। साथ ही राजनीतिक स्थितियों ने अनवरत सैद्धान्तिक नवाचारों को निर्देशित किया। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें गैर–परिपाटीय राजनीति को या तो हाशिये पर ला दिया गया या उसे व्याधिकीय बना दिया गया। इन पक्षों को विरोध की नवीन लहर ने गहरी चुनौती दी इन विरोधों ने धीरे धीरे एक 'अन्य राजनीति' को सामाजिक एवं बौद्धिक स्वीकृति प्रदान की यह 'अन्य राजनीति' सामान्य लोकतान्त्रिक क्षेत्र के बाहर है।

राजनीति की यह व्यापक परिभाषा इस पक्ष की भी विवेचना करती है कि क्यों सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी अध्ययन का झुकाव सैद्धान्तिक अन्तः सम्बद्धता की तरफ है जो अनेक सैद्धान्तिक स्थापनाओं के पारस्परिक मिश्रण की परिचायक है। यह स्थिति विभिन्न विषयों के उपागमों के सम्बन्धों का परिणाम है जिसमें प्रतीकात्मक अन्तः क्रियावाद से लेकर संगठनात्मक समाजशास्त्र, समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों से लेकर राजनीति शास्त्र, सभी के समावेश से सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी विचारकों ने अवधारणाओं एवं परिकल्पनों को मिला कर एक ऐसी अध्ययन विधा निर्मित की है जिसमें ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की वैचारिकी के 'इनपुट्स' का समावेश है। समय के साथ साथ यह प्रवृत्ति व्यापक होती गयी। समाजशास्त्र से राजनीतिशास्त्र की प्रारम्भिक सम्बद्धता के उपरान्त भूगोल इतिहास, मानवशास्त्र, आदर्शात्मक सिद्धान्त, कानून (यहाँ तक कि) अर्थशास्त्र के क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित होते गये। जैसे जैसे विवादमूलक राजनीतिक का उभार हुआ सामाजिक आन्दोलन की बौद्धिकी में नवीन पीढ़ियाँ सम्मिलित होती गयीं।

मैंने जिस पक्ष की प्रशंसा की (और मुझे आशा है कि इसमें मेरा भी योगदान है) वह आनुभविक अनुसंधानों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से है। सैद्धान्तिक दृष्टि से सारग्रही, सामाजिक आन्दोलन अध्ययन पद्धति शास्त्रीय दृष्टिकोण से बाहुल्यतावादी भी है। सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी अनुसंधानों में विभिन्न पद्धतियाँ प्रयुक्त हुई हैं साथ ही परिमाणात्मक एवं गुणात्मक पद्धतियों के मध्य सेतु भी बने हैं। हालांकि विशिष्ट पद्धतियों की आयोजना एवं उनके क्रियान्वयन के पक्ष आलोचना एवं स्व आलोचना से जुड़े हैं (एकल अध्ययन पद्धति से परिमाणात्मक ''घटना विश्लेषण'' तक) पर किसी भी पद्धतिशास्त्रीय संघर्ष ने पद्धतिशास्त्रीय बाहुल्यता के इस क्षेत्र में प्रभाव को कमजोर नहीं किया हालांकि समाज विज्ञानों के अनेक उपक्षेत्रों में प्रत्यक्षवादी बनाम् निर्वचनात्मक परिप्रेक्ष्य के सामान्य विमर्श को ज्ञान मीमांसा के स्तर पर एवं वास्तविक विश्व के अस्तित्व की बहस को तत्व ज्ञान के स्तर पर विवाद से जुड़े पक्षों के रूप में देखा जा सकता है। पर इन सब के बावजूद सामाजिक आन्दोलन के अध्ययनकर्ताओं ने अधिक विभेदीकृत व रंगतपूर्ण दृष्टिकोणों के साथ स्वयं को जोड़ा। यहाँ तक कि वे अनुसंधानकर्ता जो नव्य प्रत्यक्षवादी अनुमानों की तरफ ज्यादा झुके रहे, ने भी अवधारणाओं की रचना के महत्व को स्वीकारा जबकि रचनावादियों ने अन्तः वैषयिक ज्ञान की खोज को खारिज नहीं किया। अधिकांश सामाजिक आन्दोलन अध्ययन संरचनाओं एवं प्रत्यक्षीकरण (उदाहरण के लिए राजनीतिक अवसर एवं उनके आधार पर रचनाएं) के मिश्रण की ओर ध्यान देते हैं और इन्हें घनिष्ठ रूप से जुड़ा मानते हैं ठीक इसी तरह अधिकांश अनुसंधानकर्ता सामान्य नियमों के प्रति संदेहास्पदता को एक सैद्धान्तिक एकल अध्ययन के परे की इच्छा के साथ सम्बद्ध कर देते हैं।

इस समावेशी दृष्टिकोण ने अन्तःसम्बद्धता एवं सामान्य ज्ञान की रचना की निश्चित क्षमता के प्रति अनुसंधानकर्ता को उत्तेजित किया है। इस प्रक्रिया में आगमन एवं निगमन की पद्धतियों को जोड़ दिया गया है साथ ही गुणात्मक एवं परिमाणात्मक पद्धतिशास्त्रों को अन्तः सम्बन्धित कर दिया है। मिश्रित पद्धतियों की रणनीति तथा विभिन्न पद्धतियों के त्रिभुजन को जोड़ कर व्यापक रूप से अध्ययन हेतु प्रयुक्त किया जा रहा है। वास्तव में सामाजिक आन्दोलन अध्ययन तथ्य संकलन एवं तथ्य विश्लेषण के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रविधियों के प्रयोग के प्रति आशावान हैं। कुछ सामाजिक आन्दोलन के अध्ययन से जुड़े अध्येताओं का विश्वास है कि या तो समाज विज्ञान तटस्थ है या यह राजनीतिक उद्देश्यों के प्रति अधीनस्थ है। वैज्ञानिक अध्ययनों में पनप रही राजनीतिक प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में एक सातत्य का उभार आया है जो कि आदर्शात्मक एवं आचारशास्त्रीय बहस के लिए अध्येताओं को प्रोत्साहित करता है।

इस नवीन उत्साहवर्धक सैद्धान्तिक बाहुल्यतावाद के अनेक विवेचन हैं। हालांकि विश्वसनीय आंकड़ों एवं स्त्रोतों की कमी से इन्कार नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ चुनाव या सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययनों में सामाजिक आन्दोलन के अध्येता तथ्यों को एकत्रित करने हेतु अनेक प्रविधियों को प्रयुक्त करते हैं। समूची जनसंख्या का उपलब्ध सर्वेक्षण सक्रिय अल्पसंख्यकों के अध्ययन में आंशिक रूप से ही सहायक है। जबकि सामाजिक आन्दोलनों से जुड़े संगठनों के पास तथ्य से जुड़े संग्रहालय बहुत कम है यहाँ तक कि सहभागियों की सूची भी उपलब्ध नहीं होती। तथ्य एकत्रीकरण एवं तथ्य विश्लेषण की विभिन्न प्रविधियों को बाहर से लाकर प्रयुक्त करना एवं स्वीकारना (ये विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध है) साथ ही नवीन प्रविधियों की खोज ने आनुभविक विश्लेषणों को मजबूती प्रदान की है। ऐसे ज्ञान को सृजित करने का आदर्शात्मक दबाव भी रहता है जो वैज्ञानिक सैद्धान्तीकरण की तरफ ही न केवल अग्रसर हो अपितु सामाजिक हस्तक्षेप को भी सम्मिलित करे। सहयोगी अनुसंधानों की योजना के साथ अध्ययन के उद्देश्यों को जोड़ने की स्थिति भी उभरी हैं जो नवीन पद्धतिशास्त्रों के प्रत्यावर्तन के लिए प्रोत्साहित करती है।

इन सकारात्मक प्रवृत्तियों के बावजूद सामाजिक आन्दोलन अध्ययन स्थायी रूप से अपनी सफलता से ही हानि होने के खतरों का भाग बनती है। पिछले दशक में इन अध्ययनों में बेतहाशा वृद्धि हुई है परन्तु उनका केन्द्र 'वैश्विक उत्तर' है यह कठिन है कि 'वैश्विक दक्षिण' की सन्देहास्पद राजनीति पर अध्ययन केन्द्रित हो।

समाजविज्ञानों में अन्तर्राष्ट्रीयकरण की तरफ उठा उभार एक निश्चय ही सकारात्मक पक्ष है विशेषतः उन स्थितियों में जब विभिन्न देशों के अनुभवों अकादमिक संस्थानों व संस्कृतियों के अनुभवों के संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीयकरण को समझा जाए। अन्तर्राष्ट्रीयकरण विभिन्न उपागमों के प्रति हमें सचेत करता है। साथ ही यह हमें पद्धतियों, स्टाइल्स, व्यवहार अपने राष्ट्रीय अनुभवों को तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुति के प्रति भी सचेत करता है। यह आलोचनात्मक एकाग्रता एवं बौद्धिक बाहुल्यतावाद को प्रोत्साहित करता है। परन्तु विशिष्ट परम्परा से जोड़कर (अथवा परम्पराओं के उद्विकास) अन्तर्राष्ट्रीयकरण अधिक समस्यामूलक बन जाता है। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे 35 विभिन्न देशों के पी एच डी विद्यार्थियों एवं पोस्ट डॉक्टरल अध्येताओं के सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी अध्ययनों के निर्देशन का अथवा उन अध्ययनों हेतु दिशा निदेशक के रूप में भूमिका का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने इस सहभागिता से सीखा है कि मुख्यधारायी एंगलो–सेक्सन उपागम के इतर जाकर एवं अनेक संकीर्णताओं के परे जाकर बहुत कुछ सीखा जा सकता है। इस सतत् प्रोत्साहन में मेरी आस्था का कारण वह युवा पीढ़ी है जो मुझे स्व–प्रत्यावर्तन की उस दक्षता के प्रति आशावान करती है जो कि सामाजिक आन्दोलन अध्ययन हेतु आवश्यक है। ■

डोनेटैला डेला पोर्टा से पत्र व्यवहार हेतु पता <donatella.dellaporta@sns.it>

> अरब दुनिया में समाजशास्त्र

सारी हनाफी के साथ साक्षात्कार

सारी हनाफी

सारी हनाफी वर्तमान में बेरूत के अमरीकी विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर और समाजशास्त्र, मानवशास्त्र एवं मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष हैं। वे इदाफत : द अरब जर्नल ऑफ सोशियोलीजी (अरबी में) के संपादक भी हैं और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद एवं सामाजिक विज्ञान की अरब परिषद दोनों के उपाध्यक्ष हैं। उनकी अनुसंधान रूचियों में प्रवास का समाजशास्त्र, वैज्ञानिक अनुसंधान की राजनीति के साथ नागरिक समाज, कुलीन वर्ग निर्माण और संक्रमणकालीन न्याय सम्मिलित हैं। उनकी नवीनतम पुस्तक Knowledge Production in the Arab World : The Impossible Promise का सह–लेखन आर. अरवानितिस के साथ हुआ और वह दोनों अरबी और अंग्रेजी में प्रकाशित हुई थी। सारी हनाफी के अतिरिक्त शायद ही किसी ने अरब दुनिया के समाजशास्त्र के विकास के लिए इतना योगदान दिया है। कुछ ही ने अरबी और पश्चिमी समाजशास्त्र के बीच मध्यस्थता में अधिक प्रगति की है। मोरोक्को के एल जदीदा में समाजशास्त्र के **प्रोफेसर मोहम्मद अल इदरिसी** उनका साक्षात्कार कर रहे हैं।

मो.अ.इ.: आप दमिश्क के यारमोक फिलीस्तीनी शरणार्थी शिविर में पले बढ़े और आपने समाजशास्त्र में आने से पूर्व मूल रूप में सिविल इंजिनियरिंग में दाखिला लिया था। क्या आपकी सामाजिक पृष्ठभूमि ने इस परिवर्तन को करने के आपके निर्णय को प्रभावित किया?

सा.ह.: हाँ सचमुच। 1980 के दशक के प्रारम्भ के समय में, मैं अत्यन्त राजनैतिक था, मैं दुनिया को बदलना चाहता था। निस्सन्देह, अब मैं इसे बहुत कम समझ सकता हूं। तब दो मुद्दों ने मुझे चिंतामग्न कर रखा था : उपनिवेशी फिलीस्तीन और सीरिया में सत्तावाद : इन मुद्दों ने मुझे समाजशास्त्र की ओर धकेला। दमिश्क में यारमोक शरणार्थी शिविर जहाँ में पला बढ़ा था, में Day of Land के लिए प्रदर्शन के बाद मेरी पहली गिरफ्तारी से मैं चिन्हित हुआ। तब एक खुफिया अधिकारी ने मुझे कहा : ''तुम्हारा पूरा समूह एक बस को भी नहीं भर पायेगा : तुम्हें आसानी से जेल ले जाया जा सकता है।'' अरब सत्तावादी राज्यों ने हमेशा इस तरह के ''बस के लोग'', चाहे वे असंतुष्ट बुद्धिजीवियों के रूप में या आम तौर पर प्रबुद्ध मध्यम वर्ग के रूप में परिभाषित हों–की विरोध प्रदर्शन को प्रारम्भ करने में महत्व को कम आँका है। मैंने शक्ति

> >

और बायो–पोलिटिक्स की माइक्रोफिजिक्स के फूको के विश्लेषण में शरण ली। मैं उनकी सोच का अनुसरण करने के लिए फ्रांस गया। मैं राज्य के कुलीन वर्ग का वैज्ञानिक विश्लेषण चाहता था, लेकिन उसी समय, मेरे स्वयं के सक्रियतावाद ने मुझे बुरावे के वर्गीकरण के अनुसार समाजशास्त्र को न केवल एक पेशेवर और विवेचनात्मक उद्यम अपितु सार्वजनिक सम्बद्धता और नीति वकालत के रूप में समझने में मदद की।

मो.अ.इ.: पेशेवर और लोक समाजशास्त्र के मेल की क्या चुनौतियाँ रही हैं?

सा.ह.: अरब दुनिया में यह आसान नहीं है। सभी अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह समाजशास्त्र को जेसा पियरे बोर्दिम् प्रस्तावित करते हैं, एक मार्शल आर्ट के रूप में नहीं, जो लोगों को सामान्य ज्ञान और विचारधाराओं से निरस्त्र करता है अपितु राज्य के आधुनिकीकरण प्रोजेक्ट के उपकरण के रूप में बेहतर समझा जा सकता है। सामाजिक विज्ञानों को दो ताकतें अमान्य घोषित करने की कोशिश करती है : सत्तावादी राजनैतिक अभिजन और कुछ वैचारिक समूह, विशिष्ट तौर पर कुछ धार्मिक सत्ताधारी। दोनों समाज विज्ञानों के समस्याग्रस्त उद्भव (औपनिवेशिक काल में अका उदय) और उनके विदेशी निधियन पर जोर देते हैं। आजकल मुझे लगता है कि समस्या केवल धार्मिक समूहों के साथ ही नहीं है अपितु जिसे मैं अरबी अनुदार वामपंथ कहता हूं के साथ भी है। दोनों ही इतने अभिमानी है कि वे जमीनी परिवर्तन को नजरअंदाज कर देते हैं और लोकतंत्र जैसे सार्वभौमिक मूल्यों का प्रतिरोध करते हैं। बेशक, अरब बगावत ने कुछ सकरात्मक संज्ञानात्मक घटनाक्रम उजागर किया, लेकिन परिवर्तन और बहस को तर्कसंगत बनाने के लिए सामाजिक विज्ञानों का ट्यूनिशिया के अलावा, कुछ अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है। ट्यूनिशिया एक अपवाद है जहाँ शिक्षाविदों ने समाज में संवाद कायम करने और नागरिक समाज के साथ साझेदारी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। National Dialogue Quartet को 2015 का नोबल पुरूस्कार मिलना एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक विजय है।

मो.अ.इ.: अरब बगावत के पश्चात के काल में क्या समाजशास्त्रियों ने ऐसे सकरात्मक संज्ञानात्मक विकास में योगदान किया है?

सा.ह.: इस क्षेत्र के अधिकतर औपनिवेशिक–पश्चात के अध्ययन सरल, अरब दुनिया में होने वाले परिवर्तनों को समझने में असमर्थ रहे हैं। कई अरब बगावतें अभी तक असफल, सिर्फ साम्राज्यवाद और उपनिवेश–पश्चात प्रभुत्व के कारण नहीं बल्कि गहन रूप से जड़ और फैले हुए सत्तावाद के कारण, और बहुलता, लोकतंत्र, स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को सीखने की प्रक्रिया में संलग्न लोगों में विश्वास में कमी के कारण, असफल हुई है। अरब दुनिया को असफ बयात के द्वारा वर्णित तरीकों के अनुसार सामाजिक आंदोलनों को समझने के समाजशास्त्रीय उपकरणों की आवश्यकता है। अर्थात अपने जीवन को बेहतर बनाने और जीवित रहने के लिए साधन सम्पन्न और शक्तिशाली पर साधारण लोगों का शांत, लंबा लेकिन व्यापक अतिक्रमण।

मेरे विचार में, लोक समाजशास्त्र हमेशा सामाजिक कर्त्ताओं की समाज को बदलने की क्षमताओं पर विमर्श को उकसाने की कोशिश करता है। समाजशास्त्री के रूप में, मेरी भूमिका यह दिखाने की है कि कोई निपट दुष्ट या निपट भला नहीं है। अपनी समाजशास्त्रीय कल्पना और कत्ताओं के अभिकरणों पर फोकस के साथ समाजशास्त्र हमें सामाजिक प्रघटना की जटिल प्रकृति का स्मरण कराता है। अन्य शब्दों में, समाजशास्त्र लोगों को लोगों के संघर्ष के बारे में, संघर्षों के भू–राजनैतिक होने की बारम्बार व्याख्या, (X और Y राज्य ''विपक्ष'' को युद्ध के साधन प्रदान कर रहे हैं) और नस्लीय समूहों के मध्य संघर्ष (जैसा कई विद्वान, मीडिया और साधारण लोग सीरिया या बाहरेन जैसे देशों में संघर्ष को समझते हैं) के परे सोचने की याद दिलाता है। समाजशास्त्र हमें गठबंधनों को हितों के अभिसरण के रूप में व्याख्या करने के बारे में भी स्मरण कराती है। ऐसा वह कैंप के संदर्भ में नहीं (प्रतिरोध के कैंप बनाम् सम्राज्यवाद का कैंप इत्यादि); यह कि सिर्फ इस्लामिक राज्य (ISIS) ही takfir (स्वधर्म त्याग करने का इल्जाम) से homo sacer (एक मनुष्य जो बिना आकलन किये और बिना किसी प्रक्रिया के मारा जा सकता है) का प्रयोग करते हैं बल्कि वे भी जो नागरिकों पर बैरल बम फैंकते हैं। समाजशास्त्र हमें याद दिलाता है कि युवा ISIS में सिर्फ इसलिए नहीं भर्ती हुए है चूंकि उन्होंने विशिष्ट किताबें पढ़ी है या कुरान की विवेचना करने के कुछ तरीकों का अनुसरण किया है, परन्तु इसलिए क्योंकि वे राजनैतिक और सामाजिक अपवर्जन के संदर्भ में जी रहे हैं।

मो.अ.इ.: अरब दुनिया में लोक समाजशास्त्र ने वास्तव में क्या भूमिका निभाई है?

सा.ह.: सामाजिक बहस को तर्कसंगत बनाने और हमारी आधुनिकता का सामना कर रही समस्याओं के समाधान प्रदान करने में सामाजिक विज्ञानों की महत्वपूर्ण भूमिका को अरब दुनिया को अभी भी कबूलना है। अरब क्षेत्र में, हम लोक अधिकारियों के अनुरोध पर समाज वैज्ञानिकों द्वारा लिखित और बाद में सार्वजनिक क्षेत्र में बहस किया ''श्वेत पत्र'' के बारे में बहुत कम सुनते हैं। यहाँ तक कि जब ट्यूनिशाई तानाशाह जीन अल–दाइन बेन अली ने 1990 के दशक के दौरान ट्यूनिशाई इस्लामियों के विरूद्ध अपने क्रूर संघर्ष में विज्ञान को एक वैचारिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया, उन्होंने सामाजिक विज्ञानों का उल्लेख नहीं कर शुद्ध विज्ञान का किया। वैज्ञानिक बैठकें किसी भी अन्य सार्वजनिक बैठकों की तरह मानी जाती हैं और पुलिस निगरानी में आयोजित होती हैं। इसी समय, समाजशास्त्रियों ने भी स्वयं की भी कोई मदद नहीं की है : वें एक प्रभावशाली आवाज उठाने वाले या उन लोगों की रक्षा करने वाले हैं जो शक्ति के लिए आवश्यक हैं, वैज्ञानिक समुदाय के रूप में विकसित होने में असफल रहे हैं।

मो.अ.इ.: यह बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु है : वैज्ञानिक समुदाय इस क्षेत्र में इतनी कमजोर क्यों है?

सा.ह.: एक वैज्ञानिक समुदाय को सशक्त करने के लिए दो प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है : पेशे की प्रस्थिति होनी चाहिए लेकिन वह प्रस्थिति राष्ट्रीय संघ द्वारा संस्थागत भी होनी चाहिए। ये दोनों ही अरब दुनिया में नहीं पाये जाती हैं। वहाँ सिर्फ तीन ही सक्रिय समाजशास्त्रीय संघ (लेबनान, ट्यूनिशिया, मोरोक्को) हैं, और दिलचस्प बात है कि अन्य अरब देशों की तुलना में इन देशों में काफी कम राजकीय दमन है। हाल ही में, नव स्थापित समाज विज्ञान की अरब परिषद इस बात पर चर्चा कर रही है कि यह संगठन किस प्रकार ऐसे संघों के उभार को बढ़ावा दे सकता है।

जैसा कि मैंने पहले कहा, वैज्ञानिक समुदाय को, न केवल दमनकारी राज्यों बल्कि उन ताकतों का जो सामाजिक विज्ञानों का अवैध/अमान्य करने की कोशिश करती है, का सामना करने के लिए संगठित होना चाहिए। धार्मिक प्राधिकारी अक्सर सामाजिक विज्ञानों से खतरा महसूस करते हैं क्योंकि यह दोनों समूह सार्वजनिक विमर्श में प्रतिस्पर्धा करते हैं। एक बार मैंने एक धार्मिक नेता और एक कार्यकर्त्ता : स्वर्गीय शेख मोहम्मद सईद रमदान अल बोती (जिन्होंने तर्क दिया कि इस्लाम परिवार नियोजन के किसी भी रूप के खिलाफ है) और राज्य समर्थित संगठन General Union of Syrian Women से गैर–धार्मिक कार्यकर्त्ता के मध्य एक तनावपूर्ण टेलिविजन बहस

>>

को देखा। जबकि, परिवार नियोजन स्पष्ट रूप से समाजशास्त्र और जनसांख्यिकी के अधिकार क्षेत्र में आता है, कोई भी सामाजिक वैज्ञानिक इसे कभी भी सार्वजनिक बहस में नहीं लाया है। एक अन्य उदाहरण कतार से आता है। कतार के अधिकारी विदेशी विश्वविद्यालयों की कतार में शाखाओं को उनके विश्वविद्यालय मुख्यालय में पढ़ाये जाने वाले समान पाठ्यक्रम को ही पढ़ाने को कह कर अपनी रूढ़िवादी राजनैतिक और धार्मिक अधिकारियों से रक्षा करते हैं। हालांकि, इन वायुछत्र विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों को कौन बचायेगा? हाल ही के एक साक्षात्कार में, कार्नेगी मेलॉन विश्वविद्यालय, कतार के अध्यक्ष ने ''अपने को बचाने'' हेतु इस बात पर जोर दिया कि अधिकारी उत्तरदायी हैं। तो हर कोई एक समस्याग्रस्त संदर्भ जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बहुत सीमित है, बहस को हकशफा करना चाहता है। ''विज्ञान के लिए क्षेत्र'' का विकास अपवाद का एक अतिरिक्त–प्रादेशिक स्थान बन सकता है। ऐसा इस अर्थ में हो सकता है कि स्थानीय कानून आवश्यक रूप से लागू नहीं होंगे जिससे आसपास के समाज की आलोचना करने की स्वतन्त्रता प्रदत्त होगी। लेकिन ऐसा करने से सामाजिक आवश्यकताओं से कटने का जोखिम होगा।

मो.अ.इ.: अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ (आई. एस. ए.) के एक उपाध्यक्ष के रूप में, आप समाजशास्त्रीय समुदाय के संस्थानीकरण को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं?

सा.ह.: इस संबंध में आई. एस. ए. एक प्रमुख भूमिका निभा सकती है। 2014 की योकोहामा विश्व काँग्रेस में, सभी राष्ट्रीय संघों की सेवा करने के लिए चार वर्ष के लिए निर्वाचित हुआ। मैंने अपने आप को पाँच प्राथमिकताओं के लिए प्रतिबद्ध किया : पहला, मैं व्यक्तियों, संस्थाओं और सामूहिक समाजशास्त्रीय समुदायों के स्तर पर उत्तर–दक्षिण के मध्य सहयोग को प्रोत्साहित करूँगा। दूसरा, मैं दुनिया भर के, विशेष रूप से दक्षिण अमरीका, अफ्रीका और मध्य पूर्व के समाजशास्त्रियों को संघ में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने की उम्मीद रखता हूं, चूंकि इन क्षेत्रों से आई. एस. ए. सदस्यों की संख्या अभी भी काफी कम है। तीसरा, आई एस ए कांफ्रेसों में गरीब देशों (बी. और सी श्रेणी) से समाजशास्त्रियों की भागीदारी के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु धन जुटाने की कोशिश करूँगा। चौथा, मैं दक्षिण अमरीका, अफ्रीका और मध्य–पूर्व के साथ यूरोप के राष्ट्रीय संघों को आई. एस. ए. के सामूहिक सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित करूँगा। अंत में, मैं चाहता हूं कि राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदायों को अधिक प्रभावशाली ढंग से समर्थन देने के लिए उनके संघों में अधिक भागीदारी और प्रादेशिक नेटवर्किंग को प्रोत्साहित करने हेतु आई एस ए भाग ले। अतः मेरा आगे का कार्य विराट् है। ■

सारी हनाफी से पत्र व्यवहार हेतु पता <sh41@aub.edu.lb>
मोहम्मद अल इदरिसी से पत्र व्यवहार हेतु पता <mohamed-20x@hotmail.com>

> लेबनान के कचरा संकट की बायोपोलिटिक्स

निसरीन चेद, उत्रेच्त विश्वविद्यालय, नीदरलैंड

बेरूत में कचरा इकट्ठा होते हुए

अगस्त, 2015 में, कचरा संकट की प्रतिक्रिया में लेबनान के विरोध प्रदर्शन लोकप्रिय भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में तब्दील हो गये। कचरा प्रबंधन संकट लेबनान की बायोपोलिटिक्स में एक दृष्टि प्रदान करता है और लेबनान राज्य एवं कट्टरपंथी दल किस प्रकार वर्ग और नागरिकता–आधारित हिंसा के प्रतिमानों को प्रतिबिम्बित और मजबूत करते है, का खुलासा करता है।

बेरूत का कचरा संकट जुलाई, 2015 में प्रारम्भ हुआ जब शहर की सड़कों पर कचरा जमा होने लगा। सरकार ने कचरा संग्रहण कम्पनी सुकलीन के साथ अपने लंबे समय से चला आ रहा अनुबंध को समाप्त कर दिया। यह ऐसा संबंध था, जो लेबनान के निजीकरण पैटर्न का विशिष्ट रूप था जिसमें सरकारी अनुबंध अभिजन राजनैतिक निष्ठा, भ्रष्टाचार एवं चोरी से आकार लेते हैं। मध्यम वर्गीय नागरिक समाज एवं सामाजिक मीडिया कार्यकर्त्ताओं से बना "You Stink" अभियान ने जनता, जिसमें नागरिक समाज संगठन, विद्यार्थी समूह, वामपंथी, सम्प्रदायवादी–विरोधी और नारीवादी समुदाय सम्मिलित है को आकर्षित किया। उसने प्रदर्शनकारियों को भ्रष्टाचार, भाइ भतीजावाद, सार्वजनिक स्थान की कमी, सम्प्रदायवादी शासन व्यवस्था का उन्मूलन, पुलिस हिंसा के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करना इत्यादि जैसे बड़े मुद्दों पर संवाद कायम कर के प्रदर्शनकारियों को लामबंद किया।

29 अगस्त को एक मुख्य विरोध प्रदर्शन में 70,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। लेकिन महत्वपूर्ण मोड़ सप्ताह भर पहले आया, जब You Stink आयोजकों ने प्रदर्शनकारियों से दूरी बना ली। प्रदर्शन ने हिंसक मोड़ ले लिया और कई लोगों पर Moundassin - ठग या घुसपैठिये के लिये अरबी शब्द – होने का एवं गैर–हिंसक आंदोलन को नाकाम करने का आरोप लगाया। You Stink ने तो अधिकारियों से ''घुसपैठियों'' पर कड़ी कार्यवाही करने और हिंसक प्रदर्शनकारियों से ''सड़कों को साफ'' करने का आह्वान किया। उनका दावा था कि ये युवा प्रदर्शनकारी राजनैतिक दल अमल के ''ठग'' थे। आने वाले दिनों में कई प्रदर्शनकारियों (मुख्य रूप से वामपंथी) ने You Stink को ''मैं Moundass हूँ'' (''मैं एक घुसपैठिया हूँ'') जैसे नारों से चुनौती दी और Moundass शब्द में निहित अपमानजनक स्थिति की निंदा की जिसने You Stink के नेताओं को माफी माँगने पर प्रेरित किया।

लेकिन इस घटना ने एक गहरे मतभेद को दर्शाया। Moundassin के इस्तेमाल में लेबनानी मीड़िया, राजनेताओं और कुछ सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने प्रदर्शनकारियों को खारिज कर एवं उनकी ''भिन्न शारीरिक बनावट'' पर जोर दे कर एक वर्गीय/नस्लीय विमर्श को उत्पन्न किया। एक

>>

"You Stink" के अनुयायी लेबनानी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए

लेबनानीन अखबार ने उन्हें 'कुत्ता' कहा जबकि अन्य ने उन्हें ''नंगी छाती वाले लोग'' और ''नकाब वाले लोग'' के रूप में खारिज किया। सुन्नी एवं ईसाई राजनैतिक दलों के साथ सम्बद्ध कुछ मीडिया ने दावा किया कि प्रदर्शनकारी खंदा एल घामिक जैसे कामगार वर्गीय शिया इलाकों से हैं और उन्हें हिजबुल्लाह दल के साथ जोड़ा; अन्य ने दावा किया कि प्रदर्शनकारी सीरिया और फिलीस्तीनी के शरणार्थी थे।

प्रदर्शनकारियों के प्रति प्रतिक्रिया क्रूर थी : दंगा पुलिस ने उन्हें सशरीर गिरफ्तार करने या मारने के लिए हथियारों का इस्तेमाल किया। Moundassin के लेबल से लैस, अमानवीयकरण की तकनीक ने निम्न आय वर्ग और गैर–लेबनानी पृष्ठभूमि वाले प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा के प्रयोग को उचित ठहराया। लेबनानी बायोपोलिटिकल व्यवस्था के अंतर्गत तथाकथित Moundassin- कामगार वर्ग एवं गैर नागरिक प्रजा – को अपराधी माना जाता है और उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया जाता है, उन विशेषाधिकार प्राप्त अभिजन की तुलना में जिन्हें जीने योग्य माना जाता है और जीने दिया जाता है।

प्रदर्शनकारियों ने प्रतिभागियों को पुलिस की हिंसा से बचाने के लिए देखरेख के अनौपचारिक स्वरूपों का संयोजन एवं काम में ले कर जवाब दिया। मनमाने ढंग की हिरासत के प्रत्येक लहर के बाद, जेलों के बाहर धरने स्वतः ही शुरू किये गये और उनकी पुनरावृत्ति कर उन्हें प्रतिरोध की परम्पराओं में परिवर्तित किया गया। व्यंग्यात्मक और हास्यात्मक बैनरों ने दानवीकरण एवं Indiseis (घुसपैठ) शब्द के प्रयोग की आलोचना की। कुछ ने "Je Suis Khanda" (उस क्षेत्र का नाम जहाँ से तथाकथित रूप से Moundassin आते हैं), हम Moundassin हैं, "Indiseis", ''यह Indiseis का आंदोलन है'', आओ और Indass और देखों मैं कितना नरम हूँ'' लिखा था जबकि अन्य ने भीड़ में पुलिस के गुप्त घुसपैठियों का उपहास किया।

Moundass का इस प्रकार का दावा फैल गया। बेरूत के व्यापार संघ के मुखिया ने जब दावा किया कि ''साम्यवादी'' प्रदर्शनकारी (जो रूस उगलता है) अर्थव्यवस्था एवं देश के 'सभ्य' मुखड़े को नष्ट कर देंगे, प्रदर्शनकारियों ने केन्द्रीय बेरूत को Souk Abou Rakh usa ''सस्ते बाजार'' में परिवर्तित कर दिया। ऐसा कर उन्होंने केन्द्रीय बेरूत में अवैध रूप से निजीकृत, अगम्य, अलबेली जगह में एक बड़ा कबाड़ी बाजार बनाया जिसने हजारों लोगों को सामूहिक रूप से इस पुननिर्मित जगह में टिप्पणियों की नकल उतार कर अपने मनोरंजन के लिए आकर्षित किया।

शहर के कचरे के उपर विरोध से हम लेबनान की वर्ग व्यवस्था और नागरिकता से क्या अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं? लेबनान के नियमों की व्यवस्था राजनैतिक अभिजन को कचरा प्रबंधन पर बोली लगा कर लाभ लेने की अनुमति देती है; अभिजन राजनैतिक साम्प्रदायिकता द्वारा प्रबलित पूंजीवादी–आर्थिक सम्बन्धों के जटिल वेब के माध्यम से सजीव आबादी से जुड़े हुए हैं। लेबनान की बायोपोलिटिक्स नवउदारवादी राज्य और सांप्रदायिक कत्ताओं, जो जीवन और अभिजन वर्ग को उत्कृष्ट आर्थिक श्रेणियों, गैर–कुलीन वर्ग को नियंत्रित और अधीन करते हुए, में परिवर्तित करते हैं।

अधिकांश कचरा भराव क्षेत्र सीमान्त क्षेत्रों में स्थित है। वास्तव में, सुकलीन का अनुबंध तभी खत्म हुआ था जब Na'ameh क्षेत्र के निवासियों ने सड़क को कचरा भराव क्षेत्र के रूप में रोक दिया जिसने 1998 में इसके खुलने के बाद से क्षेत्र में गंभीर स्वास्थ्य खतरों और पारिस्थितिक नुकसान पहुँचाया है। यद्यपि सरकार ने इसे 2004 में बंद करने का वादा किया था, यह 2015 में भी काम आ रहा था। कचरा भराव क्षेत्र के पास रहने वाले लोग खतरनाक पर्यावरणीय जोखिम, विषाक्त पदार्थों, कैंसरकारी पदार्थों का सामना करते हैं। यह वर्ग और कचरा संकट के मध्य संबंधों को दर्शाती है। कचरा भराव क्षेत्र के पास रिहायश करने वाले लोगों पर सरकार और कट्टरपंथी दलों का नियंत्रण होता है और वे उन्हें धीमी मौत की तरफ ले जाते हैं।

अमानवीयकरण और पुलिस की क्रूरता और कचरा भराव क्षेत्र से पैदा होने वाली पर्यावरणीय हिंसा लेबनानी व्यवस्था के शिल्प जो कई दशकों से उन्हीं भ्रष्ट नेताओं द्वारा से शासित है, का उदाहरण देती है। सड़कों पर कचरा संकट और कचरे के संचय ने न केवल राजनैतिक अधिकारियों के भ्रष्टाचार को उजागर किया है अपितु इसने साम्प्रदायिक राष्ट्र–राज्य एवं उसकी नीतियों में गहन रूप से अंकित वर्ग और हिंसा के नस्लीय आयामों को उजागर किया। ■

निसरीन चेद से पत्र व्यवहार हेतु पता
<nisrine.chaer@gmail.com>

> चरम हिंसा का सामान्यीकरण

इजराइल का मामला

लिजा हज्जर, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सान्ता बारबरा, यू. एस. ए.

गाजा शहर के उपर इजराइली हमले के विस्फोट से निकला धुँआ और आग, जुलाई, 2014

15 फरवरी, 2016 को जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं समाजशास्त्री अमिताई एत्जियोनी ने इजराइल के होराज में ''क्या इजराइल को हिजबुल्लाह मिसाइलों के विरूद्ध विध्वंसकारी हथियारों के प्रयोग के बारे में सोचना चाहिए? शीर्षक का लेख प्रकाशित किया।[1] पहले एक अनाम इजराइली अधिकारी जिसने दावा किया कि हिजबुल्लाह के पास 100,000 मिसाइलें हैं, जो एक प्रमुख सुरक्षा खतरा है, का और इजराइल के सेना प्रमुख का हवाला देते हुए एत्जियोनी ने कहा कि अधिकांश मिसाइलें निजी घरों में स्थित हैं। एत्जियोनी का मानना है कि इजराइली सेना को मिसाइलों को नष्ट करने के लिए भेजने से कई इजराइली नागरिकों के साथ

> >

साथ लेबनानी नागरिकों के हताहत होने की संभावना अधिक है। एक अन्य विकल्प, जिसकी एत्जियोनी चर्चा करते हैं, में Free Air Explosives (FAE) शामिल हैं जो ''ईंधन के एयरोसोल बादल को तितर बितर करने के लिए डेटोनेटर के प्रयोग का सुझाव देते हैं जो बड़े पैमाने पर विस्फोट पैदा कर एक काफी सीमा में के भीतर आने वाली सभी इमारतों ..... (सपाट करने में सक्षम) है।'' वे स्वीकार करते हैं कि चिन्हित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को यदि पहले से चेतावनी दी जाए, तो भी नागरिकों का हताहत होना अपरिहार्य है। अतः वे तर्क देते हैं कि चूंकि ''इजराइल को शायद FAEs का इस्तेमाल करने पर विवश होना पड़े'', विदेशी सैन्य विशेषज्ञों एवं लोग बुद्धिजीवियों, ''जिनके बारे में पता है कि इजराइल के बैरी नहीं है'', को इन मिसाइलों के प्रभाव पर प्रतिक्रिया देनी चाहिए। एत्जियोनी लिखते हैं कि ऐसा इन शक्तिशाली हथियारों के उपयोग पर यदि स्वीकृति नहीं तो कम से कम अधिक समझ पैदा होगी, यह देखते हुए कि और कुछ ऐसा नहीं कर सकता।''

राज्यों को स्वयं की सुरक्षा खतरों से बचाव करने का अधिकार है परन्तु सशस्त्र बल का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून द्वारा नियंत्रित होता है। यह सर्वप्रथम एक तरफ लड़ाकों और सैन्य ठिकानों के और दूसरी तरफ नागरिकों एवं नागरिक वस्तुओं के मध्य अन्तर करने के दायित्व की धारणा पर आधारित है। राज्य सैन्य निशानों के अनुपात में और आवश्यक वैध सैन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बल का प्रयोग कर सकते हैं; लेकिन यदि यह सच भी है कि हिजबुल्लाह मिसाइलें नागरिकों के घरों में स्थित हैं तो भी FAE जैसे बड़े पैमाने पर विनाश करने वाले हथियारों को शामिल करने वाले परिदृश्य में विशिष्टता और अनुरूपता के बुनियादी मानवीय सिद्धान्त का उल्लंघन होगा।

विदेशी सैन्य विशेषज्ञों एवं ब्लोक बुद्धिजीवियों को FAE के उपयोग के फलस्वरूप पैदा होने वाली चरम हिंसा को सामान्य करने में मदद करनी चाहिए, एत्जियोनी का यह सुझाव अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून के प्रति इजराइल के दृष्टिकोण के समानान्तर पाया जाता है। IHL की खुले रूप से उपेक्षा करने वाले राज्यों एवं सैन्य समूहों के विपरीत, इजराइल का सामरिक पुनर्व्याख्या से जुड़ने का लंबा रिकार्ड है जिसके द्वारा वह अपनी हिंसा को ''कानून के दायरे'' में लाने की आशा करता है। उदाहरण के लिए, 2000 में, अतिरिक्त–न्यायिक निष्पादन को सुरक्षा नीति के एक विकल्प के रूप में काम में लेने के अधिकार पर सार्वजनिक रूप से कहने वाला इजराइल पहला राज्य बना। इजराइल के सैन्य महाधिवक्ता अंतराष्ट्रीय विधि प्रकोष्ठ के पूर्व प्रमुख डेनियल राइसनर ने जैसा बताया :

जो हम अभी देख रहे हैं वह अंतर्राष्ट्रीय कानून (....) का पुनरीक्षण है। यदि आप लंबे समय तक कुछ करते हैं तो दुनिया उसे स्वीकार कर लेगी। पूरा अंतर्राष्ट्रीय कानून आज इस धारणा पर आधारित है कि आज जो कार्य वर्जित है वह यदि कई देशों द्वारा निष्पादित किया जाता है तो वह स्वीकृत हो जाता है (....)। अंतर्राष्ट्रीय कानून उल्लंघनों के माध्यम से आगे बढ़ता है।[2]

FAE के प्रयोग से जुड़ा हुआ एत्जियोनी का परिदृश्य इजराइल के हाल ही के सैन्य संघर्षों की कुछ विशिष्ट घटनाओं और सरकार द्वारा अधिक गैर–भेदभाव और विनाशकारी हिंसा की तरफ अपने सामरिक शिफ्ट के औचित्य को उचित ठहराने के तर्क से पोषित होता है। सितम्बर, 2000 में, दूसरे इन्तिफदा, जिसे अधिकारियों ने ''युद्ध से कम सैन्य संघर्ष''[3] कहा के प्रारम्भ पर, इजराइल ने दावा किया कि आत्मरक्षा में उसे तथाकथित ''दुश्मन'' पर हमला करने का अधिकार है–अर्थात, फिलीस्तीनी प्राधिकरण के अर्द्ध–स्वायत्त नियंत्रण में वेस्ट बैंक और गाजा के कब्जा किये गये क्षेत्र पर। मार्च 2000 में, नेतन्या होटल में हमस गुप्तचर द्वारा घातक आत्मघाती बम विस्फोट के प्रत्युत्तर में, इजराइल ने वेस्ट बैंक में बड़े पैमाने का एक सैन्य अभियान प्रारम्भ किया। ''ऑपरेशन डिफेन्स शील्ड'' ने ''घास काटना'' (mowing the grass)[4] नाम की एक नई रणनीति का संकेत दिया। इस रणनीति का उद्देश्य हिंसा और विनाश के दण्डात्मक स्तरों तक जाना था ताकि वर्तमान क्षमताओं को कमजोर किया जा सके और इजराइल के विरूद्ध भावी हिंसा को रोका जा सके। 9 अप्रेल को जेनिन की लड़ाई (लेबनान के 1982 के आक्रमण के बाद इजराइल का सबसे बड़ा सैन्य अभियान) के दौरान, इजराइल के 13 सैनिक एक मुठभेड़ में मारे गये जिसने इजराइल में और के हताहत हुए बिना शिविर पर शीघ्र कब्जा करने के लिए तीव्र राजनैतिक दबाव बना। नतीजतन, लड़ाकों को मारने या पकड़ने हेतु सैनिकों को इमारतों में भेजने की बजाय, कुछ इमारतों पर पहले बमबारी की गई और सैनिकों की रक्षा और उनके आगे चलने के लिए फिलीस्तीनीयों को मानव ढाल के रूप में कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ा।[5] उस समय, सैन्य उद्देश्यों को देखते हुए थल सैन्य दस्ते के प्रयोग को हवाई बमबारी की तुलना में अधिक आनुपातिक माना गया। लेकिन शहरी कार्यवाही राज्य के स्वयं की सेना के लिए सामरिक दृष्टि से कठिन एवं अधिक खतरनाक होती है। मानव ढ़ालों का प्रयोग सैन्य बल की रक्षा की एक रणनीति थी, लेकिन इजराइल के उच्च न्यायालय ने 2005 के एक फैसले में इस परिपाटी को निषिद्ध कर दिया।

इन सब कारकों ने मिलकर हवा या दूरी से प्रेक्षित अधिक हिंसा की तरफ रणनीतिक बदलाव को प्रेरित किया। 22 जुलाई, 2002 को हमास नेता, सलाह रोहादेह को मारने की एक निशानी कार्यवाही में, एक F-16 ने अल दराज की घनी आबादी वाले गाजा क्षेत्र पर एक टन का बम गिराया। बम वे वह इमारत जहाँ शेहादेह रहता था और पास की आठ इमारतों को और नौ अन्य को आंशिक रूप से नष्ट कर दिया। शेहादेह और उसके अंगरक्षक के अतिरिक्त, बच्चों सहित 14 फिलीस्तीनी मारे गये और 150 से अधिक लोग घायल हुए। बम के आकार और रिहायशी क्षेत्र पर निशाने पर उपजे लोगों के गुस्से ने इजराइली सेना को जाँच करने के लिए प्रेरित किया। जाँच में यह निष्कर्ष निकला कि सेना द्वारा आतंकवादी हिंसा के अपराधी के रूप में शेहादेह पर निशाना लगाना उचित था। यद्यपि यह स्वीकार किया गया कि ''उपलब्ध सूचना में कुछ कमियाँ थी'' जैसे शेहादेह के ''प्रचालन अडडे'' के रूप में वर्णित क्षेत्र में ''निर्दोष नागरिकों'' की उपस्थिति।''[6]

'वैध निशाने' के मध्य 'निर्दोष नागरिकों' की इस बयानबाजी ने, वे समूह जिनके विरूद्ध इजराइल युद्ध लड़ रहा था द्वारा, 'दुश्मन नागरिकों' का मानव ढ़ाल के रूप में प्रयोग की इजराइल की पुनर्व्याख्या को पहले से सूचित कर दिया। ऐसा, कर इजराइली हमलों से होने वाली नागरिक जनहानि का दोष निशाने पर संगठनों पर को शिफ्ट करने का प्रयास किया गया। उसी प्रकार, मानवीय कार्यवाही की बजाय हवाई हमलों की इजराइल की सामरिक पसंद को आसा कशार, तेल अवीब विश्वविद्यालय की प्रोफेसर एवं इजराइली सेना की सलाहकार और जनरल अमोस यादलिन द्वारा सहलेखित एक प्रभावशाली लेख में ''नैतिक'' विकल्प के रूप में रेखांकित किया गया। उन्होंने लिखा :

>>

आम तौर पर, लड़ाई के दौरान हताहतों की संख्या कम करने की जिम्मेदारी प्राथमिकताओं की सूची में अंतिम होती है या फिर अन्त से पहले, यदि आतंकवादियों को गैर–योद्धा की श्रेणी से बाहर रखा जाए। हम दृढ़ता से इस धारणा को अस्वीकार करते हैं क्योंकि यह अनैतिक है। लड़ाकर वर्दी में एक नागरिक है। इजराइल में अक्सर वह भर्ती होने वाला या रिजर्व में ड्यूटी पर है (....)। यह तथ्य कि आतंक में सम्मिलित व्यक्ति आतंक में गैर–सम्मिलित लोगों के आस पास निवास करता है और कार्य करता है, उसकी खोज में लगे योद्धा के जीवन को खतरे में डालने का कारण नहीं हो सकता है।[7]

नागरिकों से अधिक सैनिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने वाली ऐसी रणनीतिक पुनर्व्याख्या नागरिक प्रतिरक्षा के सिद्धान्त के विपरीत है और युद्ध छेड़ने वाले लड़ाकों के ''नागरिकीकरण'' की कहानी का निर्माण करती है। आधारभूत रूप से यह इस तथ्य की भी अवहेलना करती है कि IHL राष्ट्रीय पहचान पर नागरिकों के मध्य कोई भेद के लिए स्थान नहीं देता है। ग्रेगरी चमायो इसे ''शाही योद्धा के लिए प्रतिरक्षा के नियम''[8] के रूप में वर्णित करते हैं और तर्क देते हैं कि यह प्रोजेक्ट बीसवीं शताब्दी के अंतिम छमाही के स्थापित सैन्य संघर्ष के नियम को बारूद लगाने से कम नहीं है : आत्मरक्षा के राष्ट्रवाद के पक्ष में अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को अशक्त करना।[9]

2005 में इजराइल ने एकतरफा कार्यवाही करते हुए गाजा से अपनी थल सेना को वापिस बुला लिया और क्षेत्र को सील कर दिया। 2006 के फिलीस्तीनी विधायी चुनाव, जिसमें हमास जीते और फिलीस्तीनी प्राधिकरण को गाजा से बाहर निकालने वाले गुटीय संघर्ष के बाद पट्टी की घेराबंदी तीव्र हो गई। घटनाओं के इस क्रम ने इजराइल के दावे कि गाजा आतंकियों द्वारा नियंत्रित शत्रु इकाई थी जो आतंकी से सहानूभूति रखने वालों से आबाद थी और जहाँ हमास ने नागरिकों को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल किया, को सशक्त किया।[10] यह अधिकारिक व्याख्या 2000 में दक्षिण लेबनान के कब्जा क्षेत्रों से इजराइल की एकतरफा वापसी के बाद, लेबनान के हिजबुल्लाह नियंत्रित क्षेत्रों के बारे में इजराइल के बयान के समकक्ष थी। गाजा के विदेशी, शत्रुता पूर्ण और आक्रमण–योग्य के रूप में वर्णन का अर्थ था कि इजराइल को इजराइली हमलों के दौरान भी नागरिकों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिए। जैसा कि नेव गोर्डन और निकोला पेरूगिनी समझाते हैं, ''इस प्रक्रिया (बड़ी संख्या में जनहानि पहुंचाने वाली बमबारी को वैध ठहराना) की तदर्थ–पश्चात व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है चूंकि यह इजराइल के इस दावे को अनुमति देती है कि हिंसा को अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार काम में लिया गया और फलस्वरूप यह ''नैतिक'' है।''

2006 में इजराइल द्वारा लेबनान पर आक्रमण के दौरान, घनी शिया आबादी वाले दक्षिणी बेरूत उपनगर के पूर्ण विनाश के संदर्भ में, सेना ने ''दहिया सिद्धान्त'' की रणनीति के तहत जानबूझ कर गैर–अनुपातिक बल का प्रयोग किया। 2008 में इजराइल के उत्तरी कमान के पूर्व प्रमुख मेज जनरल गादी एजनकोट ने कहा, ''2006 में बेरूत के दहिया क्षेत्र में जो हुआ वो इजराइल पर हमला करने वाले प्रत्येक गाँव पर होगा (....)। हम उस पर गैर–आनुपातिक बल का प्रयोग करेंगे और वहाँ अत्यधिक क्षति और विनाश करेंगे। हमारे परिप्रेक्ष्य से यह नागरिक गाँव नहीं है, ये सैन्य ठिकाने हैं (....)। यह कोई सिफारिश नहीं है। यह एक योजना है और इसे मंजूरी मिल गई है। सेवानिवृत्त कर्नल एवं सामरिक विश्लेषक गाबी सिबोनी ने इस सामरिक तर्क की 2008 में, निम्न शब्दों में सविस्तार व्याख्या की :

प्राथमिक युद्ध प्रयास के रूप में दुश्मन के कमजोर पक्ष पर गैर–अनुपातिक आक्रमण का सिद्धान्त (मतलब) और दैतियक युद्ध प्रयास के रूप में दुश्मन की मिसाइल छोड़ने की क्षमता (....) को अक्षम करना है। ऐसे प्रत्युत्तर का उद्देश्य क्षति पहुंचाना और इस स्तर तक दण्ड देना है कि लंबी और महँगी पुनर्निर्माण की माँग होगी। हमला, जितना जल्दी संभव हो, होना चाहिये और उसमें प्रत्येक लॉचर को ढूँढने की बजाय परिसम्पत्तियों को नष्ट करने की प्राथमिकता होनी चाहिए (....)। ऐसा प्रत्युत्तर स्थाई स्मृतियाँ पैदा करेगा (....), जो इजराइल के अवरोध में वृद्धि करेगा और लंबे समय तक इजराइल के खिलाफ शत्रुता की संभावना में कमी लायेगा।[13]

वास्तव में, गैर–आनुपातिक बल की इस नई सामरिक सिद्धान्त के दो महीने बाद, इजराइल ने गाजा में ''ऑपरेशन कास्ट लीड;; प्रारंभ किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकृत अंतर्राष्ट्रीय फैक्ट फाइडिंग रिपोर्ट के अनुसार, इजराइली सेना और फिलीस्तीनी उग्रवादियों दोनों ने ही युद्ध अपराध और मानवता के खिलाफ संभव अपराध किये हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इजराइल ने नागरिकों और लड़ाकों के मध्य अंतर करने में नाकाम रह ''गाजा के लोगों पर पूर्ण रूप'' से निशाना लगाया। नागरिक आधारभूत ढाँचे पर इजराइली हमले जानबूझ कर, व्यवस्थित रूप में एवं एक बड़ी रणनीति का हिस्सा थे।

2014 का गाजा पर युद्ध अब तक का सबसे हिंसक और विनाशकारी युद्ध था। ''ऑपरेशन पिलर ऑफ डिफेन्स'' में 6000 से अधिक हवाई हमले और करीबन 50,000 तोपों और टैंकों के गोलों तकरीबन 21 किलोटन के उच्च विस्फोटक से बमबारी शामिल थीं। हथियारों में ड्रोन, हेलफायर चलाने वाले अपाचे हेलिकॉप्टर और 2000 पाउण्ड के बम ले जाने वाले F-16 सम्मिलित थे। निशानों में बड़ा सारा आधारभूत ढाँचा–जिसमें विलवणीकरण संयंत्र, बिजली ग्रिड़, अस्पताल, स्कूल एवं विश्वविद्यालय, उँची इमारतें और शॉपिंग सेंटर के साथ हमास से पहचान होने वाला या जुड़े होने का आरोपित प्रत्येक ढाँचा भी सम्मिलित था। युद्ध की समाप्ति तक, 2100 से अधिक फिलीस्तीनी मारे गये और 11000 से ज्यादा घायल हुए। इनमें से अधिकांश नागरिक थे। पूरे परिवारों का सफाया हो गया और पूरे क्षेत्र ढहा दिये गये।[15]

युद्ध में क्या वैध है कि व्याख्या, विशेषकर इस शताब्दी में जब युद्धकला इतनी नाटकीय रूप से परिवर्तित हुई है–आंशिक रूप से राज्यों की परिपाटियों, विशेष तौर पर शक्तिशाली राज्यों से आकर लेती है। इजराइल द्वारा चरम हिंसा का प्रयोग और विदेशी नागरिक प्रतिरक्षा की जानबूझकर अवहेलना निश्चित तौर पर असमान संघर्ष में रत अन्य देशों को भी इसी प्रकार के औचित्य देने के लिए लुभायेगी। वास्तव में, विदेशी सैन्य विशेषज्ञों एवं लोक बुद्धिजीवियों की FAE के भावी इस्तेमाल को उचित ठहराने हेतु भर्ती चरम हिंसा को वैधता प्रदान करने का एक आमंत्रण है। यह परिदृश्य उल्टे ही कानून और युद्ध

>>

के मध्य सम्बन्धों के बारे में जानकार है और IHL के अंतर्राष्ट्रीय आम सहमति के आधार की व्याख्याओं के लिए प्रतिबद्ध समाज वैज्ञानिकों द्वारा जो भूमिकाएँ निभाई जा सकती है का सुझाव देता है। इस भूमिका में गैर–आनुपातिक बल और गैर–भेदभाव हथियारों की अवैधता को बनाये रखने में हमारी विशेषज्ञता को तैनात करने के प्रयास शामिल हैं। ■

लिजा हज्जर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<lhajjar@soc.ucsb.edu>

[1] The title actually changed twice before settling on this version. See Ben Norton, "Prominent American Professor Proposes that Israel 'Flatten Beirut' – a 1 million-person city it previously decimated," *Salon*, February 18, 2016.

[2] Yotam Feldman and Uri Blau, "Consent and Advise," *Haaretz*, January 29, 2009, available at http://www.haaretz.com/consent-and-advise-1.269127.

[3] See Asher Maoz, "War and Peace: An Israeli Perspective," *Constitutional Forum* 14 (2) (Winter 2005): 35-76.

[4] Efraim Inbar and Eitan Shamir, "'Mowing the Grass': Israel's Strategy for Protracted Intractable Conflict," *Journal of Strategic Studies* 37(1) (2014): 65-90.

[5] Yael Stein, *Human Shields: Use of Palestinian Civilians as Human Shields in Violation of High Court of Justice Order* (Jerusalem: B'tselem, 2002).

[6] IDF Spokesperson, "Findings of the inquiry into the death of Salah Shehadeh," August 2, 2002, available at http://www.mfa.gov.il/mfa/government/communiques/2002/findings+of+the+inquiry+into+the+death+of+salah+sh.htm.

[7] Kashar and Yadlin, "Assassination and Preventive Killing," *SAIS Review*, 25(1) (Winter-Spring 2005): 50-51.

[8] Grégoire Chamayou, *A Theory of the Drone*, trans. Janet Lloyd (New York: The New Press, 2015): 130.

[9] *Ibid*., p.134.

[10] See Neve Gordon and Nicola Perugini, "The Politics of Human Shielding: On the Resignification of Space and the Constitution of Civilians as Shields in Liberal Wars," *Society and Space*, 34(1) (2016): 168-187.

[11] *Ibid*.

[12] "Israel Warns Hizbullah War Would Invite Destruction," *Ynet*, October 3, 2008, http://www.ynetnews.com/articles/0,7340,L-3604893,00.html.

[13] Gabi Siboni, "Disproportionate Force: Israel's Concept of Response in Light of the Second Lebanon War," *INSS Insight*, 74 (October 2, 2008), http://www.inss.org.il/index.aspx?id=4538&articleid=1964.

[14] Rashid Khalidi, "The Dahiya Doctrine, Proportionality, and War Crimes," *Journal of Palestine Studies*, 44(1) (2014-15): 5.

[15] See "50 Days of Death and Destruction: Israel's 'Operation Protective Edge'," Institute for Middle East Understanding, September 10, 2014, http://imeu.org/article/50-days-of-death-destruction-israels-operation-protective-edge.

> नागरिकों की रक्षा करना

हज्जर का प्रत्युत्तर

अमिताई एत्जियोनी, जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंग्टन डी. सी., यू. एस. ए.

मेरे द्वारा लिखित एक संपादकीय टिप्पणी को लिजा हज्जर ने "अपनी हिंसा को कानून के दायरे में लाने" हेतु अपने बहुपक्षीय इजराइली अभियान के अगले कदम के रूप में स्थित किया है। प्रतिक्रिया के रूप में, मैं पहले टिप्पणी की प्रेरणा को रेखांकित करता हूँ और फिर–दिये गये स्थान के अंतर्गत–मैं जिस अंतर्निहित मुद्दे को देखता हूं और इसे कैसे संबोधित किया जा सकता है, को संबोधित करने की कोशिश करता हूं।

1948–50 के युद्ध के दौरान मैंने कई मित्रों को खोया और यहूदियों और अरबों, दोनों की बड़ी मात्रा में हत्या और दुख देखा। इस प्रारंभिक अनुभव (मैं युद्ध के बीच में 20 वर्ष का हुआ) ने मुझमें गंभीर चेतना के साथ यह समझ विकसित की कि सभी युद्ध–चाहे वे न्यायोचित युद्ध के मानदण्डों को पूरा करते हैं या नहीं–दुःखदायक हैं और उनसे बचने के लिए हमें कदम उठाने चाहिए। मैंने परमाणु युद्ध से बचने के तरीकों को दो पुस्तकें समर्पित की (The Hard Way to Peace and Winning without War); परमाणु अस्त्रों के खिलाफ ट्राफलगर स्केव्यर में प्रदर्शन किया; और अपनी सक्रियता की वजह से कोलंबिया विश्वविद्यालय में अपनी नौकरी को लगभग खो ही दिया था। फिर मैं वियतनाम में युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले सक्रियकार्यकर्त्ताओं में से एक था (ये दोनों अनुभव My Brother's keeper : A Memoir and a Message में वर्णित हैं) मैंने इराक पर अमरीकी आक्रमण का विरोध किया। गहन अकादमिक शोध पर आधारित Security First में, मैं तर्क देता हूं कि इस्लामिक धार्मिक ग्रंथों की गहन जाँच दिखाती है कि दरअसल इस्लाम हिंसा को वैधता प्रदान नहीं करता है। हाल ही में, मैंने अमरीका और चीन के युद्ध की तरफ अग्रसर होने की चेतावनी वाले कई सारे लेख लिखें और चीनी एवं अमरीकी बुद्धिजीवियों को पारस्परिक आश्वासित अंकुश को समर्थन देने वाले समूहों में संगठित किया। संक्षेप में, यद्यपि किसी को भी अपने कार्य की अच्छी समझ नहीं है, 1950 से मैंने अपना जीवन हिंसा को दबाने और उसकी सीमा निर्धारित करने को समर्पित किया है।

मुझे अफसोस है कि मैं इजराइल और फिलीस्तीन के दो–राज्य समाधान, जिसका मैं पुरजोर समर्थन करता हूं, के पक्ष में योगदान देने के लिए ठोस तरीकों को ढूँढ़ने में असफल रहा हूं। फिलीस्तीनी विद्वान शिवले तेलहामी के साथ मैंने सुझाव दिया कि यदि हम अतीत पर ध्यान केन्द्रित करना बंद कर दें तो आगे बढ़ना संभव है। ऐसा तब हो सकता है जब यह प्रश्न करने कि हमारे वर्तमान दुखद हालात के लिए कौन जिम्मेदार है, हम इस पर ध्यान केन्द्रित करें कि हम यहाँ से कहाँ जा सकते हैं। (हमने लिखा कि एक बार दो राज्य हो जाएँ तो अतीत का अध्ययन करने हेतु सत्य एवं न्याय आयोग स्थापित करने के लिए पर्याप्त समय होगा)।[1] मैंने यह भी स्पष्ट किया कि भू–भाग में दोनों लोगों के लिए काफी जगह है–कई लोगों के इस तर्क के विपरीत कि एक तरफ के लोगों को दूसरी तरफ के लोगों को भूमध्यसागर या जार्डन में फेंक देना चाहिए।[2] मैं जानता हूं कि इन संक्षिप्त बयानों का कम वजन है। इजराइल में रहने वाले मेरे चार पोते–पोतियों एवं उनके माता–पिता के लिए ही क्यों नहीं, मेरी तमन्ना थी कि मैं कुछ और कर पाता।

अब मेरे हाल ही के सम्पादकीय टिप्पणी के संदर्भ में हज्जर का मानना है कि यह लेख हिंसा को कानून के दायरे में लाने का प्रयास करता है। इस से बहुत दूर, यह रक्तपात को टालना चाहता है। मैं इस बात को तथ्यात्मक रूप से अविवाद्य मानता हूं कि हिजबुल्लाह ने कुछ 100,000 मिसाइले एकत्रित की हैं, और वह इजराइल को नष्ट करना चाहता है। उसने अपने इरादों या शक्ति को कभी भी छिपाने की कोशिश नहीं की है। निश्चित रूप से 2006 में इस बात के बावजूद, जिसे संयुक्त राष्ट्र को शायद ही इजराइल के पक्ष में था, ने भी पाया कि इजराइल ने लेबनान से अपनी फौज (जहाँ इजराइल को होने का कोई हक नहीं था) की वापसी के बाद लेबनान के प्रति अपने सभी अंतराष्ट्रीय दायित्वों का निर्वाह किया, हिजबुल्लाह इजराइल पर मिसाइलों की बौछार करने से झिझका नहीं। इसके अलावा, मेरा मानना है कि हिजबुल्लाह की अधिकांश मिसाइलें निजी घरों में रखी हैं, का सबूत है। निश्चित तौर पर, यदि वे वहाँ तैनात हैं तो यह पूछना कि क्या किया जाना चाहिए पूर्ण रूप से वैध है।

अतः मैंने अपने इस लघु टिप्पणी में आग्रह किया कि इन मिसाइलों के एक बार फिर छोड़े जाने के पहले, हमें नैतिक और विधिक और व्यवहारिक प्रश्न पूछ लेना चाहिए : इस प्रकार के हमले का इजराइल को क्या जवाब देना चाहिए? उद्देश्य हिंसा को वैध ठहराना नहीं है बल्कि उसे रोकना है। मैंने ध्यान दिलाया कि यदि इजराइली सैनिक घर–घर जा कर इन मिसाइलों को नष्ट करेंगे तो दोनों तरफ बड़ी संख्या में लोग हताहत होंगे और इसलिए इससे

>>

> “लक्ष्य हिंसा को वैधता प्रदान करना नहीं है अपितु इसे रोकना है”

बचना चाहिए। मैंने बताया कि पूर्व में यू. एस. ने टोक्यों और ड्रेसडेन में नागरिकों को निशाना बनाया; कथित रूप से इजराइल ने भी 2006 में बेरूत में ऐसा ही किया था। मैंने इस प्रकार की कार्यवाही के खिलाफ बहस की।3 मैंने फिर बताया कि मिसाइल केन्द्रित इलाकों से नागरिकों को खाली करने हेतु समय देने के बाद, उच्च क्षमता वाले पारम्परिक विस्फोटों का प्रयोग किया जा सकता है। मैं स्वीकार करता हूं कि चाहे कोई भी सावधानी बरती जाएँ, दुर्भाग्य से वहाँ कुछ सपार्श्विक क्षति होगी–ऐसी क्षति जो सभी सशस्त्र संघर्षों में पायी जाती है, चाहे किसी भी प्रकार के साधनों का इस्तेमाल किया गया हो। ऐसी संपार्श्विक क्षति एक मुख्य कारण है जिसकी वजह से सभी पक्षों को युद्ध से बचना चाहिए। मैंने इस सुझाव के साथ खत्म किया कि बाहरी लोगों को युद्ध के खेलों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करना चाहिए। ऐसा यह देखने के लिए करना चाहिये कि क्या वे हिजबुल्लाह मिसाइलों के इस्तेमाल को रोकने के सथ साथ यदि मिसाइलें छोड़ी जाती है तो क्या बेहतर प्रत्युत्तर हो सकता है, पर सुझाव दे सकते हैं।

मैं हज्जर द्वारा उद्धृत विभिन्न इजराइलों के सुझावों या उनके बयानों के प्रभाव का आकलन करने की स्थिति में नहीं हूं। हालांकि मैं कह सकता हूं कि यह शायद ही केवल इजराइल का मुद्दा है; इस तरह से सोचना हमें गलत निष्कर्ष की तरफ ले जायेगा। यह एक ऐसा मुद्दा है जिसका सामना यू. एस. एवं उसके सहयोगी पूरे मध्य पूर्व (व्यापक रूप से समझा), एक क्षेत्र जिसमें आतंकवादी सशस्त्र संघर्ष के सबसे महत्वपूर्ण नियम–विशिष्टता के नियम का नियमित रूप से उल्लंघन करते हैं, में सामना करते हैं। वे मस्जिदों में अस्त्र–शस्त्र का संग्रहण करते हैं; एंबुलैंस में आत्मघाती बण्डियाँ पहुँचाते हैं; निजी घरों में छिप कर गोली चलाते हैं; स्कूलों में तोपखाना स्थित करते हैं और नागरिकों को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

आतंकवादियों से मुकाबला करने वालों के पास दो ही विकल्प बचते हैं : या तो हताहतों की बड़ी संख्या से पीड़ित हो और क्षेत्र से बाहर खदेड़े जाए और ।SIS जैसों को जनता के साथ नृशंस व्यवहार करने के लिए छोड़ दे या नागरिक ठिकानों पर वार किया जाए और बड़ी संख्या में जनहानि हो। इसमें से कोई भी स्वीकार्य नहीं है। मेरी टिप्पणी ने पाठकों को इस बात पर विचारने का आग्रह किया कि इस दुखद दुविधा को कैसे सम्बोधित किया जाए–एक ऐसी कवायद जिसके बारे में हज्जर का व्यापक बयान पूर्ण रूप से चुप है। ■

अमिताई एत्जियोनी से पत्र व्यवहार हेतु पता
<amitai.etzioni@gmail.com>

[1] **Etzioni, A. and Telhami, S. “Mideast: Focus on the Possible.”** *The Christian Science Monitor*, **June 17, 2002**

[2] **Etzioni, A. “Israel and Palestine: There’s Still Room at the Inn.”** *The National Interest*, **April 9, 2014** http://nationalinterest.org/commentary/israel-palestine-theres-still-room-the-inn-10212.

[3] **Etzioni, A. “Should Israel Consider Using Devastating Weapons Against Hezbollah Missiles?”** *Haaretz*, **February 15, 2016**
http://www.haaretz.com/opinion/.premium-1.703486

एक अमानवीय विश्व में मानवीय व्यक्तित्व का होना

व्लादिमीर यादोव की स्मृतियाँ

दमित्री एन शालिन, नेवादा विश्वविद्यालय, लास वेगास, संयुक्त राज्य अमेरिका

2009 में, अपने 80 वे जन्मदिन के अवसर पर व्लादिमिर यदोव

60 के दशक में लेनिनग्राद में वास्तविक/मूर्त सामाजिक अनुसंधान की प्रयोगशाला आकर्षक समाजशास्त्रीय विज्ञान के लिए एक वृहद केन्द्र था जो कि अपने अत्यन्त प्रिय विषय ''एतिहासिक भौतिकवाद'' जो कि विचारधारायी था, के सम्मुख मुख्य स्थिति प्राप्त करने हेतु संघर्षरत था। भावी समाजशास्त्री अपने आनुभाविक अनुसंधानों को सोवियत सत्ता को इस दृष्टि के साथ बेच देते थे कि समाजशास्त्रीय उपकरण साम्यवाद की तरफ हो रही प्रगति की जाँच/खोज कर सकें। सक्रिय अवलोकनकर्ताओं का कार्य था कि वे विभिन्न वास्तविकताओं को रेखांकित करें एवं उस प्रवृत्ति का प्रचार करें जो कि मार्क्सवादी लेनिनवादी दर्शन की भविष्यवाणी के साथ संगत स्थापित करती हों। व्लादिमीर यादोव विषय के अत्यन्त चमकीले सितारों में से एक थे और रूसी समाजशास्त्र को पुनर्जीवित करने में महत्व रूप से लगे थे जो कि बोलशेविक क्रान्ति तथा स्टालिन के कठोर शासन द्वारा बिखर गयी थी। यादोव का महत्वपूर्ण एवं अग्रगामी योगदान ''मैन एण्ड हिज वर्क'' के रूप में उनके सहयोगियों के साथ प्रकाशित हुआ एवं उनका एक अकेले श्रम से तैयार मोनोग्राफ 'मैथडालजी एण्ड मैथड ऑफ सोश्यालिजकल इन्वेस्टिगेशन' उन्हें विकसित हो रही बुद्धिजीवियों के क्षेत्र में अग्रणी स्थान प्रदान करता है।

मैं लेनिनग्राद स्टेट विश्वविद्यालय में तृतीय वर्ष का विधार्थी था जब मेरे शिक्षक आइगोर कान मुझे 1968 में यादोव की प्रयोगशाला में लाये। अगले आठ वर्षों तक मैंने अधिस्नातक विद्यार्थी, पी एच डी अभ्यर्थी एवं अनुसंधान एसोशिएट के रूप में विभिन्न सेमीनार्स में सहभागिता की। यूरी लेवाडा, आइगोर कान, जार्जी शैचड्रोवितसकी एवं समाजशास्त्रीय शोध के अन्य अग्रणी एवं उनके पसन्दीदा सहयोगियों के द्वारा एक 'बौद्धिक हाट हाउस' के रूप में इन सैमीनार्स का आयोजन देश के विभिन्न नगरों में किया जाता था। उनके उदारवादी मत, विदेशी साहित्य का उन्हें ज्ञान व जानकारी एवं खुली (ओपन डोर) नीति ने अनेक युवा बुद्धिजीवियों को उनकी तरफ आकृष्ट किया। वास्तव में उन्होंने युवा समाज वैज्ञानिकों की एक पीढ़ी पर गहन प्रभाव छोड़ा। यादोव अपने सहयोगियों के मध्य अपने निस्वार्थ चेतना केन्द्रित तरीकों एवं प्रतिष्ठित पदों की प्राप्ति के प्रति तटस्थता के लिए जाने जाते थे। एक अधिकृत औपचारिक कट्टर विचार व्यवस्था के परे जाने एवं समझने की उनकी इच्छा ताजगी से परिचित कराती थी। इस यथार्थ से कोई अन्तर नहीं पड़ता था कि वे तृतीय वर्ष के एक विद्यार्थी से अथवा एक स्थापित अध्येता से बातचीत कर रहे है। मुझे याद है कि वे अपने कार्यालय में मेरे साथ व्यक्तित्व सिद्धान्त के कुछ सूक्ष्म पक्षों पर चर्चा कर रहे थे जबकि उनके कार्यालय सहयोगी बड़ी धीरता के साथ अपनी बारी का इन्तजार कर रहे थे ताकि वे जाने माने लोगों को सम्बोधित करें। उस समय यह महत्वपूर्ण था कि जन सामान्य के हित में बौद्धिक योगदान किया जावे जो कई बार मूल्य अभिमुखन एवं सोवियत श्रमिकों तथा अभियन्ताओं के मध्य कार्य के प्रति अभिवृत्ति के साथ जुड़ते थे या उसके इतर चले जाते थे। यह दृष्टिकोण सदैव सैद्धान्तिक भविष्यवाणियों के अनुरूप हो, आवश्यक नहीं था : श्रमिक अनेक बार चमकीले भविष्य के लिए निस्वार्थ रूप में कार्य करने के पार्टी के दवाबों के प्रति कम उत्साह व्यक्त करते थे और भौतिक परिलब्धियों की प्राप्ति के प्रति अधिक रूचि दिखाते थे ये परिलब्धि उनकी रोजगार स्थितियों से जुड़ी थी। साठ के दशक के अन्त तक आनुभाविक समाजशास्त्र का भाव कम्युनिस्ट पार्टी पर अच्छा खासा प्रभाव डालने लगा और उसकी विचारधारा को प्रभावित करने लगा। बाद में जब सोवियत संघ ने चैकस्लोवाकिया पर प्राग आन्दोलन को नियन्त्रित करने हेतु आक्रमण किया जो सोवियत समाजशास्त्र एवं उसकी उदारवादी आकांक्षाए एक कठोर समय का सामना करने लगीं। यादोव ने अपने दल एवं शोध अनुभाग को बचाने हेतु प्रयास किये, जो उस समय रसियन अकादमी ऑफ साइंसेज का हिस्सा थी, पर घटनावश उन्हें बाहर निकाला गया और उनका समूह बिखर गया। यादोव ने सदैव शिष्टता का पालन किया। अनेक दबाबों के बावजूद अपने सहयोगियों का साथ छोड़ने से इन्कार कर दिया और अमानवीय स्थितियों में अपने मानवतावाद के साथ धोखा करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया[1]

सन् 1975 में मैंने रूस से प्रवसन किया तथा अमेरिका में बस गया। सन् 1987 तक मेरे सम्पर्क यादोव से स्थापित नहीं हो सके। मिखाइल गोर्बाचोव के सुधार कार्यक्रमों ने इन सम्पर्कों को पुनः स्थापित करने का

>>

अवसर दिया। रूसी समाज वैज्ञानिकों के लिए वे दिन अत्यन्त व्यग्रता वाले थे वे अपने खोये समय को पुनः सक्रियता के साथ जोड़ने को लेकर असहज हो रहे थे[2]। ग्लासनोस्त एवं प्रैस्तोइका हेतु गोर्बाचोव के कार्यक्रमों ने पूर्व में सक्रिय रहे समाजशास्त्रियों को वापस लाया गया तथा उन्हें स्थापित किये गये नवीन शोध संगठनों का, जैसे इन्स्टीट्यूटस आफ सोश्यालजी एवं नेशनल सेण्टर फार स्टडी ऑफ पब्लिक ओपीनियन, नेतृत्व करने को कहा गया। यादोव, जो कि उस समय तक मास्को वापस आ चुके थे बहुत जल्दी ही एक स्वीकार्य नेता[3] के रूप में उभर कर आये। उनके सहयोगियों ने यादोव को रसियन सोश्यालिजकल एसोशियेसन का अध्यक्ष चुना और उन्हें एकाडमी आफ साइंसेज में स्थित इन्स्टीट्यूट आफ सोश्यालजी का निदेशक नियुक्त किया गया। श्रम का समाजशास्त्र के क्षेत्र में उनके योगदान को मान्यता देते हुए यादोव को अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (आई एस ए) का उपाध्यक्ष चुना गया।

सन् 1988 में सुधार के समर्थक अध्येताओं ने पेशों से जुड़ी आचार संहिता को निर्मित किया जिसमें समाज विज्ञानों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्षों हेतु स्वतन्त्र अन्वेषण एवं निरंकुशता के परे स्वतन्त्र बहस के अधिकारों को स्वीकारा गया। समाजशास्त्रियों से अपील की गयी कि वे अपने विरोधियों के प्रति ''सहिष्णुता एवं आदर'' का भाव बरतें, अपनी ''मान्यताओं के प्रति साहस'' का परिचय दें, ''विचार धारायी आरोपों'' की उपेक्षा करें एवं वैज्ञानिक विवादों को सुलझाने हेतु ''सत्ताधारियों'' के सम्मुख अनुरोध की उपेक्षा करें। इन स्थितियों ने समाजशास्त्रियों को प्रेरित किया कि वे अपने अतीत का पुनरावलोकन करें तथा रूसी बुद्धिजीवियों को अपनी चेतना के आलोचनात्मक मूल्यांकन का समय मिला ताकि विश्लेषण हो सकें।

पैरेस्तोइका की जिस चेतना व भावना का अध्येताओं ने अनुकरण किया उसके कारण कुछ लोगों ने कहना शुरू किया या दावा किया कि वे हमेशा से ही गहरी असहमति रखते रहे हैं, कुछ ने बड़ी जल्दी से सोवियत अतीत की पुनः व्याख्या कर डाली एवं अनेक ने बड़े सन्देहास्पद रूप के साथ कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता से धोखा कर दिया। पर व्लादिमीर यादोव ने ऐसा नहीं किया। हालांकि उदारवादी बुद्धिजीवियों के विरूद्ध सोवियत अभियान में उन्हें अनेक गहन संकटों का सामना करना पड़ा पर उन्होंने इस तेज विरोधी हवा का स्वयं को हिस्सा नहीं बनाया। यादोव ने अपनी पार्टी सदस्यता बनाये रखी एवं अन्त तक यूरो–साम्यवाद के उन आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध रहे जिनको पालमिरो तोगलियाटि ने स्थापित किया साथ ही वे सामाजिक लोकतन्त्र के प्रति प्रतिबद्ध रहे जिसे यादोव ने सबसे ज्यादा मानवीय राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था माना। उनका मत था कि उनके सहयोगी सामाजिक समस्याओं को अपनी समस्या मानकर देखें और निजी उदाहरण द्वारा बतायें कि सामाजिक सुधार के लिए ज्ञान को सक्षम एवं तीक्ष्ण कैसे बनाया जा सकता है। ''हम समाजशास्त्री के रूप में अपने दायित्वों को पूरा नहीं करेंगे यदि हम स्वयं को पुस्तक लेखन तक सीमित कर लेते हैं हमें इस सामाजिक विश्व में परिवर्तन को प्रभावित करने हेतु हमें अपनी पूर्ण दक्षता दिखानी होगी।'' यादोव ने लिखा ''भ्रष्टाचार से लड़ाई, स्वतन्त्र न्यायालयों की स्थापना, प्रगतिशील कर व्यवस्था एवं अन्य अनेक पक्षों हेतु हमें पूर्ण क्षमता के साथ सक्रिय होना होगा यही स्थितियों एवं लोगों की चाहत है एवं माँग है।''

इतिहास के पहिए ने एक बार फिर रूख मोड़ा जब व्लादिमिर पुतिन सत्ता में आये। उन्होंने अपने कार्यक्रमों को बताने में धीमे पन को प्रयुक्त किया पर रूस के राष्ट्रपति के रूप में पहले कार्यकाल में यह स्पष्ट हो गया कि पुतिन को नागरिकीय संगठनों एवं संस्थाओं का सम्मान करना नहीं आता। उत्तर–सोवियत दौर में वे समाजशास्त्री जो अपने को सहज व स्वतन्त्र पा रहे थे, महसूस करने लगे कि सरकार की आलोचना करने पर वे सुरक्षित नहीं है। जो जनसंघर्षों में संलग्न थे एवं अपने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा हेतु सजगता से सक्रिय थे को दमन का सामना करना पड़ा।

सन् 2010 में चरम राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों ने एक प्रतिद्वंदी समाजशास्त्रीय परिषद का गठन किया और यादोव एवं उनके सहयोगियों के संगठन को चुनौती दी। यादोव के सम्मुख गैनाडी आसिपोव का उभार हुआ जो रूसी राष्ट्रवाद के कट्टर समर्थक थे तथा प्रतियोगी पेशेवर संगठन की बौद्धिक शक्ति (मास्टर माइण्ड) थे। यादोव को बाध्य किया गया कि वे न्यायालय में अपने विरोधियों द्वारा लगाये गये इन आरोपों से बचाव करें कि वे फासीवाद के समर्थक हैं। प्रतिक्रियावादी नीतियों के तीव्र उभार, बढ़ती उम्र एवं अस्वस्थता के कारण यादोव हाशिये पर आते चले गये।

सन् 2009 में यादोव की 80वीं वर्षगाँठ के अवसर पर उनके विद्यार्थियों एवं मित्रों ने जो उनके समर्थन में सदैव रहे, उनके सम्मान में एक पुस्तक का प्रकाशन किया और उसमें रूसी समाजशास्त्र में यादोव के प्रभावशाली योगदान की व्यापक चर्चा की गयी। उनके मित्रों का मत था कि रूस के उज्जवल भविष्य के प्रति उन्होंने आशावादिता छोड़ी नहीं थी। वे बहस में भाग लेते थे तथा अनुसंधान में उनकी गहन रूचि थी वे स्वयं तथा युवा सहकर्मियों के साथ अनुसंधान में सक्रिय रहते थे। परन्तु उनके चिन्तन में आक्रोश व झुंझलाहट उभर रही थी क्योंकि नागरिकीय अधिकारों का हनन हो रहा था और रूसी समाजशास्त्र में विषैले किस्म के राष्ट्रवाद का उभार तनावों को जनम दे रहा था।

यादोव के साथ मेरा सम्पर्क सन् 2006 में घनिष्ठ हुआ जब मैं एवं मेरे सहयोगी बारिस दोक्तोरोब ने मिल पर ''अन्तर्राष्ट्रीय जीवन गाथा प्रवर्तन (पहल)'' परियोजना पर कार्य प्रारम्भ किया। यह एक आन लाइन अध्ययन था जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त, सहानुभूति रखने वाले अध्येताओं की सहायता से, समाजशास्त्र के पुनरोत्थान के प्रलेखों को एकत्रित कर विवेचना करना था। इस अध्ययन में रूसी समाजशास्त्रियों से हमने साक्षात्कार लिये जिन्हें आन लाइन सम्पन्न किया गया तथा सामाजिक अनुसंधान में जीवन गाथा पद्धति[6] को आगे बढ़ाया गया। यादोव ने इस परियोजना में सक्रिय योगदान किया। उन्होंने अपनी स्मृतियों को लिपिबद्ध किया, साक्षात्कार के लिए आगे आये, दुर्लभ प्रलेख उपलब्ध कराये जो कि सोवियत समाजशास्त्र के प्रारम्भिक वर्षों से सम्बद्ध थे। खुश्चेव की शासन की समाप्ति अथवा उसके कमजोर होने एवं प्रोस्तोइका से हुए रूपान्तरण से ये प्रलेख सम्बद्ध थे।

व्लादिमीर यादोव का निधन 2 जुलाई 2015 को हुआ। उनकी मृत्यु के कुछ वर्षों पूर्व मेरे एवं उनके मध्य रूसी समाजशास्त्र के भविष्य एवं देश में व्याप्त परिस्थितियों को लेकर आनलाइन पर एक गहन चर्चा प्रारम्भ हुई। हम लोगों के मध्य सहमति थी कि एक दूसरे को चुनौती दें तथा उन अध्येताओं पर भी बात करें जिन्होंने सोवियत सत्ता के दौरान अपने अस्तित्व को बनाये रखने हेतु बाध्य होकर समझौते किये। वे समझौते क्या थे, उन बुद्धिजीवियों के सम्मुख उत्पन्न नैतिक द्वंद की चर्चा करें जिन्होंने प्रवास चुना। देश में जो दमन प्रणाली चली उसकी बुद्धिजीवियों को क्या नैतिक कीमत चुकानी पड़ी, गोर्बाचोव द्वारा हुई क्रान्ति से सोवियत समाजशास्त्र में क्या रूपान्तरण हुआ, पुतीन के शासन में बोलने की स्वतन्त्रता का दमन, राजनीतिक सुधारों के भविष्य के प्रति अनिश्चितता एवं एक ऐसे देश में जहां विरोधी अनुसंधान करने पर एवं विमतिमूलक विचार रखने पर बुद्धिजीवियों की जीवनचर्या, स्वतन्त्रता यहाँ तक कि जीवन खतरे में हो, जन समाजशास्त्र का भविष्य क्या होगा, वे विषय थे जिन पर गहन पारस्परिक चर्चा हुई।

एक मार्मिक स्पष्टता के साथ वोलोदिया ने अपने एक सम्बन्धी की घबराहट को विचार विनिमय के दौरान बताया जिसे 1937 के आतंकी प्रचार के दौरान शुद्धता सिद्ध करने की स्थिति का सामना करना पड़ा। उन्हें अपने यहूदी होने के आधारों को लेकर असहजता का सामना करना पड़ा और एक देश में जहाँ यहूदी विरोध चल रहा हो अपनी नृवंशीय पहचान छिपाने की इच्छा रही हो। उन्होंने स्वीकारा कि अतीत में किये कुछ समझौतों ने उन्हें आज चापलूस बना दिया है। उन्होंने ''कायरता दिखाई जब वे मास्को जाने की यात्रा नहीं कर

>>

सके एवं (यूरी) लावाडा को विचारधारायी बहस में बचा नहीं पाये। कुछ पार्टी सम्मेलनों में जहाँ अपने सहकर्मियों के सांस्कारिक अपमान की गतिविधियाँ की गयीं, वे शान्त रहे।

वोलोदिया उन गुणों की चर्चा करते हैं जिन्होंने प्रतिबद्ध अध्येताओं के समूह को निर्मित करने में सहायता की। ''मैं स्वभाव से चिड़चिड़ा हूं'' साथ ही ''बर्हिमुखी एवं भड़कने वाला चरित्र'' हूं। ऐसा व्यक्ति गोपनीय सूचनाओं को बचाने में कठिनाईयों का अनुभव करता है। लेकिन, उनका मत था कि इन गुणों के कारक वे मित्रवत संचार को भी संचालित कर सके और एक ऐसी अनुसंधान टीम को बनाने में उन्हें सहायता मिली जहाँ पुरस्कार पाने वाले मुद्दों पर आंशिक ध्यान गया और जन साधारण के मुद्दों को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया।

अपनी राजनीतिक नस्ल को परिभाषित करने की चुनौती स्वीकारते हुए यादोव ने दृढ़ता से कहा कि सही अर्थों में ''जीसस पहले समाजवादी थे।'' मैं समाजवाद का प्रवर्त्तक था एवं सदैव प्रवर्त्तक रहूंगा ''उन्होंने गर्व पूर्वक कहा।'' मेरा दृढ़ता से मत है कि ''सामाजिक क्रम तभी समतामूलक व न्याय परक हो सकते हैं जब लोकतान्त्रिक तरीके से चुने प्रतिनिधि विभिन्न सामाजिक स्तृतों के मध्य आय के अन्तर को कम करने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य करें।''

वे मित्र जिन्होंने प्रवास चुना था के विषय में यादोव का मत था कि ''मैं उन्हें पूर्णरूपेण समझता हूं।'' पर ठीक उसी समय मुझे लगता है कि ''वे नितान्त भिन्न उद्देश्यों से निर्देशित हो रहे थे।'' बड़े पर सहज तरीके से उन्होंने बताया कि किस प्रकार पैरेस्त्रोइका के उभार के दौरान इन्स्टीट्यूट आफ सोश्यालजी के निदेशक के रूप में उन्होंने विदेशी कार्यक्रमों में अध्ययन हेतु युवा अध्येताओं का चयन किया और व्यग्रता से यह देखने की कोशिश की कि ''कौन वापस आयेगा और कौन नहीं।'' ब्रिटिश काउन्सिल का मानना था कि प्रत्येक को वापस आना चाहिए।''

यादोव ने उन सहकर्मियों की कटु आलोचना की जो अति देशभक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं और जो लम्बे समय तक सोवियत शासन की पुनः स्थापना की चर्चा करते हैं। सोवियत दौर में आसिपोव, डोर्बिनकोव, झुकोव जो 'नामन्कल्यूतरा' से सम्बद्ध थे और आज भी अपने पद को बनाये हुए हैं। इन सबके ऊपर वे जार के समर्थन के संकेतों को महत्व देते हैं। जहाँ तक मैं आसिपोव को जानता हूँ उसका व्यक्तित्व सिद्धान्त विहीन है वह आपके सम्मुख झूठ बोलते हैं, वे अस्वाभाविक योजनाएं प्रस्तुत करते हैं तथा प्रतिद्वन्द्वी के विरूद्ध सदैव साजिश रचते हैं। यादोव ने गुलामी की मानसिकता वाले अध्येताओं पर अपना स्पष्ट मत व्यक्त किया, साथ ही प्रशासकों पर भी मत व्यक्त करते हैं उन के अनुसार ये लोग समूचे परिवर्तन के दौर में अपनी कपटी आदतों के साथ चिपके रहे। यादोव ने अपनी विचार व्यक्त करते हुए ऐसे अनेक उदाहरण बताये जो इन लोगों के द्वारा किये गये शोषण एवं धोखेबाजी को स्थापित करते हैं। उनके अनुसार किसी एक दिन उनके गृह प्रदेश में समाजशास्त्र को प्रयुक्त करने वाले लोग ऐसे लोगों पर उंगली उठायेंगे। साथ ही यादोव ने आज की राजनीतिक सत्ता एवं उसे क्रियान्वित करने वालों के ऊपर अपनी निर्णयात्मक टिप्पणियाँ की।

वर्तमान स्थितियों के परिणामस्वरूप यादोव में उपजा अलगाव उस पत्र से झलकता है जो उन्होंने मुझे 25 जून, 2011 को लिखा : ''पुतीन के प्रति मैं कुछ महसूस नहीं करता अपितु मुझे उनसे घृणा है वह क्रूर एवं बददिमाग हैं जो शक्ति पर अपना स्वामित्व रखता है और जनता के प्रति अपमान का भाव रखते हैं। उन्हें विलासी जीवन एवं धन की बड़ी चाहत है। उदारवादी राजनीतिज्ञों के विषय में वे क्या कहेंगे? के प्रश्न के उत्तर में यादोव ने कहा वे सब शक्ति एवं धन चाहते हैं जबकि उनकी निजी सम्पत्ति उनके द्वारा नियन्त्रित तेल की पाइप लाइन्स के कारण सुरक्षित है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह व्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति से, जो उसके घेरे में है, ब्लैक मेल कर सकता है जिसमें राष्ट्रपति दिमित्रि मेडवेडेव भी हो सकते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि घिन आने वाली स्वीकृत सामग्री इस व्यक्ति में तीस साल के अन्दर उड़ेली गयी होगी।''

मेरे विचार विमर्श जब रूस के विषय में यादोव से चल रहे थे और गम्भीर स्थितियाँ सामने आ रही थी, उस समय अपने आखिरी वर्षों में वोलोदिया ने महसूस किया कि वह (यादोव) समूचे जीवन विभिन्न मुद्दों को लेकर लड़ते रहे।[7]

चाहे आप इतिहास में स्थापित होना चुनें या इतिहास में हाशिये पर आना चाहें आपको अपनी इच्छाओं के विरूद्ध संघर्ष में स्वयं को उतारना पड़ता है या फिर स्वैच्छिक तरीके से कुछ करें, आपको नैतिक द्वन्द का सामना करना पड़ता है और उसकी भौतिक कीमत चुकानी पड़ती है।[8] अपने आखिरी दिनों में यादोव स्वयं को भाग्यशाली मानते थे। अपने सहयोगी बारिस दोक्तोरोव को उन्होंने कहा कि उन्होंने ''असामान्य रूप से एक सुखी जीवन'' व्यतीत किया। मुझे विश्वास है कि इस विचार के पीछे कुछ मुख्य कारण हैं कुछ संघर्ष उन्होंने चुने और लड़े और कुछ विवादों की उन्होंने उपेक्षा की। व्लादिमीर यादोव एक भावुक बौद्धिक व्यक्तित्व का उदाहरण है जो कि विश्व में पाये जाते हैं। उन्होंने अपनी भावनात्मकता का बौद्धिकता की विशेषता के साथ प्रबन्धन किया एवं उनकी बौद्धिकता के अवयव भावनात्मकता से समझदारी लेते थे। उन्होंने समझौते भी किये उन पर अटके तथा अपने जीवन में गलतियाँ भी की। उन्होंने अपने सपने देखे कुछ सच हुए और कुछ फिर बिखर गये। इसके बावजूद उन्होंने आशा नहीं छोड़ी। जब प्रतिरोध निरर्थक दिखने लगे तो सिपाही की विशेषताओं के साथ उभरे।

आज हम व्लादिमीर यादोव को विनम्र एवं साहस की विशेषताओं से जुड़े व्यक्ति के रूप में याद करते हैं। हम उस जन बुद्धिजीवी के जीवन को व्यक्त कर रहे हैं जिसने अपनी इच्छा से इतिहास में योगदान किया, अनेक संस्थाओं की कार्यप्रणाली एवं संरचना को बदला व सुधारा और जो अनेक न भूलने वाली यादें छोड़ गये। विश्व एक अच्छा स्थल है क्योंकि यादोव जैसे लोग हमारे बीच में है। ■

दमित्री एन शालिन से पत्र व्यवहार हेतु पता <shalin@unlv.nevada.edu>

[1] See Shalin, D. (1978) "The Development of Soviet Sociology, 1956-1976." *Annual Review of Sociology* 4: 171-91; (1979) "Between the Ethos of Science and the Ethos of Ideology." *Sociological Focus* 12(4): 175-93; (1980) "Marxist Paradigm and Academic Freedom." *Social Research* 47: 361-82; Firsov, B. (2012) *History of Soviet Sociology, 1950s-1980s* (in Russian). St. Petersburg: European University of St. Petersburg.

[2] Shalin, D. (1990) "Sociology for the Glasnost Era: Institutional and Substantive Change in Recent Soviet Sociology." *Social Forces* 68(4): 1-21. Doktorov, B. (2014) Contemporary Russian Sociology. Historical and Biographical Investigations (in Russian). Moscow.

[3] (2009) *Vivat Yadov! On His Eightieth Birthday* (in Russian). Moscow: Institute of Sociology RAN.

[4] Firsov, B. (2010) *Dissent in USSR and Russia, 1945-2008* (in Russian). St. Petersburg: European University of St. Petersburg (2010); Alekseev, A. (2003) *Dramatic Sociology and Sociology of Auto-reflexivity*. Vols. 1-4 (in Russian), St. Petersburg: Norma. See also Shalin, D. (1989) "Settling Old Accounts." Christian Science Monitor, December 29; and (1990) "Ethics of Survival." *Christian Science Monitor*, December 4; (1987) "Reforms in the USSR: Muckraking, Soviet Style." *Chicago Tribune*, February 16.

[5] Yadov, V. (2011) "A Sordid Story" (in Russian). *Trotsky Bulletin*, December 6; Shalin, D. (2011) "Becoming a Public Intellectual: Advocacy, National Sociology, and Paradigm Pluralism," pp. 331-371 *in* D. Shalin, Pragmatism and Democracy: Studies in History, Social Theory and Progressive Politics. New Brunswick: Transaction Publishers.

[6] *International Biography Initiative*. UNLV Center for Democratic Culture, http://cdclv.unlv.edu//programs/bios.html.

[7] (2015) "From Dialogues of Vladimir Yadov and Dmitri Shalin" (in Russian). *Public Opinion Herald*, No. 3-4, pp. 194-219, http://cdclv.unlv.edu//archives/articles/vy_ds_dialogues.pdf.

[8] Shalin, D. (1993) "Emotional Barriers to Democracy Are Daunting," *Los Angeles Times*, October 27; (2007) "Vladimir Putin: Instead of Communism, He Embraces KGB Capitalism." *Las Vegas Review Journal*, October 24.

> चीन के एक जन समाजशास्त्री का उद्भव

फ्रैंकोइस लेचापेल, ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय, कनाडा[1]

| शेन युआन

"समाज का जन्म कहाँ से होता है का सवाल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि आप (पश्चिमी लोग) का जन्म एक ऐसे देश में हुआ है जहाँ समाज साथ है (समाज की मूल अवधारणा) के पक्ष को बिना विमर्श के मान लिया गया है। यह पक्ष हमारे पक्ष से नितान्त भिन्न है। हमें बिल्कुल नवीन आयामों के साथ अपने को शुरू करना है।"

शेन युआन से साक्षात्कार, 2012, सिंधुआ विश्वविद्यालय, बीजिंग

एक कनाडियन समाजशास्त्री के अध्ययन की दृष्टि से अपने कार्यालय की मेज के पीछे बैठे तथा हल्के तरीके से मुस्कराते शेन युआन एक मनोरंजनात्मक स्थिति को व्यक्त कर रहे थे। मैं इसके पूर्व कि अपना पहला प्रश्न उनसे करूँ, चीन के इस अध्येता ने पहला प्रश्न कर लिया "आप चीन के बुद्धिजीवियों पर शोध क्यों कर रहे हैं"? इस प्रश्न के उपरान्त मुझे देखते हुए उन्होंने फिर प्रश्न मूलक हस्तक्षेप किया, "आपको मेरा अध्ययन नहीं करना चाहिए, यदि आप हममें से किसी का अध्ययन करना चाहते हैं तो आपको श्यून लिपिंग का अध्ययन करना चाहिए"[2]। इस वक्तव्य के साथ उन्होंने अपने प्रसिद्ध सहकर्मी के कार्यालय की तरफ इशारा किया। शेन ने अपना मत जारी रखा। "वह हम सबमें सबसे ज्यादा बुद्धिमान हैं। या फिर आप हम सबका अध्ययन एक समूह के रूप में कर सकते हैं। समूह के रूप में हमने मिल जुल कर लगभग 10 वर्ष तक कार्य किया है।" बाद में एक साक्षात्कार में शेन स्वयं को तथा लि क्यूयांग, गुओ युहाअ एवं शून लिपिंग को समूह सदस्य के रूप में रेखांकित करते हैं। ये सभी अध्येता सन् 2000 में झिंगुहा विभाग जो कि समाजशास्त्र का है, के संस्थापक सदस्य रहे हैं।

सन् 1954 में चीन की राजधानी बीजिंग में जन्मे शेन युआन उस पीढ़ी का भाग है जिसे चीन में शिक्षित युवा (झिक्यूंग) की संज्ञा दी जाती है। सांस्कृतिक क्रान्ति (1966–1976) के दौरान माओत्से तुंग ने लगभग 17 मिलियन (1 करोड़ 70 लाख) चीनी युवाओं की औपचारिक विद्यालयी शिक्षा को अचानक बाधिक कर दिया और उन्हें गाँवों में रेडीकल 'पुनर्शिक्षा' हेतु भेज दिया। ताकि ये युवा इस शिक्षा को सीखकर तथा ग्रामीण जनता की क्रान्तिकारी चेतना/ज्ञान को समझ कर उस भावी पीढ़ी, जो कि चीनी क्रान्तिकारियों की होगी, का रूप ले लें। अन्य अनेक विस्थापित युवाओं की भाँति शैन को भी अनेक वर्षों तक यह जीवन व्यतीत करना पड़ा। 1976 में माओ की मृत्यु के उपरान्त तथा बाद के दो वर्षों में चीन की शिक्षा प्रणाली में पुनः बदलाव के परिणामस्वरूप इस पीढ़ी का एक छोटा भाग (2.3%) जिसमें शेन सम्मिलित थे, वह अवसर पा सका जिसके अन्तर्गत शिक्षा को पुनः शुरू करने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश मिला। वह उसमें से एक थे।

शेन ने 1983 में कैपिटल्स पीपल्स यूनिवर्सिटी (रेन्डा) से दर्शन शास्त्र में स्नातक डिग्री प्राप्त कर स्नातक शिक्षा को पूर्ण किया। तत्पश्चात् सन् 1986 में 1979 की सोवियत क्रान्ति के नेतृत्व से सम्बद्ध 'द एक्सप्लोरेशन एण्ड कन्ट्रिब्यूशन ऑफ लेनिन टु डायलेक्टिल एपिस्टमालोजी' विषय पर अपने स्नातकोत्तर कार्यक्रम को पूरा किया। हालांकि शेन ने स्वयं को एक प्रतिबद्ध मार्क्सवादी के रूप में देखा पर सात वर्षों के उपरान्त माओवादी–मार्क्सवादी–सोवियत दर्शन के गहन विसर्जन के उपरान्त अधिकांश विषयों, जिन्हें श्रेष्ठ के रूप में स्थापित किया गया था, के प्रति उनका उत्साह व लगाव कमजोर हुआ है। उनका कहना है "इस बिन्दु पर (सन् 1986 में) मेरी धारणा है कि दर्शन काफी अमूर्त था। उस दौर का दर्शन (मूर्त/सामाजिक) समस्याओं के समाधान में सक्षम नहीं था।" अतः रेन्डा छोड़ने के थोड़े समय बाद शेन ने अपनी रूचि को समाजशास्त्र की तरफ मोड़ा जो सापेक्षिक रूप से अब तक संवेदनशील विषय माना जाता रहा था और 8 वर्ष पूर्व ही अर्थात् सन्

> >

1978 में ही यह पुनः स्थापित हुआ था। निश्चय ही यह एक खतरनाक कोशिश थी लेकिन समाजशास्त्र एक नवीन विषय था। यह ज्ञान के गैर–रेखांकित विश्व को व्यक्त करता था और उस बौद्धिक उभार की सम्भावनाओं को बताता था जो 'माओवाद–मार्क्सवाद–लेनिनवाद' के व्यवस्थित त्रिस्तरीय दृष्टिकोण के परे थी। सबसे अधिक महत्व पूर्ण यह था कि राज्य के नेता एवं शिक्षित युवाओं (झिक्यूंग) से सम्बद्ध बुद्धिजीवी जैसे शेन युआन का मत था कि राष्ट्रीय आधुनिकीकरण के दुरूह लक्ष्य के सम्मुख चुनौतियों एवं उस प्रक्रिया को लागू करने की समझ हेतु समाजशास्त्र एक महत्वपूर्ण साधन है।

अतः चायनीज अकादमी ऑफ सोश्यल साइंसेज (सी ए एस एस) के परिसर के अन्दर समाजशास्त्र के संस्थान में शेन ने सन् 1988 से 1999 के मध्य पूर्णकालिक शोधकर्ता के रूप में कार्य किया। सी. ए. एस. एस. राज्य द्वारा संचालित सर्वाधिक शक्तिशाली थिंक टैंक था जो डैंग झाओपिंग के दौर की प्रारम्भिक अवस्था में तेजी से उभरा। इसने केन्द्रीय समिति एवं स्टेट काउन्सिल्स के लिए बौद्धिक केन्द्र की भूमिका निभायी। सी ए एस एस ने चीन के सर्वाधिक शक्तिशाली अवयव–चायना की कम्युनिस्ट पार्टी (सी सी पी) के लिए समाज वैज्ञानिक आंकड़ों एवं वैचारिक पक्षों को उपलब्ध कराया जिनकी की नीतियों के निर्माण हेतु आवश्यकता होती है (उदाहरण के लिये श्रमिक संगठन, निजी उद्यम, प्रवसन एवं बेकारी) 1990 के दशक में तियामिन चौक घटना, जिसमें अनेक लोग मारे गये, के उपरान्त शेन सी ए एस एस से सम्बद्ध रहे। वास्तव में अधिकांश चीनी बुद्धिजीवी का सम्बन्ध भी सी ए एस एस से रहा पर समाजशास्त्र एवं राज्य के साथ उनके सम्बन्ध बदलने लगे। सुधार के दौर में संचालित अनेक मुख्य समाजशास्त्रीय शोध परियोजनाओं, जो कि इंस्टीट्यूट ऑफ सोश्यालजी से जुड़ी थी, में शेन ने नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह किया। शेन, परन्तु, धीरे धीरे सी ए एस एस के बाहर बौद्धिक क्षेत्र का विस्तार कर रहे थे। 1990 के दशक के प्रारम्भ में शेन की ग्यू यूहा एवं श्यून लिपिंग से मित्रता हुई (जिन्हें बाद में शेन ने अपनी पीढ़ी के सर्वाधिक दश समाजशास्त्री की संज्ञा दी) और उनके साथ श्यून के साम्यवाद से जुड़े चीनी अनुभवों से सम्बद्ध अध्ययन में जुड़े। सन् 1997 में 43 वर्ष की आये में शेन ने 'न्यू इकानमिक सोश्यालजी एण्ड पोस्ट–1978 मार्केट रिफार्म्स विषय पर पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। सन् 1997 में ही उपाधि प्राप्ति के साथ ही मेनलैण्ड, चीन से प्रकाशित प्रमुख शोध पत्रिका 'सोश्यालिजक रिसर्च' के शेन मुख्य सम्पादक (एडीटर–इन–चीफ) नियुक्त हो गये। सम्पादन के अपने कार्यकाल में शेन ने पत्रिका में प्रकाशित होने वाले शोध लेखों की गुणवत्ता में सुधार किया। अपनी सक्रिय भूमिका द्वारा उन्होंने शोध पत्रिका को सीमित स्वायत्तता भी प्रदान की जो कि विषय के शोध आलेखों को सी. सी. पी. के हस्तक्षेप के संदर्भ में मिली। मई सन् 2000 में सी ए एस एस को छोड़ने के उपरान्त शेन युआन एवं अन्य आधा दर्जन समाजशास्त्रियों ने शिंघुआ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की शिंधुआ सम्प्रदाय (स्कूल) का प्रारम्भिक पैराडिम चीन की कम्युनिस्ट सभ्यता के श्यून के समाजशास्त्र पर आधारित था जिसे क्लाउड ड्यूबर ने 'चाइनीज सोश्यालजी'स कापरनिकन रिवाल्यूशन' (चीनी समाजशास्त्र की कापरनिकन क्रान्ति) की संज्ञा दी। 20 वर्ष से कम की अवधि में यह पुनः स्थापित विषय राज्य के लिए सामाजिक नीति एजेन्ट (वाहक) के रूप में स्थापित अथवा रूपान्तरित हो गया। एक पालतू समाजवादी समाजशास्त्र एक ऐसा विषय बन गया जो प्रत्यावर्तनीय एवं ''स्वतन्त्र'' शोध पैराडिम को विकसित करने में सक्षम था। इस पैराडिम का केन्द्र सी सी पी शासन के दौरान जन अनुभव एवं सन् 1949 के उपरान्त स्वयं चीनी शक्ति के विषय थे। शिंघुआ में पहले दो वर्षों में शेन का पूर्व का आर्थिक समाजशास्त्र में राज्य की रूचि का विषय अब श्रम समाजशास्त्र में मार्क्सीय रूचि के विषय में समाहित हो गया था उन्होंने यह अध्ययन किया कि सामाजिक कर्ताओं के पास कृत्यों सम्बन्धी क्या दक्षता है और बाजार की शक्तियों के विस्तार का वे किस प्रकार प्रतिरोध करते हैं। सन् 2002 एवं 2004 के मध्य शेन ने शोध परियोजना पर कार्य किया जिसका विषय 'द कन्सट्रक्शन ऑफ बेगाउ माइग्रेन्ट वकर्स नाइट स्कूल' था। इस परियोजना का उद्देश्य सहायक शोध करना, शिक्षण एवं प्रवासी श्रमिकों को संगठित करने में सहायता करना था। एलेन ट्यूरेन के 'समाजशास्त्रीय हस्तक्षेप' के विचार के आधार पर शेन ने उस क्रियान्वन (प्रैक्सिज) को सैद्धान्तिकी देने का प्रयास किया जो शेन के आलेख में 'मजबूत एवं निर्बल हस्तक्षेप' के रूप में व्यक्त होते हैं। उनका आलेख 'स्ट्रांग एण्ड वीक इन्टरवेन्शनः टू पाथ वेज फॉर सोशियालिजकल इन्टरवेन्शन'[3] इस क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय योगदान है। इस बिन्दु पर शेन निश्चय ही राज्य के मुद्दों को जो कि बाजार के जन्म को लेकर हैं, पीछे छोड़ देते हैं और ''समाज के उत्पादन'' के विषय पर अकादमिक एवं सक्रियता के पक्षों पर स्वयं को विशेषतः स्थापित कर लेते हैं। उनका मत है कि समाज में इतनी शक्ति एवं क्षमता है कि वह राज्य एवं बाजार दोनों से अपना बचाव व संरक्षण कर सके।

शेन के करीयर की प्रारम्भिक अवधि में माइकल बुरावे ने जन समाजशास्त्र (पब्लिक सोश्यालजी) के विचार को जन्म दिया। उनसे जब ये पूछा गया कि बुरावे के जन समाजशास्त्र के विचार को जब पहली बार उन्होंने सुना तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी तो शेन का उत्तर था कि सन् 1998 में उनका जो आलेख प्रकाशित हुआ वह जन समाजशास्त्र के अभिमुखन की विशेषता को व्यक्त करता है तत्पश्चात् जब हमें शिंगुआ में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना का अवसर मिला तो प्रारम्भ से ही हमने (हमारे विभाग) जन समाजशास्त्र की परम्परा को स्वीकारा (हालांकि) उस समय माइकल बुरावे ने इस विचार को जन्म नहीं दिया था। हमने यह पहले से ही सोच रखा था कि ''समाजशास्त्र को हस्तक्षेप करना चाहिए।''

शेन के विचार में वह स्वयं तथा उनके सहयोगी अपने समय के पहले से ही (एवेन्ट ल लेटर) सार्वजनिक समाजशास्त्री हैं। लेकिन चीनी बुद्धिजीवियों के लिए जन समाज शास्त्र ने कहीं ज्यादा भूमिका निभाई जो उनकी समाजशास्त्रीय 'गतिविधियों' से कहीं ज्यादा उन्हें सक्रिय करती है। बुरावे का सिद्धान्त भी शेन को एक बौद्धिक स्व अवधारणा से परिचित कराता है, यह एक पहचान है जो उन्हें सही रूपेण समाजशास्त्रीय 'प्राणी' के रूप में स्थापित करती है।

शेन की नवीन पहचान का प्रभाव उनके बौद्धिक जीवन पर अत्यन्त प्रभावी है। जन समाज शास्त्र के क्षेत्र में उनका प्रवेश एवं इस दिशा में हुआ उनमें बदलाव शेन को उन क्रियाओं को प्रतिबद्धता से करने के लिए आगे लाता है जिसे उनके मत में समाजशास्त्र का उद्देश्य (मिशन) कहा जाता है। समाज के उत्पादन में सहभागिता अथवा हस्तक्षेप इस 'मिशन' को व्यक्त करता है। '' इस सहभागिता या हस्तक्षेप से एक ओर राज्य एवं बाजार के दवाब का प्रतिरोध करने में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर समाज के उद्भव एवं विकास में इस से सहायता मिलती है।'' अकादमिक क्षेत्र में पिछले दस वर्षों में शेन के समस्त प्रकाशन व्यापक रूप में बुरावे एवं ट्यूरेन से अत्यन्त प्रभावित रहे हैं। उनके नवीनतम प्रकाशनों में से एक 'वर्कर–इन्टलैक्चुअल यूनिटी : ट्रान्स–बार्डर सोश्यालिजकर इन्टरवेन्शन इन फाक्सकाम'' उनकी उस उर्जा को व्यक्त करता है जिसे केन्द्र में रख कर यह अध्ययन किया गया है। पर इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि जन क्षेत्र में शेन का सामाजिक प्रयास श्रमिक गैर सरकार संगठनों, विभिन्न मीडिया एवं इन्टरनेट प्लेटफार्म्स, नीति निर्माता एवं श्रमिक संघ नेताओं के साथ सहभागिता व हस्तक्षेप है जो उन्हें जन समाजशास्त्र के केन्द्रीय नेत्व से जोड़ता है। ■

फ्रैंकोइस लेचापेल से पत्र व्यवहार हेतु पता <f.lachapelle@alumni.ubc.ca>

[1] **This essay is drawn from my MA Thesis,** *From Nameless Marxist to Public Sociologist: The Intellectual Trajectory of Shen Yuan in Contemporary China* **(University of British Columbia, 2014).**

[2] **See** *Global Dialogue* **2(4), May 2012, for an interview with Sun Liping.**

[3] **Yuan, S. (2008) "Strong and Weak Intervention: Two Pathways for Sociological Intervention."** *Current Sociology* **56 (3): 399-404.**

> स्थानीय हो जाना, वैश्विक हो जाना

ब्रिजित आलनबाकर, जोहेनेंस केपलर विश्वविद्यालय लिप्त, आस्ट्रिया, अर्थव्यवस्था एवं समाज विषय से सम्बद्ध ISA की शोध समिति के सदस्य (RC 02), निर्धनता, समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति (RC 19), कार्य का समाजशास्त्र (RC 30) तथा समाज में महिला (RC 32) तथा समाजशास्त्र के तीसरे ISA फोरम की आयोजन समिति के उपाध्यक्ष, वियना 2016, **रूडोल्फ रिचतर**, वियना विश्वविद्यालय आस्ट्रिया, परिवार अनुसंधान से सम्बद्ध ISA की शोध समिति (RC 06) के पूर्वाध्यक्ष एवं सदस्य तथा समाजशास्त्र के तीसरे फोरम की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, **इदा सेलजिस्कोग,** वियना विश्वविद्यालय, समाजशास्त्र के तीसरे ISA फोरम की स्थानीय आयोजन समिति।

वियना विश्वविद्यालय का अन्दर का चौक, वियना विश्वविद्यालय द्वारा चित्र

समाजशास्त्र के तीसरे ISA फोरम की स्थानीय आयोजन समिति दुनिया भर से आये समाजशास्त्रियों का वियना में स्वागत करती है।

अगले माह, हमारी स्थानीय आयोजन समिति वियना में तीसरे ISA फोरम के लिए, ISA के वैश्विक समुदाय का स्वागत करेगी। इसके अलावा हम आपको अपनी वेबसाइट का अवलोकन करने के लिए भी आमंत्रित करते हैं, हम कुछ ऐसे प्रयासों पर प्रकाश डालेंगे, जिससे स्थानीय एवं वैश्विक समाजशास्त्री एक मंच/फोरम पर एकत्र हों।

> स्थानीय होना : आस्ट्रिया के प्रतिदिन के जीवन पर अन्तर्दृष्टि तथा समाजशास्त्र का इतिहास

हम वियना विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की तीसरी ISA फोरम की मेजबानी करने में स्वयं को सम्मानित व खुश महसूस कर रहे हैं। यह ऐसा विश्वविद्यालय है जो

> >

बाहर से वियना विश्वविद्यालय,
वियना विश्वविद्यालय द्वारा चित्र

दर्शनशास्त्र एवं समाज विज्ञान की मजबूत परंपराओं के लिए जाना जाता है। दो वर्षों से अधिक से स्थानीय आयोजन समिति आस्ट्रियाई विश्वविद्यालय एवं इंस ब्रक (Insbruck), ग्राज, लिंज, साल्जबर्ग, वियना की समाजशास्त्रीय संस्थाएं एवं हंगरी में हमारे सहकर्मियों के साथ फोरम को सफल बनाने की तैयारी में जुटे हैं।

हम आपको हमारे साथ 'स्थानीय हो जाने', मिलने, बातचीत करने एवं वियना के अंतरराष्ट्रीय माहौल से प्रेरित होने के लिए स्वागत करना चाहते हैं। फोरम के अधिकारिक कार्यक्रमों के अलावा, हम अपने अतिथियों को पर्यटन एवं समाजशास्त्रीय भ्रमण एवं एक साथ एकजुट होकर प्रभावशाली प्रदर्शन के माध्यम से एक–दूसरे को जानने, मेजबान शहर व देश के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हमारे साथ वियना के एक पारंपरिक शराब मधुशाला का भ्रमण करे या हमारी पर्यटन गतिविधियों का हिस्सा बनकर शहर की एक पद–यात्रा में सम्मिलित हों। हमारे समाजशास्त्रीय भ्रमण की झलकियों के बीच दो निर्धारित दौरे/भ्रमण जैसे Granatneusiedl के पास के गांव में मेरीएंथल (Marienthal), संग्राहलय–एक ऐसा स्थल जहाँ 'Die Arbeitslosen Von Marienthal' अथवा 'मेरिएंथल : एक बेरोजगार समुदाय का सामाजिक चरित्र (Marienthal : the Sociography of an unemployed Community) विषय पर एक अग्रणी शोध हुआ जिसमें मैरी जहोदा, पॉल लेजारसफील्ड और हंस जेसेल ने 1930 के दशक से पहले, दर्शाया की किस प्रकार बेरोजगारी सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन को नष्ट कर देती है। उनके निष्कर्ष एवं पद्धति दोनों ने शोध को व्यापक रूप से प्रभावित किया और जो आज भी प्रभावशाली है।[1]

वियना और आस्ट्रिया की समाजशास्त्रीय विरासत को केवल उसके महान ऐतिहासिक तथा सामाजिक संदर्भ में ही समझा जा सकता है। एक तरफ, हमारे पास पिछली शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों का 'रेड वियना' है। परंतु दूसरी तरफ, बाद में, उपरोक्त वर्णित सहित आस्ट्रिया के सैंकड़ों समाजशास्त्री नाजी शासन के दौरान आस्ट्रिया से भागने/पलायन करने के लिए बाध्य थे। ISA फोरम के हमारे ब्लॉग पर फासीवाद के इतिहास और आस्ट्रिया के समाजशास्त्र एवं समाज पर इसके प्रभाव को प्रदर्शित करने वाली कई पोस्ट देखी जा सकती हैं।

> वैश्विक होना : एक बेहतर दुनिया के लिए संघर्ष

'वैश्विक समाजशास्त्र एवं एक बेहतर विश्व के लिए संघर्ष' विषय पर वियना, आस्ट्रिया एवं यूरोप में समाजशास्त्रियों के रूप में ISA की फोरम का आयोजन करना और इसके एजेंडे के रूप में वैश्विक समाजशास्त्र की स्थापना करना हमें स्थानीय परिप्रेक्ष्य से वैश्विक व स्थानीय पक्षों पर विचार करने के लिए उकसाता/प्रेरित करता है। एक नितांत अंतरराष्ट्रीय शहर, वियना यूरोप के केन्द्र में स्थित है : शहर की संस्कृति, भोजन और भाषा पर पड़ोसी देशों के मजबूत प्रभावों को देखा जा सकता है। यह शहर यूरोपीय संघ की सभा व विनीज संयुक्त राष्ट्र संघ सिटी सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को एक अंतरराष्ट्रीय वार्तालाप के लिए फोरम उपलब्ध करवाता है। यद्यपि, योकोहामा में 2014 में हुई ISA की विश्व कांग्रेस को विषय 'एक असमान विश्व का सामना करना', ने अभी भी अपना महत्व नहीं खोया है : जैसे हम वियना में दुनिया भर के समाजशास्त्रियों को एक साथ आने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमें आस्ट्रिया एवं यूरोप के सामने समानता, स्वतंत्रता, न्याय,

> >

लोकतंत्र एवं मानवाधिकारों की जिम्मेदारी को संभालने में वर्तमान चुनौतियों को स्वीकारना चाहिए। सीरिया में युद्ध, दुनिया के कई बड़े हिस्सों में प्राकृतिक आपदाएं एवं निर्धनता और इस तरह की घटनाओं के पीछे औपनिवेशिक एवं उत्तर–औपनिवेशिक पूंजीवादी इतिहास–लोगों को पुनः पलायन व विस्थापन के लिए बाध्य कर रहे हैं।

एक बेहतर विश्व के लिए अनेक यूरोपियों ने तीव्र विरोध के माध्यम से संघर्ष किया एवं हिंसा व असमानताओं के विरूद्ध पहल का समर्थन किया है। परंतु, दूसरे रास्ते के रूप में, आस्ट्रिया और यूरोप को एक बंद समाज के रूप में परिभाषित करने के लिए बहिष्कार की राजनीति द्वारा सीमाओं व असमानताओं को लागू करने की मांग की। वियना में फोरम एक ऐतिहासिक समय पर होगी, जब शरणस्थल (आश्रय स्थल), दबावमूलक प्रवसन एवं एकीकरण की राजनीति यूरोप के समाजों को चुनौती दे रही है तथा 'गैर–यूरोपियों'–हाल के इतिहास का डरावना पक्ष के लिए यूरोप को बंद करने के अपने प्रयासों को तीव्र करने के लिए दक्षिणपंथी आंदोलनों में एक बार पुनः वृद्धि हो रही है।

आस्ट्रिया का समाजशास्त्र इन सभी मुद्दों का सामना कर रहा है तथा आस्ट्रिया के समाजशास्त्री वैश्विक स्तर पर दृढ़ता से जुड़े हैं। इन चुनौतियों एवं सम्बन्धों पर हमारे सत्रों में चिंतन किया जायेगा, विश्वभर से आये वक्ता 'यूरोप में और उसके परे अनेक संकटों का सामना करना', 'केंद्रों व परिधियों के बीच सीमाओं एवं ध्रुवीकरण पर नियंत्रण पाना' तथा 'समाजशास्त्रीय चिंतन एवं एक बेहतर विश्व के लिए संघर्ष' जैसे विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

अंत में, जो कि कम महत्वपूर्ण नहीं है, ISA एवं स्थानीय आयोजन समिति ने स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों को प्रदर्शनी हॉल में अपनी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाने हेतु आमंत्रित किया है तथा प्रकाशकों की एक बैठक आयोजित की है, जहाँ विशेष रूप से समाजशास्त्रीय एवं जनहित की पुस्तकों के लेखक अपने काम पर चर्चा करेंगे। प्रदर्शनी हॉल में आस्ट्रिया के समाजशास्त्रीय संस्थान, शोध, संस्था एवं फैलोशिप प्रोग्राम के बारे में भी जानकारी प्रदर्शित की जायेगी।

> ISA फोरम पर एक साथ आइये

पिछले दशक से, ISA की चर्चाओं में वैश्विक व स्थानीय अंतः सम्बंधों के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता पर बल दिया गया है। और, वास्तव में, अनेक समकालीन स्थायी संघर्षों के विषय वैश्विक प्रवृत्ति के थे जैसे–श्रम एवं प्रकृति का बाजारीकरण, कार्य एवं राजनीति का अंतरराष्ट्रीयकरण, राज्य में तानाशाही और लोकतंत्र में दूरगामी परिवर्तन इत्यादि। जब हम जुलाई में वियना में मिलेंगे, ये सभी मुद्दे/विषय एजेंडे में शामिल होंगे। और–दुनिया भर के समाजशास्त्रियों द्वारा निर्धारित निम्न उदाहरण–उनकी वैश्विक एवं स्थानीय चर्चाओं का हिस्सा बनेंगे। फोरम, एक साथ आने के लिए तथा इस वैश्विक वार्ता को जारी रखने के लिए आगामी अवसर प्रदान करता है। इसलिए, हम दुनिया भर से समाजशास्त्र के तीसरे ISA फोरम में वियना, आस्ट्रिया, यूरोप आने के लिए आपका स्वागत करते हैं। ■

ब्रिजित आलनबाकर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Brigitte.Aulenbacher@jku.at>
रूडोल्फ रिचतर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<rudolf.richter@univie.ac.at>

[1] **See Richter, R. "The Austrian Legacy of Public Sociology."** *Global Dialogue* **5(4), December 2015,** http://isa-global-dialogue.net/the-austrian-legacy-of-public-sociology/

> आस्ट्रिया में असमानता, निर्धनता और समृद्धि

कोरनेलिया दलाबजा, वियना विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया, **जूलिया हॉफमैन,** जोहेनेस केपलर विश्वविद्यालय लिंज, आस्ट्रिया एवं **अल्बन नेच्त,** जोहेनेंस केपलर विश्वविद्यालय लिंज।

आस्ट्रिया लंबे समय से अपने उच्च जीवन स्तर के लिए जाना जाता है। इसकी प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद 51,300 अमरीकी डॉलर है। 2014 की विश्वव्यापी रैंकिंग में आस्ट्रिया का स्थान 13वाँ है (विश्व बैंक 2015), जबकि आस्ट्रिया की राजधानी वियना 2015 व 2016 में जीवन की गुणवत्ता की वैश्विक रैंकिंग में सबसे ऊपर है। नगर निगम आवास की एक लंबी परंपरा के साथ, वियना ने अब तक एक कुछ सामाजिक स्थिरता प्राप्त कर ली है। हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि वियना या आस्ट्रिया में सभी अमीर हैं या समृद्ध हैं।

विशिष्ट सामाजिक समूहों को करीब से देखने पर खण्डित और तेजी से ध्रुवीकृत सामाजिक संरचना का पता चलता है : जहाँ आस्ट्रिया के लगभग 12 प्रतिशत नागरिक निर्धनता के शिकार हैं और लगभग 33 प्रतिशत गैर–राष्ट्रीय प्रवासी इस निर्धनता रूपी खतरे का सामना कर रहे हैं। जबकि आय असमानता कुछ OECD देशों की तुलना में कम स्पष्ट है। 1990 के दशक के बाद से आस्ट्रियाई समाज का सबसे निर्धन तबका अपनी जमीन खो चुका है : 1990 एवं 2011 के मध्य में निर्धनतम आबादी की आय में हिस्सेदारी 47 प्रतिशत से घटकर 20 प्रतिशत रह गयी है, जबकि शीर्ष पर स्थित 1 प्रतिशत जनसंख्या की आय की हिस्सेदारी में 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सामान्यतः धन एवं सम्पत्ति के वितरण में आस्ट्रिया में उच्च स्तर की असमानता पायी जाती है जो कि सकल वित्तीय परिसंपत्तियों के साथ एक गिनी गुणांक पर 0.75 है।

इतने अमीर देश में इस तरह का कठोर विभाजन क्या दर्शाता है? आस्ट्रिया की शिक्षा प्रणाली सामाजिक प्रस्थिति का असामान्य अन्तः पीढ़ी स्थानान्तरण करने में योगदान करती है : विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट (स्नातक) हुए अभिभावकों के बच्चों में विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने की संभावना उन माता–पिता के बच्चों से 2.5 गुना ज्यादा होती है जो माता–पिता कभी विश्वविद्यालय नहीं गए। फिर भी, अनेक समाजों में, शिक्षा का स्तर आय को निर्धारित करता है : शिक्षा में प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष में आय में लगभग 5.4 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है। शिक्षा प्रणाली में प्रवासी विशेष रूप से वंचित हुए है (आंशिक रूप से, चूंकि, विदेशी योग्यताओं को शायद मान्यता नहीं प्राप्त हो)।

लैंगिक (जेण्डर) भेद भी स्पष्ट है। युवा आस्ट्रियाई महिलाएं पुरूषों की तुलना में अब ज्यादा शिक्षित है, परंतु अब भी महिलाएं अपने पुरूष सहकर्मियों की तुलना में 28.4 प्रतिशत प्रति घण्टा कम कमाती हैं। एकल महिला परिवारों का एकल पुरूष परिवारों की तुलना में निजी संपत्ति पर 40 प्रतिशत से कम पर अधिकार है। यह लैंगिक असमानता आस्ट्रियाई कल्याण मॉडल से सम्बद्ध है, जिसका वर्णन 'रूढ़िवादी' मॉडल के रूप में किया जा सकता है, जिसमें नकद हस्तांतरण पर निर्भरता के माध्यम से परंपरागत लैंगिक श्रम विभाजन को बढ़ावा दिया जा रहा है। बच्चों के देखभाल केन्द्रों एवं पारम्परिक परिवार प्रतिमानों की कमी ने महिलाओं पर काम एवं पारिवारिक जीवन के बीच सामंजस्य स्थापित करने का अत्यधिक बोझ डाल दिया है।

> **"आस्ट्रिया में सब बुरा आता है लेकिन बाकी दुनिया में आने के कुछ वर्षों बाद"**

आस्ट्रिया की श्रम बाजार नीति ने लचीलेपन एवं काम करने की शैली को तेजी से प्रोत्साहित किया है; जिससे उपस्थित सामाजिक असमानताओं को मजबूती मिली है : प्रवासियों एवं महिलाओं की कम वेतन वाले एवं अनिश्चित प्रकार की नौकरियों में होने की अधिक संभावना है। निम्न परंतु बढ़ती बेरोजगारी की दर ने कम–कुशल लोगों एवं प्रवासियों को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

अतः निकट से देखने पर यह पता चलता है कि स्पष्ट अस्थिरता के बावजूद, आस्ट्रियाई सामाजिक संरचना जेण्डर एवं नृवंशीयता के आधार पर तेजी से ध्रुवीकृत एवं विभाजित हो रही है, जिसके कारण धीरे–धीरे बढ़ती सामाजिक असमानता की प्रवृत्ति उत्पन्न हो रही है। एक लोकप्रिय कहावत है, 'प्रत्येक बुरी चीज सबसे पहले आस्ट्रिया में आती है उसके बाद शेष विश्व में फैलती हैं। ■

कोरनेलिया दलाबजा से पत्र व्यवहार हेतु पता <cornelia.dlabaja@univie.ac.at>
जूलिया हॉफमैन से पत्र व्यवहार हेतु पता <julia.hofmann@jku.at>
अल्बन नेच्त से पत्र व्यवहार हेतु पता <alban.knecht@jku.at>

> सामाजिक असमानताएं, शरणार्थी एवं 'यूरोपियन स्वप्न'

रूथ अबरामोस्की, बेंजामिन ग्राराल, एलन शिनिक एवं **डेसराई विके** पेरिस लाडरन साल्जबर्ग विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया।

मानवीय सहानूभूति की झूठी बयानबाजी के पीछे प्रतिबंधों, बाढ़ और शरणार्थी शिविरों का घिनौना यथार्थ। अरबु द्वारा चित्रण

शरणार्थियों का निरंतर आगमन/प्रवाह यूरोप की एक वास्तविक प्रघटना है, कभी–कभी जर्मन भाषी मिडिया इन्हें नये 'मॉस प्रवसन' (समूह प्रवसन) की संज्ञा देता है। पूर्णतः राजनीतिक शहरण के लिए जर्मनी सबसे अधिक आवेदन प्राप्त करता है परंतु अपनी जनसंख्या के आधार पर जर्मनी का यूरोप (यूरोस्टेट) में 5वाँ स्थान है। प्रति व्यक्ति सबसे ज्यादा आवेदन हंगरी प्राप्त करता है, दूसरा स्थान स्वीडन, तीसरा स्थान आस्ट्रिया और चौथा फिनलैंड का है।

> >

आस्ट्रिया स्वयं को, पूरी तरह से, इस प्रवाह के मध्य में फंसा हुआ पाता है। जर्मन–आस्ट्रिया का सीमा क्षेत्र, विशेष रूप से साल्जबर्ग और फ्रीलासिंग के बीच का मार्ग, मध्य यूरोप में आने वाले शरणार्थियों के लिए एक अड़चन बन गया है जोकि आस्ट्रियाई समाज में वास्तविक तनाव उत्पन्न करता है। एक तरफ, यूरोपीय प्रवासी संकट के विषय में शिकायतों तथा सीमा पर कड़े नियंत्रण की माँगों के बावजूद, कई लोग अभी भी अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता को यूरोपीय स्वप्न के एक अंश के रूप में संरक्षित रखने की उम्मीद करते हैं। दूसरी तरफ, शरणार्थियों के बारे में भय एवं शिकायतें पूर्वाग्रहों से उत्पन्न होते हैं, तथा यह धारणा कि शरणार्थी एवं प्रवासी यूरोप के आकर्षण में खिंचे चले आते हैं न कि युद्ध या निराशा से तंग आकर धकले जाते हैं।

UNHCR के अनुसार 2015 में दुनिया भर से 60 लाख लोगों ने अपने घरों को छोड़ दिया। अधिकांश शरणार्थी प्रोक्सी युद्धों, निर्धनता एवं भुखमरी के कारण अपने घर छोड़ने के लिए प्रेरित/बाध्य हुए थे। परिणामस्वरूप उत्तर–औपनिवेशिक राजनीति ने आर्थिक व सामाजिक असमानता को बढ़ावा दिया। लेकिन 3 प्रतिशत से भी कम लोग यूरोप की ओर पलायन करें, अधिकांश पड़ोसी देशों में रहते हैं।

2015 में 'केवल' 50,000 निवासियों ने आस्ट्रिया में शरण लेने के लिए आवेदन किया (UNHCR-आस्ट्रिया, सितम्बर 2015 में बर्हिवेशन)–जोकि एक लाख (1,00000) निवासियों पर 332 की दर से हुआ। इनमें से 11,000 को शरणार्थी के रूप में स्वीकृति मिली, जिन्हें सामग्री एवं बुनियादी सेवाएं (827 यूरो प्रतिमाह की दर से) उपलब्ध हो रही हैं। तब तक वे अपने आवेदनों पर निर्णय होने का इंतजार करते है–जो कि औसतन 3 से 6 माह होता है–वे क्वार्टर या शिविरों में रहते हैं, दिन में तीन बार भोजन प्राप्त करते हैं (यद्यपि इसमें एक भी गर्म भोजन शामिल नहीं होता है) तथा शयनगृह में एक बिस्तर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त वे प्रतिदिन 1.30 यूरो भत्ता प्राप्त करते हैं। जब वे स्वयं अपनी देखभाल करते हैं तो किराये के लिए प्रति माह 120 यूरो प्राप्त करते हैं (परिवारों के लिए इसकी सीमा 240 यूरो तक जाती है) तथा 200 यूरो निर्वाह भत्ता (90 यूरो प्रति बच्चों की दर से) प्राप्त करते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, निर्णय (अनुच्छेद 15aB.VG, BKA आस्ट्रिया) के इंतजार के दौरान उन्हें कार्य के लिए भत्ता नहीं दिया जाता।

हमने शरण चाहने वालों के शरणार्थी केन्द्रों एवं स्वागत कक्षों में लगभग 30 शरणार्थियों से बातचीत की। अधिकांश लोगों ने अपने भविष्य के बारे में दूसरे सपदे देख रखे थे वे हमारे समाज का हिस्सा बनने, नौकरी प्राप्त करने, अपने परिवारों के लिए कठिन श्रम करने किसी दिन एक फ्लेट या मकान खरीदने का सपना देखते हैं–सरल रूप में, वे अस्तित्व के डर के बिना एक जीवन जीने का सपना देखते हैं।

यूरोप के लगभग सभी सम्पन्न देशों में वृद्ध जनसंख्या अधिक होने तथा निम्न प्रजनन दर होने के कारण शरणार्थियों को वृद्ध समाजों में एक नयी आशा के रूप में देखा जाता है। युवा एवं अधिकांश यूरोपीय जनसंख्या की तुलना में उच्च प्रजनन दर व उच्च कौशल प्राप्त शिल्पकार या श्रमिक (संयुक्त राष्ट्र विश्व जनसंख्या संभावनाएं : 2015 पुनः अवलोकन)। लम्बी समयावधि में, वे हमारी राष्ट्रीय पेंशन एवं सामाजिक व्यवस्थाओं को बनाये रख सकेंगे, जबकि लघु समयावधि में, वे यूरोप की घरेलू अर्थव्यवस्था को अच्छे ढंग से मजबूती दे सकते हैं–विशेष रूप से यदि उन्हें काम करने, पैसा कमाने एवं कर चुकाने के अवसर प्राप्त हों।

इसलिए एक अत्यधिक व्यवहारिक दृष्टिकोण से हम पूछ सकते हैं: यहाँ उनके एकीकरण के लिए समझौता करने के बजाय इस बात पर विवाद क्यों है कि शरणार्थियों को निर्वासित कर देना चाहिए? ■

रूथ अबरामोस्की से पत्र व्यवहार हेतु पता <ruth.abramowski@sbg.ac.at>,
बेंजामिन सोशल से पत्र व्यवहार हेतु पता <benjamin.groeschl@sbg.ac.at>
एलन शिन्क से पत्र व्यवहार हेतु पता <alan.schink@sbg.ac.at>
डिजारी विल्के से पत्र व्यवहार हेतु पता <desiree.wilke@sbg.ac.at>

> लैंगिक समानता और आस्ट्रियाई विश्वविद्यालय

क्रिस्टीना बिनर, जोहेनेंस केपलर विश्वविद्यालय लिंज, आस्ट्रिया एवं गरीबी समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति से सम्बद्ध ISA की शोध समिति के सदस्य (RC 32) तथा **सुसान किंक,** कार्ल फ्रेजेस–ग्राज विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया।

आस्ट्रिया के विश्वविद्यालयों में महिलाओं एवं पुरूषों का असमान प्रतिनिधित्व एक लंबे समय से विद्यमान है : जबकि, सामान्यतः, छात्र समुदाय में महिला व पुरूषों का अनुपात कुछ–कुछ संतुलित है (57 प्रतिशत महिलाओं पर 43 प्रतिशत पुरूष हैं), परंतु ऐसा वैज्ञानिकों के मामले में नहीं है। सन् 2013 में प्रोफेसरों में केवल 22 प्रतिशत महिला प्रोफेसर थीं। क्या आस्ट्रियाई विश्वविद्यालय व्यवस्था के हाल के सुधार इस लैंगिक (जेण्डर) असमानता को परिवर्तित करने के अवसर उपलब्ध कराता हैं?

> आस्ट्रिया में उद्यमशीलता एवं प्रबंधकीय विश्वविद्यालय

2002 में जब से विश्वविद्यालय अधिनियम लागू हुआ था, तब से विश्वविद्यालय एवं सरकार के मध्य सम्बंधों को पुनर्गठित करने के लिए नये सार्वजनिक प्रबंधन उपकरणों को उपलब्ध कराया गया। अब विश्वविद्यालयों को उद्यमी एवं प्रबंधकीय तरीके से एक कंपनी की भाँति काम करने के लिए कहा जा रहा है। जहां सरकार विस्तृत संचालन से सम्बद्ध अपनी पूर्व भूमिका से पीछे हट रही हैं, विश्वविद्यालयों को वित्तीय एवं प्रतीकात्मक संसाधनों के लिए एक–दूसरे के विरूद्ध प्रतिस्पर्धा करनी होगी। कुलपतियों को कठोर निर्णय लेने की योग्यताएं दी गई हैं जबकि बाहरी हिस्सेदारों जैसे–विशेषज्ञ समितियों एवं विश्वविद्यालय परिषदों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। इन परिवर्तनों का उद्देश्य विश्वविद्यालयों में मजबूत नेतृत्व एवं विशेषीकृत छवि को निर्मित करना है–परंतु क्या सुधार लैंगिक (जेण्डर) न्याय एवं परिवार के अनुकूल राजनीति को मजबूती प्रदान करने के प्रयास करते हैं?

> **"हाल ही में हुए बदलाव सामाजिक समानता के अधिक मौकों की पेशकश कर सकते हैं"**

> लैंगिक (जेण्डर) न्यासंगत?

'स्वायत्तशासी संगठनों' के रूप में आस्ट्रिया के विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अधिनियम, 2002 के अंतर्गत, जेंडर मुख्य धारा के उपायों को शुरू करने साथ ही समन्वयन केन्द्रों का निर्माण करने, समान अवसरों को सुनिश्चित करने, समान अवसरों एवं मध्यस्थता बोर्डों के लिए कार्यशील समूहों की स्थापना एवं सभी कॉलेज संस्थानों में महिलाओं के लिए 40 प्रतिशत कोटा रखने की व्यवस्था करने हेतु बाध्य थे।

यह स्पष्ट नहीं है कि लैंगिक (जेण्डर) समानता उपायों को विश्वविद्यालयों के नये बजट मॉडल्स के अंतर्गत समर्थन दिया जायेगा : यद्यपि प्रत्येक विश्वविद्यालय जेण्डर समानता की नई आवश्यकताओं को साकार करने के लिए जिम्मेदार हैं परंतु जेण्डर समानता के कार्य के लिए वित्तीय संसाधनों एवं नेतृत्व के समर्थन में भिन्नता हो सकती है। हालांकि, कुल मिलाकर, विश्वविद्यालयों के पुनर्गठन तथा जेण्डर मुख्यधारा के नये उपकरण जेण्डर समानता के अवसरों में सुधार लाने में सक्षम प्रतीत होते हैं, विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्र में।

> परिवार के अनुकूल?

परिवार की माँगों को महिला वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण बाधा के रूप में स्वीकार गया है इसलिए आस्ट्रियाई विश्वविद्यालयों ने सरकार द्वारा समर्थित रणनीतिक प्रबंधन उपकरणों जैसे 'विश्वविद्यालय एवं परिवार' लेखा परिक्षण को लागू किया है। बच्चों की देखभाल हेतु अच्छी सुविधाओं का प्रस्ताव देकर अध्ययन और काम करने के लिए आकर्षक स्थान के रूप में स्वयं को अन्य विश्वविद्यालयों से भिन्न बनाने का तरीका अपना रहे हैं। साथ ही, पितृत्व की रूढ़िवादी छवियाँ जारी रहती हैं, विश्वविद्यालय के प्रशासक बच्चों की देखभाल पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित करते हैं, महिलाओं को अभिभावकों के रूप में सम्बोधित कर रहे हैं एवं विषमलिंगीय परिवारों की छवियो को मुख्य रूप से सम्बोधित कर रहे हैं।

आस्ट्रियाई विश्वविद्यालयों में हाल में हुए बदलाव मितव्ययता की प्रवृत्तियों, जेण्डर समानत तथा परिवार के अनुकूल नीतियों के मध्य एक जटिल अंतः क्रिया को दर्शाते है, जोकि सामाजिक समानता के अधिक अवसरों की संभावना को उत्पन्न कर सकती है। हालांकि, महत्वपूर्ण रूप से, इन आयों का संगठनात्मक स्तर पर कुछ प्रभाव हो सकता है क्योंकि वैज्ञानिक संस्कृतियों एवं प्रतिमानों को जेण्डर मान्यताओं में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, यह मान्यता कि वैज्ञानिक सबसे अधिक अपने काम को प्राथमिकता देते हैं, यह विचार कि वैज्ञानिकों को सदैव उपस्थित, लचीला एवं अकादमिक कार्य पर स्वयं को केन्द्रित करना चाहिए, काम करने के समय के बारे में पुरूष नियमों को दर्शाता है; भावी देखभाल करने वालों के रूप में, महिलाओं को अक्सर अपने पुरूष सहकर्मियों की तुलना में इस मानदण्ड को पूरा करने में अधिक कठिनाई होती है। ■

क्रिस्टीना बिनर से पत्र व्यवहार हेतु पता <Kristina.Binner@jku.at>
सुसान किंक से पत्र व्यवहार हेतु पता <susanne.kink@uni-graz.at>

> कार्य का समय और बेहतर जीवन के लिए संघर्ष

केरीना अलट्राइटर, फ्रांज एस्टलेथनर और **थेरेसा फिबिजच,** वियना विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया

कार्य के समय पर संघर्ष ऐतिहासिक रूप से श्रमिकों के संघर्ष से, जो श्रमिक शक्ति के शोषण को सीमित करने के लिये था, से संबद्ध है। आठ घंटे का दिन, श्रमिक आन्दोलन की उद्घोषित माँग थी और 1980 तक अधिकतर पश्चिम औद्योगिक देशों ने कार्य दिन एवं कार्य सप्ताह की अवधि को धीरे धीरे करके कम कर दी।

तब से, फ्रांस के अलावा, कोई भी महत्वपूर्ण प्रगति अवलोकित नहीं हुयी, हालाँकि, उत्पादकता में काफी वृद्धि हुई है। परंतु हाल के वैश्विक आर्थिक संकट ने दुबारा से कार्य के असमान वितरण पर बहस को एजेण्डा पर ला दिया है। यूरोस्टेट आंकड़ों का प्रयोग करते हुये, हम यूरोपियन संघ में समसामयिक कार्य समय विकास पर और सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने में उनके औचित्य पर चर्चा करेंगे।

> कार्य समय एवं असमानता

एक तरफ, इ. यू. में लोग लंबे घंटे कार्य करते हैं, 2010 में 32%, एक महीने में एक से ज्यादा बार 10 घंटे प्रति दिवस कार्य करते हैं। दूसरे लोग अंशकालिक कार्य करते हैं (2014 में 20%) या उनके पास कोई कार्य ही नहीं है (अगस्त 2015 में 9.5% बेरोजगार)। एक तरफ कार्य की प्रबलता, लंबे कार्य के घंटों के कारण शारीरिक एवं मानसिक क्षति एवं बीमारी, और दूसरी तरफ कुंठा और अवमूल्यन, सिर्फ कार्य समय के ध्रुवीयकरण के कुछ परिणाम है, जो हमारे समाज की नींव के लिये घातक है।

दूसरी ओर, पुरूष एवं स्त्री, कार्य समय के असमान वितरण को निरंतर अनुभव कर रहे हैं। प्रथमतः, पूर्ण कालिक कार्य एवं लंबे समय तक कार्य अभी भी, ''पुरूष की बात'' है, जबकि ज्यादा से ज्यादा महिलायें अंशकालिक कार्य करती है। हालांकि पुरूष की अंशकालिक दरें ज्यादातर EU-28 देशों में 2014 में 8.8% बढ़ गयी है। औसतन महिला अंशकालिक रोजगार की दर अभी भी तीन गुना ज्यादा है (32.5%)। द्वितीय, महिला लगभग दो घंटे प्रतिदिन पुरूष से ज्यादा अवैतनिक कार्यों पर खर्च करती है (उदाहरण गृहकार्य एवं बालक रख रखाव)। इस प्रकार की गतिशीलता महिलाओं के लिए कई हानियों में और बढ़ोतरी कर देते है, कैरियर की संभावनाओं में और पेंशन के अधिकार में कमी, जिसका परिणाम वृद्धावस्था में गरीबी से उच्च जोखिम के रूप में होता है।

> क्या कार्य समय कम करने से सामाजिक असमानता कम हो जाती है?

कार्य दिवस की मानक लंबाई में बदलाव, कई कार्यकर्त्ताओं की जरूरतों को पूरा करेंगे। अनुसंधान बताता है कि यूरोप में 30% से अधिक कर्मचारी कम कार्य करना पसंद करेंगे, जबकि कई अंशकालिक श्रमिक (2014 में 10 मिलियन श्रमिक) ज्यादा घंटे कार्य करना चाहते हैं। मानक कार्य घंटों को सभी कर्मचारियों के लिये कम करना पूर्णकालिक एवं अंशकालिक श्रमिकों के मध्य दूरी को कम करेगा और पुरूषों एवं महिलाओं के मध्य वैतनिक और अवैतनिक कार्य के अधिक समान वितरण को प्रोत्साहित करेगा। इसके अलावा, कम रोजगार वाले श्रमिकों की संख्या कम करने से, कार्य सप्ताह छोटा करने से, श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति में बढ़ोतरी होगी, इस प्रकार बढ़ती हुयी आय असमानता को भी चुनौती मिलेगी।

हालाँकि, वैतनिक कार्य समय कम करने से अपने आप सकारात्मक पुनर्वितरण परिणाम नहीं आयेंगे। अगर कार्य समय कमी

> **“पुरुष और महिलाएँ लगातार कार्य के असमान समय का अनुभव करते हैं।”**

को उद्धार करने वाले प्रोजेक्ट में योगदान करना है, तो नीतियों को कार्य की प्रबलता एवं औद्योगिक संबंधों का वि–नियमन, अवैतनिक कार्यों के पुनर्वितरण को सुनिश्चित करने की चुनौतियों पर विचार करना होगा। ■

केरीना अलट्राइटर से पत्र व्यवहार हेतु पता <carina.altreiter@univie.ac.at>
फ्रांज एस्टलेथनर से पत्र व्यवहार हेतु पता <franz.astleithner@univie.ac.at>
थेरेसा फिबिजच से पत्र व्यवहार हेतु पता <theresa.fibich@univie.ac.at>

> समाजशास्त्र एवं जलवायु परिवर्तन

रिले इ डनलेप, ओकलाहोमा स्टेट विश्वविद्यालय, यू. एस. ए., पूर्व–अध्यक्ष, आई. एस. ए. रिसर्च कमेटी–पर्यावरण एंड समाज एवं **राबर्ट जे ब्रूले,** ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय, यू. एस. ए.

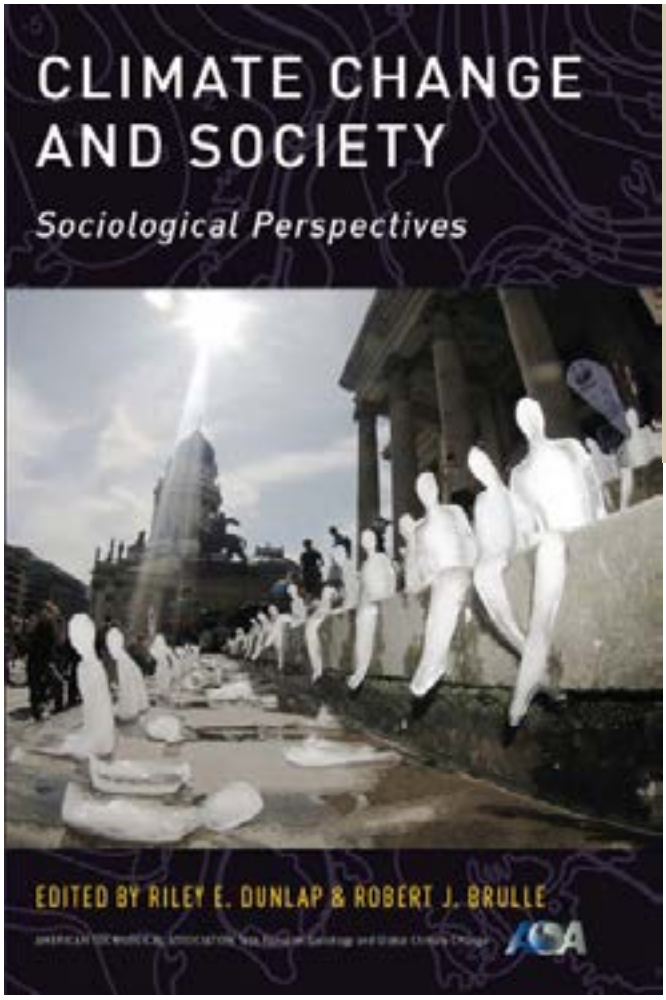

रिले डनलप और **राबर्ट ब्रूले** दोनों ही प्रसिद्ध पर्यावरण समाजशास्त्री हैं। वे अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन की समाजशास्त्र एवं वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर टास्क फोर्स के अध्यक्ष और सह–अध्यक्ष थे, जिसकी रिपोर्ट हाल ही में एक पुस्तक के रूप में आयी है : डनलप और ब्रूले (संपादक), जलवायु परिवर्तन एवं समाज : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य (न्यू पोरक एवं ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015)। उनका अग्रणी कार्य दर्शाता है कि किस प्रकार राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ गंभीर, सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर सहयोगी अनुसंधान को बढ़ाने का कार्य कर सकते हैं।

मानव जनित जलवायु परिवर्तन अपने समय की प्रमुख समस्याओं में से एक है, और दीर्घावस्था में अपनी प्रजाति के अस्तित्व के लिये खतरे का प्रतिनिधित्व करता है। प्राकृतिक वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग को प्रलेखकृत करने में आगे रहे हैं, चूंकि ''ग्रीनहाउस इफेक्ट'' एक सदी पहले समझ लिया गया था। 1990 के दशक तक जलवायु विज्ञान एक स्थापित क्षेत्र बन गया, जिसने यह ज्यादा प्रबल साक्ष्य प्रस्तुत किया कि विश्व के गर्म होने के मुख्य कारण अधिक मानव क्रियाये हैं (विशेषतः कार्बन उत्सर्जन)। इसका प्राकृतिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसा जलवायु परिवर्तन पर इन्टरगवर्नमेन्टल पैनल के द्वारा समय–समय पर प्रलेखित किया गया।

ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते हुये साक्ष्य पर काफी अपर्याप्त सामाजिक प्रतिक्रिया के संबंध में विशेषतः कार्बन उत्सर्जन को कम करने के संबंध में, प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने जलवायु परिवर्तन को एक ''जन समस्या'' के रूप में पाना। यह मानव व्यवहार के कारण होती है, यह मानव के लिये वास्तविक खतरा पैदा करती है, एवं इसके निराकरण के लिये सामूहिक कार्यवाही की आवश्यकता होती है। नतीजतन, आई. पी. सी., यू. एस. नेशनल रिसर्च काउन्सिल और अन्य मुख्य वैज्ञानिक संस्थाओं जैसे अंतर्राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद और उसके वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन (जिसकी जगह बाद में भविष्य अर्थ प्रोजेक्ट ने ली) पर उसके अंतर्राष्ट्रीय ह्यूमन डाइमेनशन प्रोग्राम ने पर्यावरण परिवर्तन अनुसंधान में समाज विज्ञान की अधिक भागीदारी का आव्हान किया है।

इस प्रकार के आव्हान प्राकृतिक और मुख्य धन निकायों (जैसे बेलमाण्ट फोरम), विशिष्ट, सामाजिक विज्ञान विषयों से सलाह किये बिना ''समाज वैज्ञानिकों'' को बहुविषयी अनुसंधान एजेन्डा में

> >

योगदान देने के लिये आमंत्रित करते हैं। समाज वैज्ञानिकों को चल रहे अनुसंधान प्रोग्राम में (अधिकतर जिन्हें ''युग्म मानव और प्राकृतिक प्रणालियों'' अनुसंधान की तरह फ्रेम किया जाता है) योगदान देने के लिये, उकसाया जाता है, उन प्रश्नों को उठाते हुये जिन्हें ज्यादातर प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने फ्रेम किया। मूल्यवान होते हुये, यह कार्य मुख्य उपजे सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्ष को अनदेखा करते है प्राकृतिक प्रणालियों के उपयोग में असमानताओं से इसके साथ ही व्यवस्थाओं के अपशयन के परिणामों को अनदेखा करते हैं, और राजनीतिक–आर्थिक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य को शायद ही कभी अपनाते हैं।

इसी प्रकार, यह आव्हान सलाह देते हैं कि समाज वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग के बारे में ''जन जागरूकता'' लाने में मदद कर सकते हैं, इस भोली उम्मीद के साथ कि जन समझ में वृद्धि नीतिगत परिवर्तन लायेगी। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अभाव में, ये प्रयास मानव को कार्बन उत्सर्जन के प्राथमिक कारक के रूप में देखते हैं। वे इस समाजशास्त्रीय दृष्टि को नजरअंदाज करते हैं कि किस सीमा तक मानव क्रियायें सामाजिक संरचना में जड़ी रहती है – इस प्रकार यह अनदेखा करते है कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने के प्रयास किस प्रकार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिकी से सीमित है।

आम तौर पर, मौजूदा प्रयासों को जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में समाज विज्ञान को अधिक लाने के वर्तमान प्रयास ''राजनीति–पश्चात्'' परम्परा अपना रहे है, क्योंकि रिपोर्ट और एजेण्डा जलवायु परिवर्तन का वि–राजनीतिकरण कर रहे हैं। उदाहरण के लिये आई. पी. सी. सी., जलवायु परिवर्तन को प्राथमिक रूप से भौतिक घटना मान रही है, जो कि वैज्ञानिक साक्ष्य प्रौद्योगिकी प्रगति एवं प्रबन्धीय कला के मिश्रण में दूर की जा सकती है। इसमें सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था में किसी प्रकार का मूल परिवर्तन की जरूरत नहीं है और अतः यह गंभीर राजनीतिक विवाद का विषय नहीं है।

इस संदर्भ में, अमरीकी समाजशास्त्रीय संघ ने समाजशास्त्र एवं वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की, जिसको जलवायु परिवर्तन के समाजशास्त्रीय विश्लेषण के मूल्य को प्रदर्शित करने का दायित्व दिया गया। टास्क फोर्स नेतृत्व ने महसूस किया कि हमें ए. एस. ए. के लिये रिपोर्ट लिखने से ज्यादा कुछ करना चाहिए, क्योंकि हमारे पास जलवायु परिवर्तन पर समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के मूल्य को प्रदर्शित करने का अवसर न सिर्फ साथी समाजशास्त्रियों के समक्ष अपितु वृहद दर्शकों के समक्ष है। हमारी पुस्तक, जलवायु परिवर्तन एवं समाज : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, को गत अगस्त में ऑक्सफोर्ड युनिवरसिटी प्रेस ने आधिकारिक ए. एस. ए. के प्रकाशन के रूप में प्रकाशित किया।

जलवायु परिवर्तन एवं समाज, जलवायु परिवर्तन पर समाजशास्त्रीय एवं अन्य समाज विज्ञान के अनुसंधान के मूल आयाम को संक्षिप्त रूप से और संश्लेषित रूप से प्रदर्शित करता है। 37 योगदानकर्ताओं द्वारा लिखे गये। 3 अध्यायों में जलवायु परिवर्तन को प्रेरित करने वाली शक्तियों का वर्णन किया गया है (बाजार संगठन एवं उपभोग पर विशेष ध्यान के साथ); जलवायु परिवर्तन के मुख्य प्रभावों और उनका सामना करने के प्रयास (विशेषतः असमान प्रभाव); और सामाजिक प्रक्रियाओं – नागरिक समाज, जन परिप्रेक्ष्य एवं संगठनात्मक इंकार – जो इन चुनौतियों की सामाजिक प्रतिक्रिया पर प्रभाव डालती हैं। अध्याय जो जलवायु परिवर्तन पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य और व्यवस्थित नव–निर्माण का अन्वेषण करते हैं, पुस्तक में हर तरफ है।

यह पुस्तक जलवायु परिवर्तन के साथ सामाजिक विज्ञानों क अधिक भागीदारी के आव्हान की प्रतिक्रिया है और समाजशास्त्रीय विश्लेषण के अनूठे मूल्य को दर्शाती है। चूंकि वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्राथमिक प्रेरक तत्व सामाजिक संरचना एवं संस्थाओं, संस्कृतिक मूल्यों एवं विचारधाराओं एवं सामाजिक रीति–रिवाज में जड़े है, ग्लोबल वार्मिंग के निराकरण एवं सामंजस्य के प्रयास के लिये विभिन्न स्तरों पर इन सामाजिक प्रक्रियाओं–वैश्विक से स्थानिक–सभी हमारे विषय क्षेत्र में विश्लेषण करने की आवश्यकता है। इस पुस्तक का द्वितीयक लक्ष्य है इन विषयों पर और समाजशास्त्रीय अनुसंधान को प्रेरित करना : समाजशास्त्र जलवायु परिवर्तन को समझने में मदद कर सकता है, न केवल वर्तमान प्रोग्राम और एजेण्डा में योगदान देकर, अपितु नये अनुसंधान प्रश्नों को उठाकर, जिनकी उत्पत्ति सामाजिक सिद्धान्तों एवं परिप्रेक्ष्य से हुयी हो।

समाजशास्त्र की भूमिका में एक सामाजिक आलोचना की पेशकश भी सम्मिलित हो सकती है। जलवायु परिवर्तन के वर्तमान विश्लेषण अक्सर निकट–हेजीमोनिक विश्वासों से सीमित हो जाते हैं; उदाहरण के लिये, इस नव–उदारवादी युग में, यह व्यापक रूप से माना जाता है कि केवल बाजार आधारित नीतियाँ कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिये एक संभव विकल्प प्रदान कर सकती हैं। ये कमजोर विषय बोधगम्य कार्यों की सीमा को सीमित करते हैं और समाजशास्त्र एक आयाम, उत्तर–राजनीति विचारधारा से परे जाकर, उन आम मान्यताओं पर प्रश्न करने में जो वर्तमान योजना विवाद को फ्रेम करमी है, के परे जाकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

जलवायु परिवर्तन पर इस प्रकार का सार्वजनिक समाजशास्त्र आर्थिक वृद्धि के परम्परागत पैटर्न को बनाये रखते हुये, कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण कमी को प्राप्त करने की कठिनाई (अगर असंभवता नहीं) को प्रलेखित करता है – समाजशास्त्रीय निष्कर्ष जो जलवायु नीतियों पर सार्वजनिक बहस को व्यापक बना सकते है। जलवायु परिवर्तन पर ज्यादा आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य के लिये बुद्धिजीवी क्षेत्र की रचना करना हमारे विषय का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिये और हम यह उम्मीद करते हैं कि विश्वभर के समाजशास्त्री ए. एस. ए. की टास्क फोर्स के इस प्रयास में जुड़ेंगे। ■

रिले इ डनलेप से पत्र व्यवहार हेतु पता <rdunlap@okstate.edu>
राबर्ट जे ब्रूले से पत्र व्यवहार हेतु पता <brullerj@drexel.edu>

> भारत में
आजादी और हिंसा

काँग्रेस पार्टी के उपाध्यक्ष, राहुल गाँधी रोहित वेमुल्ला की हैदराबाद में मृत्यु के उपर हैदराबाद विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ एक विरोध प्रदर्शन में, जनवरी 2016

यहां नीचे हम अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ की कार्यकारी समिति के बयान और 6 मार्च 2016 को 200 भारतीय समाजशास्त्रीयों द्वारा भारत के राष्ट्रपति को लिखे गये पत्र को प्रकाशित करते हैं। ये इस वर्ष के शुरूआत में भारतीय परिसरों में हुई हिंसा और अकादमिक स्वतंत्रता की हानि के विरोध में लिखे गये थे। भले ही घटनायें इनसे आगे निकल गयी हों, ये पत्र परिसरों और उनके बाहर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये समाजशास्त्रीयों की गहरी चिंता की अभिव्यक्ति के रूप में ऐतिहासिक महत्व के हैं।

> अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ का बयान

हम अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ की कार्यकारी समिति के सदस्य, दक्षिणपंथी रूढ़िवादी हिंसा और भेदभाव के सारे विपक्ष के विरोध में बढ़ रहे विषमय हमलों और भीड हिंसा के संदर्भ में, भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकारों, जीवन और स्वाधीनता के लिये लड़ रहे विद्यार्थियों, शिक्षकों, लेखकों, रचनात्मक कलाकारों और कार्यकर्ताओं के साथ एकजुटता व्यक्त करते हैं। हम भारत में खाद्य स्वतंत्रता में कटौती ('गौमांस निषेध' के रूप में कपटतापूर्वक चित्रित) और अल्पसंख्यंकों पर भीड़ के हमलों के बारे में विशेष रूप से चिंतित हैं। दक्षिणपंथी बहुसंख्यक राष्ट्रवाद के समर्थन में इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया के एक बड़े हिस्से का प्रचार मशीनों में रूपांतरण और अनैतिक रिर्पोटिंग और रेखाकंन के माध्यम से बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और वकीलों को व्यवस्थित और हिंसक तरीके से निशाना बनाया जाना अभूतपूर्व और विशेष रूप से चिंताजनक है। कमजोर सामाजिक समूहों में विद्यार्थियों की स्थिति –मुख्यतः दलित–बहुजन और अल्पसंख्यक विद्यार्थी – एक तत्कालिक चिंता का विषय है।

हम इस विचार का समर्थन करते हैं कि भारत का संविधान बहुलता के ढ़ांचे का वर्णन करता है और देश को धार्मिक आधार पर परिभाषित करने की गुंजाइश से इनकार करता है।

बौद्धिकवाद–विरोधी, और उच्च शिक्षा के संस्थानों के अंदर और बाहर सूचित बहस और सामाजिक आलोचना के व्यैक्तिक और सामूहिक प्रयासों पर बहुसंख्यक हमलों के एक वातावरण में, एक पेशेवर संघ के सदस्य के रूप में हमारी जिम्मेदारी विशेष रूप से गंभीर है। समाजशास्त्रीयों के रूप में हम मानते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मतभेदों के दमन के लिये राजद्रोह के आरोप में अनियंत्रित उपयोग को अनुमति देना, अमर्त्य सेन के शब्दों, असहिष्णुता के लिये अत्यधिक सहिष्णु होना, को दोहराने के समान है।

हम समाजशास्त्रीयों, प्रोफेसर विवेक कुमार और प्रोफेसर राजेश मिश्रा, पर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की छात्र शाखा से संबंधित छात्रों के द्वारा किये गये हमलों के विरोध में संपूर्ण भारत के 200 से अधिक समाजशास्त्रीयों द्वारा भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत की गयी (निम्न) याचिका का समर्थन करते हैं।

विश्वविद्यालय स्वतंत्र और सूचित बहस और परस्पर सीखने के लिये एक स्थान उपलब्ध कराने के लिये होते हैं। विश्वविद्यालय परिसरों में बढ़ती अशांति और स्वतंत्र और खुली बहस के लिये सिकुड़ती जगह, मुख्यतः हिंदुत्व के मुद्दों पर विरोध के प्रति असहिष्णुता, मौलिक स्वतंत्रताओं और बोलने की स्वतंत्रता के लिये प्रतिबद्ध

>>

समाजशास्त्रीयों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिये एक गंभीर चिंता का विषय है।

जनवरी 2016 में, अन्य चार सहित छात्रावास से निष्कासित किये जाने और विश्वविद्यालय परिसर के भीतर सामाजिक बहिष्कार का सामना करने के बाद, हैदराबाद विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान स्कूल के एक शोध विद्यार्थी राहुल वेमुला की आत्महत्या (इस विश्वविद्यालय में दलित–बहुजन सामाजिक समूह से संबंधित शोध विद्यार्थी द्वारा आत्महत्या करने का नौवां मामला), इस बात का संकेत हैं कि प्रणालीगत भेदभाव की जड़ें कितनी गहरी हैं और इसने कैसा दुःखद रूप ले लिया है। जबकि कुछ वर्षों से उच्च शिक्षा में सामाजिक रूप से कमजोर समूहों के विद्यार्थियों की बढ़ती उपस्थिति के फलस्वरूप देश भर के विश्वविद्यालय परिसरों में बैचेनी बढ़ती रही है, रोहित वेमुला की मृत्यु ने देश के अंदर और विदेशों में अभूतपूर्व विरोध प्रदर्शनों को सक्रिय कर दिया है, सबसे महत्व पूर्ण रूप से विद्यार्थीयों के बीच में, मुख्यतः दलित–बहुजन विद्यार्थी, जो शिक्षा व्यवस्था में सबसे अधिक भेदभाव के कपटपूर्ण प्रकारों के वजन का असमान बोझ सहन करते हैं।

हम देश भर के कई छोटे कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थीयों और शिक्षकों द्वारा अकादमिक संस्थानों के अंदर और बाहर दक्षिणपंथीयों के विषमय हमलों का सामना करते हुये जाति–विरोधी दर्शन और जीवनसंसारों की समझ को बढ़ावा देकर जाति भेदभाव और बहुसंख्यकवाद पर सवाल खड़ा करने के प्रयासों की प्रशंसा और समर्थन करते हैं। मशहूर तमिल लेखक पेरूमल मुरूगन, एक कॉलेज शिक्षक, का अनुभव, जिन्हें उनका शहर छोडने और राज्य की राजधानी में स्थानांतरित होने के लिये मजबूर किया गया, एक ऐसा उदाहरण है। हम वाक्पटुता और गहरी समझ का जश्न मनाते हैं जिसके साथ रोहित जैसे और उसके जैसे अनेक युवा शोध विद्यार्थीयों ने, उपमहाद्वीप में प्रतिरोध की संपन्न धरोहर से रचनात्मक रूप से अंकित विरोध की नयी परंपरा तराशते हुये, हिंदुत्व राजनीति और इसके दूरगामी परिणामों की निरंतर आलोचना विकसित की है।

हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विद्यार्थीयों और शिक्षकों के संघर्ष का समर्थन करते हैं और राष्ट्रवाद के जटिल सवाल पर खुले व्याख्यानों के माध्यम से सार्वजनिक बहस की निरंतरता को बनाये रखने के प्रयासों की सराहना करते हैं। हम रोहित वेमुला और देश भर के परिसरों से उनके जैसे विद्यार्थीयों और शोधार्थीयों के संघर्षों का निर्माण करने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिये हमारी प्रशंसा दर्ज करते हैं– एक परिवर्तनकारी समाजशास्त्र के लिये नया मील का पत्थर रखते हुये जों अनुशासनात्मक सीमाओं और उच्च शिक्षा के संस्थानों में से अपवर्जन पर सवाल करता है और इस प्रकार शैक्षिक और बाहरी संसार के बीच का पुल बनाता है। ■

> भारतीय समाजशास्त्रीयों द्वारा भारत के राष्ट्रपति को पत्र

4 मार्च 2016
श्री प्रणब मुखर्जी
भारत के राष्ट्रपति
राष्ट्रपति निवास
नई दिल्ली

आदरणीय श्री प्रणब मुखर्जीः

हम निम्न हस्ताक्षरकर्ता समाजशास्त्री, संपूर्ण भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों के सेवारत और सेवानिवृत शिक्षकों और शोधकर्ताओं सहित, देश में चल रही घटनाओं से बहुत विक्षुब्ध हैं और निम्न सार्वजनिक बयान देने की तत्काल जरूरत महसूस करते हैंः

भारत का संविधान सभी नागरिकों को अपने विश्वासों के लिये और उनके शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति के अधिकार की गारंटी देता है। हम दृढता से मानते हैं कि इस अधिकार के प्रयोग के लिये विश्वविद्यालयों और अकादमी की स्वायत्ता का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिये हम विभिन्न संगठनों, जिनके पास अधिकारियों और पुलिस का समर्थन है, के द्वारा छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों पर बढ़ते हमलों से बेहद चिंतित है। विद्यार्थीयों और शिक्षकों को उनके विचारों और पदों के कारण दुर्व्यवहार, हमले और धमकी दी जा रही है जबकि हमलावर कानून से प्रतिरक्षा/इम्यूनिटि का आनंद लेते दिखते हैं।

विशेष रूप से, हम अपने सहकर्मियों प्रोफेसर विवेक कुमार (जे.एन.यू.) और प्रोफेसर राजेश मिश्रा (लखनऊ विश्वविद्यालय) के समर्थन में लिखते हैं। ग्वालियर विश्वविद्यालय में एक समारोह में एक आमंत्रित वक्ता के रूप में 21 फरवरी को प्रोफेसर कुमार की एक बातचीत को ए.बी.वी.पी. के द्वारा हिंसक तरीके से बाधित किया गया। प्रोफेसर मिश्रा को भी 23 फरवरी को अपने फेसबुक पेज पर अखबार में प्रकाशित एक लेख को पोस्ट करने के लिये ए.बी.वी.पी. के द्वारा धमकाया गया, और विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने भी उन लोंगो, जिन्होंने धमकी दी, के बजाया उनसे ही स्पष्टीकरण की मांग की।

हमें दृढ़ विश्वास हैं कि विद्वानों को सामाजिक मुद्दों पर बोलने, लिखने और चिंतन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिये और उनकी आवाज दबायी नहीं जानी चाहिये। विद्वानों की स्वतंत्रता को रोकना राष्ट्रीय हित के खिलाफ है क्योंकि यह हमारे विविध समाज को समझने और विश्लेषण करने की सामूहिक क्षमता को कमजोर करता है। हम मजबूत अकादमिक परंपराओं में हमारे विश्वास को दोहराते हैं जिन्होंने समालोचनात्मक विद्वत्तापूर्ण दृष्टिकोणों की विविधता को पोषित किया है और जिन्होंने स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ साथ आम चर्चाओं को भी समृद्व किया है। ■

> अनुसंधान के लिये लेखन : तर्क एवं कार्यप्रणाली

रेइविन कोनेल, सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया, सदस्य–आई एस ए शोध समिति – महिला एवं समाज (RC 32) एवं कन्सैप्टुअल एंड टरमिनोलॉजिकल एनेलिसिस (RC 35)

सेण्ट मैथ्यू एक फरिश्ते की प्रेरणा के तहत अपने धर्म सिद्धान्त को लिखते हुए

> भ्रम एवं वास्तविकता

दो महान मिथक – एक पुरानी और एक नया हमारे लेखन के चित्र को बिगाड़ते हैं। पुराना मिथक लेखन को साधारणतः प्रतिभा एवं प्रेरणा का विषय मानता है। कोई जिसे आशीर्वाद का तोहफा प्राप्त है किसी सुहानी सुबह अपने हाथ में कलम ले कर बैठता है, एक आत्मिक वाग्देवी उसके कान में फुसफुसाती है और एक अति–बुद्धिमान लेखन प्रस्फुटित होता है। कोई नहीं समझ पाता कैसे। बस हम सिर्फ आश्चर्यचकित रह सकते हैं और यह उम्मीद करते हैं कि अगली बार वाग्देवी हमारे कान में कानाफूसी करेगी।

नया मिथक कुछ कम काव्यात्मक है। यह नव–उदारवादी प्रबंधकों के दिमाग में उपजा एवं प्रतिस्पर्धा के साथ उनके ग्रस्तता को प्रतिबिंबित करता है। इस मिथक में लेखन एक बाजारू उत्पाद से ज्यादा कुछ नहीं है, जिसे समर्पित व्यक्ति निर्मित करते हैं और उपलब्धि के लिये उनके प्रतियोगितात्मक संघर्ष में बेचते हैं।

प्रतिष्ठा एवं तरक्की के संबंध में सबसे उत्तम लाभ उच्च उद्धरण वाली शोध पत्रिकाओं को लक्षित करने से आते हैं। दोनों मिथक कई बार, विश्वसनीय लगने के लिये पर्याप्त सच्चाई को प्रतिबिंबित करते हैं। ज्यादातर लेखन वास्तव में उसके द्वारा किया जाता है जो कलम या कम्प्यूटर के साथ अकेला बैठकर अपने विचारों पर मंथर करता है। अधिकांशतः अनुसंधान के लिये लेखन प्रतिस्पर्धात्मक और व्यावसायिक उद्योग के द्वारा प्रकाशित होता है।

परन्तु दोनों मिथक ही लेखन की सच्चाई को खतरनाक तरीके से बिगाड़ते हैं। दोनों ही मानव को अति बुद्धिमान या उपलब्धि मानते हैं जो कि वास्तव में एक उच्च सामाजिक प्रक्रिया है। दोनों ही इस मूल तथ्य को नजरअंदाज करते हैं कि लेखन संप्रेषण के बारे में है। दोनों ही इस तथ्य को भूल जाते हैं कि अनुसंधान के लिये लेखन, किसी भी विषय में, ज्ञान के निर्माण एवं संचार करने की सामूहिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

विषय का लेखन, समाजशास्त्र या किसी अन्य विषय में, महत्व पूर्ण है क्योंकि यह उस सामूहिक प्रक्रिया का केन्द्र है। अनुसंधान के लिये लेखन के कई लक्षण जो युवा अनुसंधानकर्ताओं को अस्पष्ट प्रतीत होते हैं तभी औचित्यपूर्ण बनते हैं जब हम ज्ञान निर्माण के सामाजिक आयामों का ध्यान करते हैं।

लेखन की राजनीति को उसमें संलग्न सामाजिक संस्थाओं एवं संरचनाओं पर विचार कर समझा जा सकता है। इसमें ''लीग सारणी'' का प्रभाव और शोध पत्रिकाओं का व्यवसायीकरण, बुद्धिजीवी श्रमिकों में अगाध श्रम की समस्या, पहचान, प्रतिष्ठा एवं संसाधनों का वैश्विक स्तरीकरण, इंटरनेट के उपयोग एवं खतरे, एवं ज्ञान निर्माण एवं संचरण की प्रक्रिया को लोकतांत्रिक बनाने का कार्य।

> लेखन के प्रति दृष्टिकोण

लेखन को सामाजिक श्रम के रूप में पहचानना मुख्य बात है। यह एक कार्य है–और हम यह दिखा सकते हैं कि सबसे प्रतिभाशाली साहित्यिक ग्रंथों में भी ऐसा है। लेखन के बारे में सोचते हुए औद्योगिक समाजशास्त्र से विचारों को प्रयोग में लाना उपयोगी है। दूसरी चीजों के साथ, यह हमें हम निहित श्रम शक्ति उसकी संरचना, वेतन एवं रोजगार की शर्तें, प्रौद्योगिकी एवं अन्य संसाधन, निरीक्षण एवं स्वायत्त–शासन पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

बिल्कुल, लेखन श्रम का एक विशिष्ट प्रकार है। यह विशिष्टतया एक संप्रेषण कार्य है, अतः संप्रेषण के समाजशास्त्र से विचारों का

>>

प्रयोग करना भी उपयोगी है। अन्य बातों के मध्य, यह हमें किसी भी प्रकार के लेखन के लिए दर्शकों के बारे में विचार करने को प्रोत्साहित करता है, किस प्रकार से दर्शकों के पास पहुँचेगा और लेखन अपने पाठकों के लिये क्या करता है। अनुसंधानकर्ताओं के लिये बहुत आवश्यक है कि वो विचार करे, कि वो किसको लिख रहे है, क्योंकि वह जागरूकता लेखन को अपने आप आकार देती है। अनुसंधान के लिये लेखन एक विशिष्ट प्रकार का संप्रेषण है और उसको भी ध्यान में देने की आवश्यकता है। यह ज्ञान के निर्माण की सामूहिक प्रक्रिया का भाग है, इसलिये ज्ञान के समाजशास्त्र और बुद्धिजीवी के समाजशास्त्र के विचारों का प्रयोग करना उपयोगी है (उत्तर–औपनिवेशिक काल में यह क्षेत्र पुनः आकार ले रहा है)। एक लेखक का पूर्व के एवं भविष्य के श्रमिकों से एक जैसे क्षेत्र में संबंध आवश्यक है; उसी प्रकार कार्य से सम्बन्धित एपिस्टीम और ज्ञान का फ्रेमवर्क है।

इस पृष्ठभूमि के साथ, हम अनुसंधान के लिये लेखन को एक वृहद रहस्य के रूप में नहीं अपितु एक समझ में आने वाले श्रम प्रक्रिया की तरह देख सकते हैं। इस श्रम प्रक्रिया में अंतर्निहित भिन्न शैलियों अलग दर्शकों एवं प्रणाली को शामिल करती हैं। श्रम के अन्य रूपों की तरह, लेखन में वो निपुणता होती है जिसे सीखा जा सकता है और सुधारा जा सकता है। अन्य प्रकार के श्रम की तरह, इसमें सृजनात्मक एवं अभिप्रायात्मक तत्व समाहित होते हैं, जो चर्चा और चिंतन के लिये और अच्छा है।

पिछले बारह वर्षों से मैं विश्वविद्यालय एवं संगोष्ठीयों में, लेखन पर आमने–सामने वाली कार्यशाला निःशुल्क चला रहा हूं। ये कार्यशाला इस प्रकार की नहीं है जो निर्देश देती है कि किस प्रकार सहभागियों को एक प्रतियोगात्मक उत्पाद का वितरण करना चाहिए और शीर्ष शोध पत्रिकाओं को लक्ष्य करना चाहिए। एकदम उसके विपरीत! कार्यशालायें यहां उल्लेखित विचारों पर निर्मित होती हैं : कि संरचनात्मक ज्ञान का निर्माण स्वाभाविक रूप से एक सामाजिक, सहयोगी प्रक्रिया है और लेखन के इस वृहद उपक्रम के केन्द्र में है।

> अनुसंधान पर लेखन के लिये एक लघु निर्देशिका

पिछले कुछ महीनों में, मैंने इन कार्यशालाओं से कुछ विचारों को ब्लाग पोस्ट की श्रृंखला में स्पष्ट किये हैं जिसको मैंने अब पुनः व्यवस्थित करके क्रियेटिव कामन्स लाइसेंस के अधीन इ–पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया है।

राइटिंग फॉर रिसर्च : एडवाइस ऑन प्रिन्सिपल्स एंड प्रेक्टिस नामक पुस्तिका 42 पृष्ठ लम्बी है (जिसमें नाटकीय उदाहरण है) और मेरी वेबसाइट {http://www.raewynconnell.net/p/writing-for-research.html} से निःशुल्क डाउनलोड की जा सकती है। इस सामग्री को डाउनलोड करने के लिये आपका स्वागत है, और जो इसका प्रयोग कर सकते है उनको संचारित कर सकते है। गैर–व्यावसायिक प्रक्रिया के लिये निःशुल्क पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

ई–पुस्तिका लेखन और उसके शैलियों की पृष्ठभूमि मुद्दों पर चर्चा करती है : लेखक के रूप में मेरे अनुभव से एक शोध पत्रिका

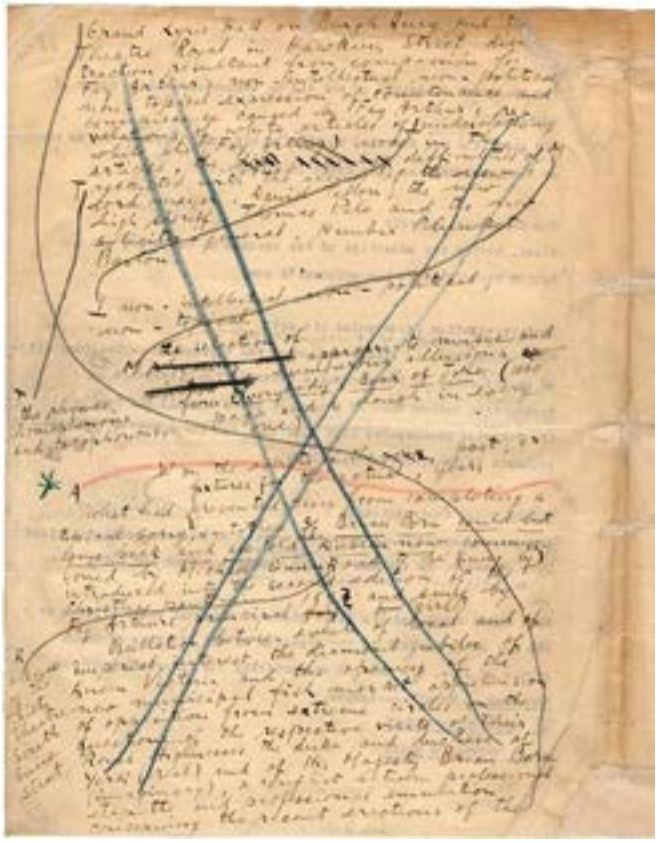

जेम्स जोयस की Ulysses की पाण्डुलिपि का टुकड़ा

के लिये लेख लिखने संबंधित व्यवहारिकता एवं लेखन की राजनीति के अहम मुद्दे। यहां पर विषय सामग्री की सारणी की रूपरेखा है :

भाग एक : लेखन के विषय में

1. लेखन की प्रकृति
2. अनुसंधान संप्रेषण, सामाजिक यथार्थ
3. अनुसंधान के लिये लेखन की शैलियाँ

भाग दो : शोध पत्रिका के लिये लेख कैसे लिखा जाय–प्रयोगिक चरण

सारांश; तर्क–रूपरेखा; प्रथम मसौदा; संशोधन; प्रस्तुतीकरण; प्रकाशन

भाग तीन : वृहद चित्र

1. कार्यक्रम लिखना
2. क्यों किया जाय? क्या चीज उसे औचित्यपूर्ण बनाएगी?
3. कुछ संसाधन

मैं अन्य अनुभवी अनुसंधानकर्ताओं को उनके अनुभवों एवं चिंतन को प्रसारित करने के लिए उत्साहित कर ता हूं, ताकि हमारे पेशे से संबंधित समझ का निर्माण हो, और मैं इस पाठ पर प्रतिक्रिया का स्वागत करता हूं। ■

रेइविन कोनेल से पत्र व्यवहार हेतु पता <raewyn.connell@sydney.edu.au>

> कजाख टीम का परिचय

ग्लोबल डायलॉग की कजाख टीम आइगुल जबिरोवा की प्रेरणा और निर्देशन में 2015 में शुरू की गयी। कजाख भाषा में अनुवाद की सभी चुनौतियों पर जीत हासिल करके, अद्भूत दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने ग्लोबल डायलॉग को पूरे कजाखस्तान में प्रसारित किया।

Aigul Zabirova समाजशास्त्र की एक प्रोफेसर और L.M. Gumilyov Eurasian National University, अस्ताना कजाखस्तान के समाजशास्त्र विभाग की संस्थापक अध्यक्ष हैं। उन्होंने मॉस्को में पढ़ाई की ओर उन्होंने रशियन एकेडमी ऑफ साइंसेज में इंस्टीटयूट ऑफ सोश्योलोजी से समाजशास्त्र में डॉक्टरेट हासिल की (मॉस्को, 2004)। उनका वर्तमान शोध कजाखस्तान और किर्गीस्तान के निजी घरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर केंद्रित है; वह When Salary is not enough : Private Households in Central Asia (Verlag, May 2015) शीर्षक की पुस्तक की सहलेखिका हैं।

Aigul शहरी समाजशास्त्र और सामाजिक सिद्धांत पर विभिन्न पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं; उनका शोध और लेखन प्राथमिक रूप से उत्तर–सोवियत स्थान पर पहचान की राजनीति और मध्य एशिया में शहरीकरण और प्रवास पर ध्यान केंद्रित करता है। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर MacArthur Foundation (2000-01, 2002-03), INTAS (2005-07), TACIS (2007), Voolkswagen Foundation (2011-13), Open Society Institute (2001-03), Central European University (2001, 2008) से कई पुरस्कार और छात्रवृत्तियां मिली हैं, साथ ही Kazakh Minitry of Science से भी स्थानीय पुरस्कार और छात्रवृतियां मिली हैं। वे School of Oriental and African Studies, London, UK (2011), Lund University, Sweden (2008), Warwick University, UK (2007), Indiana University, USA (2002) में रिसर्च फैलों रही हैं। वह 2010 से अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ की सदस्य हैं।

Bayan Smagambet, Eurasian National University के समाजशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्होंने Almaty में पढ़ाई की और 1998 में Al-Farabi Kazakh National University से समाजशास्त्र में अपनी Candidate of Sciences प्राप्त की। वह समाजशास्त्र के इतिहास और आर्थिक समाजशास्त्र पर कक्षायें लेती है। उनके रूचि के शोध विषय सामाजिक असमानता और श्रम बाजार हैं। उन्होंने कजाख में अनेक पाठ्यपुस्तकें–History of Sociology, Economic Sociology, Social History-और लगभग 20 शोध लेख प्रकाशित किये हैं।

Adil Rodionov, Eurasian National University के समाजशास्त्र विभाग में एक वरिष्ठ प्रोफेसर हैं। वे कजाखस्तान के थिंक टैंकों में से एक "Institute of Eurasian Untegration" में भी कार्य करते हैं। उन्होंने समाजशास्त्र में पी. एच. डी. की डिग्री Eurasian National University (2009) से हासिल की। वह Central European University (Budapest, Hungary, 2013-14) में रिसर्च फैलो रहे हैं। उनकी शोध रूचि सामाजिक नेटवर्क, नागरिक समाज, और सामाजिक विज्ञानों के इतिहास के क्षेत्रों में है। उनकी वर्तमान शोध परियोजना कजाखस्तान के गैर–सरकारी संगठनों के नेटवर्क पर केंद्रित है। इस परियोजना का एक संक्षेप–सार यहां उपलब्ध है : http://e-valuation.kz/social capital en.html.

Gani Madi, Eurasian National University के समाजशास्त्र विभाग में एक शिक्षक हैं जहां 2010 में उन्होंने समाजशास्त्र में एम. ए. उत्तीर्ण किया। वे सैद्धांतिक समाजशास्त्र, समाज की संरचना और स्तरीकरण, आर्थिक समाजशास्त्र, Elitology, प्रवास का समाजशास्त्र, और समाजशास्त्र का परिचय जैसे विषय पढ़ाते हैं। वह वर्तमान में कार्यस्थल पर शक्ति गतिशीलता और श्रम के प्रबंधकीय नियंत्रण के विभिन्न स्वरूपों के साथ–साथ मार्क्सवादी सिद्धांतों में रूचि रखते हैं।